आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 2 ★ मूल्य : 10 रु.
10 फरवरी, 2010 ★ फाल्गुन, 2066

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी

अध्यात्म-चेतना वर्ष

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

पीयें धोवन पानी, बोले मीठी वाणी यही कहे जिनवाणी ।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003 (राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड

जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2010-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

'जणेण सद्धिं होक्खामि',
इइ बाले पगब्भई।
काम-भोगाणुराएणं,
केसं संपडिवज्जई।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.7

'रहना जनता के साथ', मान यों,
बाल धृष्ट बन फिरता है।
काम-भोग में राग-विवश हो,
क्लेश-पाश में पड़ता है।।

फरवरी, 2010

वीर निर्वाण संवत्, 2536

फाल्गुन, 2066

वर्ष 67 अंक 2

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 5000 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
संरक्षक सदस्यता : 5000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail: jinvani@yahoo.co.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	आचार्य हस्ती की दृष्टि में ज्ञान की महिमा	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	संयम है जीवन का बसन्त	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	साधना के शिखर पुरुष	-महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा.	14
	स्वाध्याय से साधना का खिले बसन्त	-तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	18
हस्ती-शताब्दी-	अमरत्व का वह उपासक (2)	-मधुर व्या. श्री गौतममुनि जी म.सा.	25
	श्री हस्तिमल्ल शतक (2)	-श्री सुमन्त भद्र	32
	हस्ती-गुणसौरभ (2)	-श्री कस्तूरचन्द बाफना	35
शोधालेख -	भारतीय तंत्र-साधना और जैन धर्म-दर्शन (7)	-प्रो. सागरमल जैन	38
युवा-स्तम्भ-	धर्म क्या है?	- श्री कन्हैयालाल लोढा	42
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Transgressions of the twelve vratas (Vows)	*-Dr. Priyadarshana Jain*	46
तत्त्व ज्ञान-	दशवैकालिक सूत्र में पाये तात्त्विक बोध (6)	-संकलित	51
	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (55)	-श्री धर्मचन्द जैन	56
चिन्तन-	संस्थाओं में सेवा का अर्थ	-डॉ. दिलीप धींग	59
धारावाहिक-	धरोहर (4)	-श्रीमती पारसकंवर भंडारी	64
उपन्यास-	सुबह की धूप (12)	-श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	67
प्रासङ्गिक-	पाद-विहारी जैन संतों के निरापद विहार	-श्री रत्नेश कुमार पोखरना	72
नारी-स्तम्भ-	क्या खोया और क्या पाया? (2)	-श्री पारसमल चण्डालिया	75
बाल-स्तम्भ -	प्रतिक्रिया के पार	-उपाध्याय अमरमुनि जी म.सा.	78
संस्मरण-	आचार्यप्रवर का दसवर्षीय विचरण परिदृश्य	-श्री सौभाग्यमल जैन	82
श्राविका-मण्डल -	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (2)		85
प्रेरक-प्रसंग-	मैं ही क्यों?	-सुश्री मीनाक्षी सुराना	41
कविता/गीत-	वंदन रत्नसंघ सिरताज	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	17
	जन्म शताब्दी मनाएँ	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	23
	आओ गुरुवर आओ	-श्री मनमोहनचन्द बाफना	31
	जिनवाणी महिमा	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	63
	जीव-यतना	-श्री मगनचन्द जैन	90
	एक ही बात हरदम रटें	-श्री शिखरचन्द छाजेड़	94
विचार-	अनमोल वचन	-श्री प्रमोद हीरावत	30
	स्वावलम्बी चिकित्सा का मूल सूत्र	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	89
साहित्य समीक्षा -	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	87
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		95
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		121

सम्पादकीय

आचार्य हस्ती की दृष्टि में ज्ञान की महिमा

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

धन की महिमा से तो हम सब परिचित हैं, किन्तु ज्ञान की महिमा से हमारा उतना परिचय नहीं है। जो ज्ञान धनार्जन में अथवा आजीविका में सहयोगी होता है उसकी महिमा से भी हम परिचित हैं तथा जो विज्ञान हमारी सुख-सुविधा के साधनों में अभिवृद्धि करता है उसकी महिमा से भी हम परिचित हैं। किन्तु जो ज्ञान चित्त में उत्पन्न दुःख को दूर कर सकता है, हमें दुःख की घड़ियों से उबरने में सहायक बनता है अथवा जो ज्ञान सबके प्रति प्रेम एवं मैत्री को संचरित करता है, उससे हम प्रायः अपरिचित ही बने रहते हैं। यह आत्म-ज्ञान अथवा सम्यग्ज्ञान यदि प्रकट भी होने लगता है तो हम उस पर भौतिक सुखों की लालसा का मोटा पर्दा डाल देते हैं और वह ज्ञान तिरोहित हो जाता है। इन्द्रियों के स्तर पर पदार्थों का भोग एवं उनके संचय की लालसा मनुष्य में सदैव बनी रहती है। इस कारण दुःखहारक सम्यग्ज्ञान उद्भूत नहीं हो पाता।

आचार्य हस्ती ने इसी अज्ञान-अंधकार में डूबे मनुष्य की समस्या को समझा एवं उसमें ज्ञान का प्रकाश प्रकट करने के लिए एक सरल तरीका 'स्वाध्याय' का सुझाया। सत्साहित्य का स्वाध्याय मनुष्य को एक दृष्टि प्रदान करता है एवं उसके अज्ञान तम का नाश करने में समर्थ ज्ञान का प्रकाश प्रसरित करता है। इसीलिए आचार्य हस्ती कहते हैं-

बिना स्वाध्याय ज्ञान नहीं होगा, ज्योत जगाने को।
राग-रोष की गांठ गले नहीं, बोधि मिलाने को।।

आचार्य हस्ती का मन्तव्य था- "जब तक अज्ञान का जोर है पाप की वंशवृद्धि होती रहेगी। पाप घटाने के लिए अज्ञान घटाना आवश्यक है तथा इस अज्ञान को घटाने के लिए स्वाध्याय आवश्यक है। दुनियां में बड़े से बड़े लोग

चाहे धनी हों अथवा अधिकारी वर्ग या शासक वर्ग के, सभी विषय-वासना के पीछे दौड़ रहे हैं। लेकिन इसके विपरीत प्रभु महावीर इन्द्रिय भोग को छोड़ आये हैं, हजारों श्रमण विषय-कषायों को छोड़कर इनके पीछे चल रहे हैं।'' प्रतीत होता है कि ''उस युग के मानव चाहे वे अमीर हों अथवा गरीब, सभी अपना जीवन मात्र खाने-कमाने में ही व्यर्थ नहीं गंवाते थे, बल्कि वे धर्म का मूल्य भी समझते थे। अपने जीवन को कैसे सार्थक किया जाए, इस बात की जिज्ञासा भी उनके मन में रहती थी।

आचार्य हस्ती को यह दृढ़ विश्वास था कि भीतर की ज्ञानज्योति प्रज्वलित करने के लिए स्वाध्याय से बढ़कर उपाय नहीं हो सकता। वह स्वाध्याय संतों की वाणी से हो अथवा आगमों के अध्ययन से हो अथवा एकाग्रता पूर्वक स्वचिन्तन से हो, किसी भी रूप में स्वाध्याय हो, ज्ञान की ज्योति जगाने में उपयोगी है। इस स्वाध्याय के माध्यम से दृष्टि भी सम्यक् बनती है एवं ज्ञान भी सम्यक् होता है। आज के युग में पढ़े लिखे लोग स्वाध्याय के माध्यम से ज्ञान प्राप्त कर अपने दुःख को कम कर सकते हैं, साथ ही परिवार, समाज और राष्ट्र में भी शान्ति स्थापित करने में सहयोगी बन सकते हैं। परिवार एवं समाज में प्रायः जो झगड़े होते हैं, उनमें अज्ञान प्रमुख कारण होता है। ज्ञान होने पर व्यक्ति संसार की यथार्थता को जान लेता है एवं अशान्ति से शान्ति के मार्ग की ओर प्रस्थान कर देता है। आचार्य हस्ती का कथन है-'' स्वाध्याय से ज्ञान की उपासना बढ़ेगी और ज्ञान की उपासना बढ़ेगी तो समाज में शान्ति होगी, राष्ट्र में शान्ति होगी, विश्व में शान्ति होगी।''

आचार्य हस्ती का मन्तव्य है कि समाज में यदि स्वाध्याय को बढ़ावा दिया जाए तो इससे ज्ञान में वृद्धि होगी और ज्ञान से वैर, ईर्ष्या, द्वेष आदि का शमन होगा, झगड़े-टंटे आदि नहीं रहेंगे। आचार्य हस्ती का यह कथन इस तथ्य को इंगित करता है कि स्वाध्याय से ज्ञान की प्राप्ति होती है तथा ज्ञान की प्राप्ति से हमारे भीतर में रहे हुए विकारों का शमन होता है। ईर्ष्या, द्वेष, वैर आदि विकार नष्ट होते हैं। इनकी अनुपयोगिता को व्यक्ति जान लेता है तथा यह भी जान लेता है कि इन दोषों के होने पर स्वयं को जितनी हानि होती है, उतनी दूसरों को

कदापि नहीं। ईर्ष्या, द्वेष एवं वैर की अग्नि उस व्यक्ति को अधिक अशांत एवं दुःखी बनाती है जो इनका प्रयोग दूसरों पर करता है।

आचार्य हस्ती के शब्दों में दुःख का मूल कर्म और कर्म के बीज राग-द्वेष हैं। दुःख मिटाने के लिए राग-द्वेष मिटाना आवश्यक है, जो ज्ञानपूर्वक अभ्यास से ही हो सकता है। यही ज्ञान की उपयोगिता है कि हम उस ज्ञान के द्वारा अपने दुःख के भीतरी दोषों को मिटा सकते हैं। इन दोषों के निवारण में आजीविका का ज्ञान उपयोगी नहीं होता, विज्ञान के आविष्कार भी इसमें उपयोगी नहीं होते। अज्ञान की अवस्था में दुःख को मिटाने के लिए लोग नींद की गोलियाँ और नशे के साधनों का प्रयोग करते हैं, किन्तु उनसे दुःख के मूल कारणों का नाश नहीं होता, न ही कोई जीवन में प्रकाश प्राप्त होता है।

आचार्य हस्ती कहते हैं कि साधक जब ज्ञान का प्रकाश पा लेता है तब वह भौतिकता के सारे लुभावने आकर्षणों से दूर हट जाता है। ज्ञान का प्रकाश व्यक्ति को संयम का पाठ पढ़ाता है। फिर व्यक्ति इन्द्रिय, मन और बुद्धि को नियन्त्रित करता है। मन के विकार एवं बुद्धि की खुरापात ज्ञान के द्वारा ही नष्ट हो सकती है। ज्ञान का बल न होने पर व्यक्ति असीमित इच्छाओं, आकांक्षाओं और तृष्णाओं से ग्रस्त रहता है। उसकी उधेडबुन नहीं मिट पाती। यदि इच्छाएँ अधिक न हों तो भी मार्ग से भटका हुआ रहता है। अन्धविश्वासों में जीता है। वह सत्-असत् का विवेक नहीं कर पाता, करणीय-अकरणीय का उसे बोध नहीं होता, संसार की अनित्यता अशरणता का उसे भान नहीं होता। गुरुदेव के शब्दों में- "ये जो भौतिक पदार्थ, धन-धान्य आदि हैं, इनके कितने ही स्वामी बदल गये फिर आप कैसे कहते हैं कि ये मेरे हैं। यह नगीना मेरा है, यह हवेली मेरी है, यह बंगला मेरा है इत्यादि। यह जो मेरेपन की बात है उसके बारे में शास्त्रों में कहा गया है कि अज्ञान के कारण प्राणी ऐसा समझ रहा है।" अज्ञान की दशा में सुमार्ग या सन्मार्ग की ओर रुचि नहीं होती। तब आरम्भ-परिग्रह, विषय-कषाय की ओर ही प्रवृत्ति होती है। भजन की भाषा में-

अज्ञान से दुःख दूना होता, अज्ञानी धीरज खो देता
सद्ज्ञान से दुःख को दूर करो, तन धन दे जीवन सफल करो।।

ज्ञान का धर्म यह है कि वह मानव-जीवन में एक विशेष प्रकार का

प्रकाश प्रदान करता है। ज्ञान केवल वस्तुओं को जानना मात्र ही नहीं है, जिसके द्वारा हिताहित या धर्माधर्म का बोध होता है, जो कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य या सत्य-असत्य का बोध कराता है उसे ज्ञान कहते हैं। जिसके भीतर की ज्ञान-चेतना जागृत हो गई वह आत्मा बिना सुने, बिना पढ़े भी ज्ञान का प्रकाश प्राप्त करती है। जैसे कि नमिराज की ज्ञान-चेतना चूड़ियों की झणकार को सुनकर जागृत हो गई, मृगापुत्र ने मुनियों को देखकर ज्ञान प्राप्त कर लिया।

मनुष्य ज्ञानी भी हो सकता है और अज्ञानी भी। जाल बनाने वाली मकड़ी में जाल बनाने की ताकत है लेकिन जाल को तोड़ने की नहीं। क्योंकि वह अज्ञानी है। मानव में दोनों योग्यताएँ हैं, अज्ञान के वशीभूत होकर वह जाल फैलाता है तथा ज्ञान प्राप्त होने पर जाल को काटने का सामर्थ्य भी उसमें विद्यमान है। ज्ञान होने पर ही व्यक्ति समझता है कि जो धन, कुटुम्ब, मित्र आदि हैं वे सब संयोग मात्र हैं, इनका संयोग अनित्य है, छूटने वाला है। यह बोध ज्ञान से ही होता है। प्रत्येक आत्मा मूलतः ज्ञानवान है, किन्तु जिस प्रकार अत्यल्प धनवाले को धनी नहीं कहा जाता, विपुल धन का स्वामी ही धनी कहलाता है। उसी प्रकार प्रत्येक जीव को ज्ञानी नहीं कह सकते। जिस आत्मा में ज्ञान की विशिष्ट मात्रा जागृत एवं स्फुरित रहती है वही वास्तव में ज्ञानी कहलाता है।

जिन्हें सम्यग्ज्ञान प्राप्त है उनका दृष्टिकोण सामान्य जनों के दृष्टिकोण से कुछ विलक्षण होता है। साधारण जन जहां बाह्य दृष्टिकोण रखते है, ज्ञानियों की दृष्टि आन्तरिक होती है। हानि-लाभ को आंकने और मापने के उनके मापदण्ड भी अलग होते हैं। साधारण लोग वस्तु का मूल्य स्वार्थ की कसौटी पर परखते हैं, ज्ञानी उसे अन्तरंग दृष्टि से अलिप्त भाव से देखते हैं। अज्ञानी के लिए जो आस्रव का निमित्त होता है, ज्ञानी के लिए वही निर्जरा का निमित्त बन जाता है। ज्ञान अथवा सम्यग्ज्ञान के प्रमुख लाभ हैं- 1. क्रोध, मान, माया, लोभ की जो ज्वालाएँ दिल-दिमाग को परेशान कर रही हैं उन्हें शांत कर सकते हैं। 2. मन का मैल दूर करने एवं अज्ञान को दूर करने का सामर्थ्य प्राप्त होता है। 3. तृष्णा का तूफान हल्का पड़ता है तथा मन में जो अशान्ति है, बैचेनी है, आकुलता है वह दूर होती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि अज्ञान के कारण मानवजनित समस्याओं का निराकरण ज्ञान के द्वारा सम्भव है। ✸

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

आवंती केआवंती लोगंसि अपरिग्गहावंती, एएंसु चेव अपरिग्गहावंती। सोच्चा वई मेधावी पंडियाणं निसामिया। समियाए धम्मे आरिएहिं पवेदिते।

जहेत्थ मए संधी झोसिते एवमण्णत्थ संधी दुज्झोसए भवति।

तम्हा बेमि णो णिहेज्ज वीरियं।

अर्थः- इस लोक में जितने भी अपरिग्रही साधक हैं, वे इन धर्मोपकरण आदि में (मूर्च्छा-ममता न रखने तथा उनका संग्रह न करने के कारण) ही अपरिग्रही हैं।

मेधावी साधक (तीर्थंकरों की आगमरूप) वाणी सुनकर तथा (गणधर एवं आचार्य आदि) पण्डितों के वचन पर चिन्तन-मनन करके (अपरिग्रही) बने।

आर्यों (तीर्थंकरों) ने 'समता में धर्म कहा है।'

(भगवान् महावीर ने कहा-) जैसे मैंने ज्ञान-दर्शन-चारित्र इन तीनों की सन्धि रूप (समन्वित) साधना की है, वैसी साधना अन्यत्र (ज्ञान-दर्शन-चारित्र-रहित या स्वार्थी मार्ग में) दुःसाध्य-दुराराध्य है। इसलिए मैं कहता हूँ-(तुम मोक्षमार्ग की इस समन्वित साधना में पराक्रम करो), अपनी शक्ति को छिपाओ मत।

जे पुव्वुट्ठाई णो पच्छाणिवाती। जे पुव्वुट्ठाई पच्छाणिवाती। जे णो पुव्वुट्ठाई णो पच्छाणिवातो।

अर्थः- (इस मुनिधर्म में प्रव्रजित होने वाले मोक्ष-मार्ग साधक तीन प्रकार के होते हैं)- (1) एक वह होता है- जो पहले साधना के लिए उठता (उद्यत) है और बाद में (जीवन पर्यन्त) उत्थित ही रहता है, कभी गिरता नहीं। (2) दूसरा वह है- जो पहले साधना के लिए उठता है, किन्तु बाद में गिर जाता है। (3) तीसरा वह होता है- जो न तो पहले उठता है और न ही बाद में गिरता है।

-आचारांग सूत्र, प्रथम श्रुतस्कन्ध,

पंचम अध्ययन, तृतीय उद्देशक, सूत्र 157-158

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- श्रमण के दो अर्थ मुख्य हैं। एक तो यह कि तप और संयम में जो अपनी पूरी शक्ति लगा रहा है, तपस्वी है वह श्रमण है। दूसरा अर्थ है 'समण' अर्थात् त्रस, स्थावर सब प्रकार के प्राणियों के प्रति जिसके अन्तःकरण में समान रूप से हित-कामना है, वह श्रमण है।
- जो साधक त्रस-स्थावर जीवों पर समभाव रखने वाला होता है, उसके मन में आकुलता-व्याकुलता और विषम भाव नहीं होते, वही श्रमण कहलाने का अधिकारी है, उसको 'समन' कहते हैं।
- जिस प्रकार गृहस्थ वर्ग की सम्पदा धन-धान्य और वैभव है उसी प्रकार श्रमण-श्रमणी समाज की सम्पदा सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक्चारित्र है।
- किसी के यहाँ जब कोई अतिथि आता है तो गृहपति अच्छे-अच्छे पदार्थों से उसका सत्कार करता है। संत भी अतिथि हैं, परन्तु भेंट, पूजा, पैसे लेने वाले नहीं हैं। उनका आतिथ्य व्रत-नियम से होता है। सत्संग से आप शिक्षा लेकर जीवन शुद्धि करें, इसी में संतों की प्रसन्नता है।
- शास्त्र और श्रमण संघ की मर्यादा है कि साधु-साध्वी फोटो नहीं खिंचवाए और मूर्ति, पगलिए आदि कोई स्थापन्न करे तो उपदेश देकर रोके। रुपये पैसे के लेन-देन में नहीं पड़े और न कोई टिकट आदि अपने पास रखे। साधु-साध्वी स्त्री-पुरुषों को पत्र नहीं लिखे और न मर्यादा विरुद्ध स्त्रियों का सम्बन्ध ही रखे। तपोत्सव पर दर्शनार्थियों को बुलाने की प्रेरणा नहीं करे। महिमा, पूजा एवं उत्सव से बचे। धातु की वस्तु नहीं रखे, न अपने लिए क्रीत वस्तु का उपयोग करे।
- संत लोगों का काम तो उचितानुचित का ध्यान दिलाकर रोशनी पहुँचाना, सर्चलाइट दिखाना, मार्ग बतलाना है, लेकिन उस मार्ग पर चलना तो व्यक्ति के अधीन है।
- साधु सम्पूर्ण त्यागमय जीवन का संकल्प लेकर जन-मानस के सामने साधना का महान् आदर्श उपस्थित करता है। वह रोटी के लिए ही सन्त नहीं बनता। संत के साधना का लक्ष्य पेट नहीं ठेट है। वह मानता है कि रोटी शरीर पोषण का साधन है और शरीर की उपासना एवं सेवा का मूल आधार।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

संयम है जीवन का बसन्त

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा दिनांक 20 जनवरी, 2010 को बसंत पंचमी के पावन अवसर पर, सांचौर (राजस्थान) में फरमाए गए प्रवचनामृत का संकलन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता ने किया। **-सम्पादक**

बसन्त पंचमी संसार का अन्त करने वाली, आत्मगुणों का बसन्त खिलाने वाली है। जीवन में हर व्यक्ति कुछ न कुछ सहयोग करता है, पर संसार के अधिकतर जितने भी सहयोग हैं वे सब पाप बढाने वाले हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। बिना सहयोग के उसका जीवन नहीं चलता। यह जो कपड़ा पहन रखा है, इसमें भी न जाने कितने आदमियों का सहयोग है। किसी ने कपास का बीज बोया, किसी ने सिंचन किया। फसल काटने वालों ने कटाई की होगी, कटाई के बाद रूई निकालने वालों ने रूई निकाली, ताना बुनने वालों ने ताना बुना, कई-कई आदमियों का सहयोग रहा तब जाकर कपड़ा बना।

पेट भरने के लिए रोटी चाहिये। रोटी के लिए कितने आदमियों का सहयोग होता है। रोटी के लिए ही क्यों, समाज की सेवा के लिए भी कई-कई आदमियों का सहयोग चाहिये। संसार के कामों का सहयोग प्रायः बंध का कारण है। पिता पुत्र को पालता है, पुत्र को बड़ा करता है, पढ़ाता है, लिखाता है, शादी-विवाह करता है, काम-काज सिखाता है, पिता पुत्र के लिए क्या-क्या करता है, आप जानते हैं। पिता करता है तो पुत्र भी सहयोग करता है। पुत्र बुढ़ापे की लाठी बनता है, सेवा करता है, पिता की सार संभाल करता है। पिता पुत्र की सहायता करे या पुत्र पिता का सहयोग करे, यह सब प्रायः ममता के कारण से किया गया सहयोग है। जहाँ ममता है वहाँ कर्म-बन्ध है।

आप बसन्त खिलाना चाहते हैं तो मुक्तिमार्ग में सहयोगी बनिये। अज्ञान का अन्धकार है तो उसे मिटाने के लिए स्वाध्याय का सहयोग लें। स्वयं पढ़ें, दूसरों को पढ़ने के लिए प्रेरणा करें। स्वयं साधना करें, दूसरों को साधना के लिए प्रेरित करें। मुक्ति मार्ग में कोई सहयोग करता है तो पाप घटेंगे और जितने-

जितने पाप घटेंगे उतना-उतना आत्मा का बसन्त खिलेगा।

कई हैं जो जीवन भर के लिए संयम स्वीकार कर रहे हैं, महाव्रत ग्रहण करने की तैयारी कर रहे हैं। जो संयम अंगीकार कर रहे हैं और जो संयम ग्रहण करने में सहयोग कर रहे हैं, शास्त्र की भाषा में कहूँ सहयोगी बनने वाले तीर्थंकर गोत्र तक का बंध कर सकते हैं। वासुदेव श्री कृष्ण ने नवकारसी-पोरसी-उपवास नहीं किया फिर भी तीर्थंकर गोत्र का बंध कर लिया। कैसे? राजा श्रेणिक पूनिया श्रावक की एक सामायिक नहीं खरीद सका, किन्तु संयम लेने वालों को सहयोग देकर उसने तीर्थंकर गोत्र का बंध कर लिया।

कर्मबन्ध में सहायता करने के बजाय अब जो उम्र बची है उसका उपयोग कर्म-निर्जरा में करें। आप सांचौर वाले ही नहीं, यहाँ जितने भी वृद्धजन विराजे हैं, वे सब संयम नहीं ले सकते तो संयम लेने वालों का सहयोग करें। मैंने वृद्धजन शब्द का प्रयोग किया वह इसलिए कि यहाँ अधिकतर वृद्धजन हैं, जवान तो कोई मुम्बई से आ जाय तो भले दिखाई दे जाय। आप वृद्ध हैं कोई बात नहीं, इस अवस्था में भी आप संवर-सामायिक-स्वाध्याय करें और धर्म-साधना में सहयोगी बनें तो आप आत्मगुणों का बसन्त खिला सकते हैं। स्वयं साधना करेंगे और दूसरों को साधना में सहयोग देंगे तो आप अपने आत्मगुणों को विकसित करेंगे।

बसन्त पंचमी को दीक्षा-तिथि भी कहा जा सकता है। इस दीक्षा तिथि में सहयोग करने के लिए सालेचा जागीरदार परिवार बालोतरा से यहाँ आया है। उनसे एक बात कहनी है कि आप यह सहयोग देकर इतिश्री मत समझ लेना। यह भी मत मान लेना कि मेरे घर से दीक्षाएँ हो रही हैं तो मेरी गाड़ी तो पार हो ही जायेगी। कई हैं जो कहते हैं कि मेरे घर से छः दीक्षाएँ हुई, मेरा पुत्र दीक्षित है, पुत्रियाँ दीक्षित हैं, घर से दीक्षा ले ली, इतना कर लेने मात्र से कहने वालों का तिरना नहीं हो सकता। तिरना तो करने से होगा। हाँ, अनुमोदन करना भी कर्म काटने का कारण है, सहयोग देना भी लाभ का कारण है, पर बिना साधना किए मुक्ति किसी की हुई नहीं, साधना होगी नहीं, करना जरूरी है। सित्तर-सित्तर साल के भी दीक्षित हैं। हमारे यहाँ हैं, ज्ञानगच्छ में हैं, अन्य परम्परा में मिल सकते हैं, इसलिये आपसे कहना है कि आप भी कुछ करो। जैसे बिना खाये पेट नहीं भरता, वैसे ही संयम में रमण करना जरूरी है। आपने सामायिक कर ली,

प्रतिक्रमण कर लिया, दया-संवर की साधना कर ली, इतने से काम नहीं चलेगा, बसंत खिलाने के लिए तो करणी करनी पड़ेगी। सर्दी मिटानी है और कम्बल पेटी में रखा हुआ है तो उससे काम नहीं चलेगा।

दीक्षा लेने वाले आज भी हैं। बीस-पच्चीस साल की युवावय में दीक्षा ले रहे हैं। जो साठ-साठ के हैं, सित्तर साल के हो गये, उन्हें क्या करना चाहिये, आप खुद सोचें, विचार करें कि क्या मैं संसार के ये काम करते हुए मुक्ति पा सकता हूँ? अगर नहीं तो आप भी साधना में आगे बढ़ें और जो आगे बढ़ रहे हैं अथवा आगे बढ़ना चाहते हैं, उन्हें सहयोग करें। स्वयं करें, दूसरों के लिए सहयोगी बनें।

धर्म में सहयोग करना, दलाली करना, कर्म काटने का रास्ता है, बालोतरा का जागीरदार परिवार सहयोग कर रहा है प्रमोद है, पर इससे अपनी साधना को गौण न करें। बीस साल का दीक्षा ले रहा है, सित्तर साल वाला दुकान जा रहा है। नौकरी करने वाले रिटायर हो जाते हैं, पर धंधा करने वाले कभी रिटायर नहीं होते। आप कब तक घाणी के बैल की तरह से चलते रहेंगे?

तीर्थंकर भगवान् ने जो व्यवस्था कर रखी है, उस पर चलना चाहें तो आप आरम्भ-परिग्रह से निवृत्ति करें तथा संवर-साधना में प्रवृत्ति करें तो ही आत्मगुणों का बसन्त खिलेगा, शांति प्राप्त होगी। शांति पाने का एकमात्र रास्ता है, स्वयं धर्म-साधना कीजिये, दूसरों को सहयोग दीजिये और जो करने वाले हैं उनका अनुमोदन कीजिये। अनुमोदन भी लाभ का कारण है। अनुमोदन लाखों-करोड़ों लोग कर सकते हैं। आप बोलते हैं जघन्य दो हजार करोड़ उत्कृष्ट नौ हजार करोड़, कहने में आप कुछ भी कहें, किन्तु आप यह जानते हैं कि बिन्दियों का महत्त्व तभी है जब उनके पूर्व एक का अंक लगा हो। महत्त्व एक का है। एक पर बिन्दी है तो संख्या दस, सौ, हजार इस तरह बढ़ती जाती है। इसलिये खुद करें, जितना बन सके, उतना तो जरूर करें। हाँ, अनुमोदन अध्यवसायों की निर्मलता जगाता है, पर आप अपनी श्रद्धा-भक्ति जगाकर जिस दिन स्वयं पाप से निवृत्ति करेंगे उस दिन आपके लिए बसन्त पंचमी की महक कही जा सकेगी।

आप फूल नहीं तो फूल की पंखुड़ी ही सही, अपनी शक्ति के अनुसार पाप से निवृत्ति करें वही आपके लिए शांति समाधि का कारण होगा, साथ ही तीर्थंकर भगवान् के शासन को दिपाने में आप सहयोगी बन सकेंगे। ■

प्रवचन

साधना के शिखर पुरुष

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी महाराज

आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज जब तक जीए, उन्होंने आदर्श जीवन जीया। उनका जीवन आज भी श्रद्धा से स्मरण किया जा रहा है। भगवन्त में गौतम की तरह ज्ञानगरिमा, सुधर्मा की तरह संघव्यवस्था, अनाथी की तरह वैराग्य और स्थूलिभद्र की तरह ध्यान था।

आचार्य भगवन्त ने अपना जीवन आचरण के साथ ऐसा ढाला कि हम आज भी श्रद्धा से उस महापुरुष को यह कहकर याद करते हैं कि उनके जीवन में पर्वत सी ऊँचाई थी तो सागर सी गहराई थी। उस महापुरुष में अनेकानेक गुण थे। वे प्रवचन के माध्यम से ही नहीं, मौन साधना से भी प्रेरणा देने वाले महापुरुष थे। उनकी प्रेरणा से हजारों स्वाध्यायी बने और हजारों-हजार लोगों ने अपना जीवन संवारा।

आचार्य भगवन्त जयपुर विराज रहे थे। कृष्ण पक्ष की दशमी को वे अखण्ड मौन रखते और ध्यान करते थे। ध्यान-साधना में स्व-स्वभाव में आने का उनका चिन्तन चलता ही रहता। एक दिन कृष्ण पक्ष की दशमी को आचार्य भगवन्त ध्यानस्थ हो अपनी साधना कर रहे थे, संयोगवश उस दिन जैन धर्म के मूर्धन्य मनीषी अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त शिक्षाविद् डॉ. दौलतसिंह जी कोठारी आचार्य भगवन्त के दर्शन-वन्दन और पर्युपासना के लक्ष्य से वहाँ पहुँचे। आचार्य भगवन्त के श्रद्धाशील श्रावक श्री नथमल जी हीरावत नीचे उतर रहे थे और डॉ. कोठारी साहब लाल भवन की सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे। हीरावत साहब ने कोठारी साहब से कहा- ''आचार्य भगवन्त तो आज मौन साधना में हैं, आपकी बात नहीं हो सकेगी।'' कोठारी साहब बोले-''कोई बात नहीं, मुझे दर्शन लाभ तो होगा।''

आचार्य भगवन्त ध्यान-साधना में विराजमान थे। डॉक्टर कोठारी साहब वन्दन नमन कर सामने बैठ गये। वे करीब घण्टे भर वहाँ बैठे रहे और उसके बाद नीचे उतरे। संयोग से हीरावत साहब उन्हें फिर मिल गये। कोठारी साहब बोले- ''मैंने आज जो पाया है, वह वर्षों में कभी नहीं पा सका। आचार्य भगवन्त का

जीवन बोलता है।" आचार्य भगवन्त के उपदेश प्रभाव जमाने हेतु नहीं, स्वभाव में लाने वाले होते थे।

आचार्य भगवन्त के जीवन में जहाँ करुणा थी वहीं वज्र सी कठोरता भी थी। महापुरुषों में ऐसे विरोधी गुण भी होते हैं। दीन-दुःखी और असहाय को देख वे द्रवित हुए बिना नहीं रहते और जहाँ कहीं आचरण में ढिलाई देखते उस समय उनमें वज्रसी कठोरता देखी जाती। उस महापुरुष ने 71 वर्ष तक निरतिचार संयम का पालन किया और अप्रमत्त जीवन जीया। उनका जीवन लडडू की तरह सब ओर से मधुर था। लडडू को आप जिधर से खाएँ उसमें मिठास होती है। उसी प्रकार आचार्य भगवन्त का जीवन मधुरिमा से युक्त था।

आचार्य भगवन्त ने रोग-ग्रस्त होने पर दोष लगाना तो दूर कभी मन को कमजोर तक नहीं होने दिया। भगवन्त के मोतियाबिन्द का आपरेशन होना था। डॉक्टर आपरेशन के पूर्व इन्जेक्शन लगाने के लिए कह रहे थे, परन्तु भगवन्त ने दृढतापूर्वक कहा- "इंजेक्शन की आवश्यकता नहीं है।" भगवन्त ने बिना इंजेक्शन ऑपरेशन करवाया और ऑपरेशन के पूर्व संतों को सावधान किया कि आप ध्यान रखें, ऑपरेशन के दौरान कहीं कच्चे पानी का उपयोग न हो जाये।

आचार्य भगवन्त के जीवन में सरलता, सहिष्णुता और सौहार्द के भाव थे। आचार्य भगवन्त का सं. 2015 में दिल्ली में चातुर्मास था। उस समय श्रमण संघ के प्रथमपट्टधर आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज लुधियाना चातुर्मासार्थ विराज रहे थे। श्रमण संघ के प्रथम आचार्य श्री आत्माराज जी महाराज ने पत्र में आचार्य भगवन्त के लिए 'पुरिसवरगंधहत्थीणं' विशेषण लगाया। जो विशेषण अरिहंतों के लिए लगाया जाता है, श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर ने उसका प्रयोग आचार्य भगवन्त के लिए किया। आचार्य भगवन्त के प्रति उनका विशेष प्रेम था। इसलिए लुधियाना से संदेश आया कि आप दिल्ली तक पधार गये हैं, दिल्ली से लुधियाना ज्यादा दूर नहीं है, आप लुधियाना पधारें। पर आचार्य भगवन्त पूज्य अमरचन्द जी म.सा. की रुग्णता में सेवा को प्रमुखता देने के कारण लुधियाना नहीं पधार सके, यह अलग बात है।

जैन जगत् के ज्योतिर्धर आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज जेठाणा विराज रहे थे। उस समय आचार्य भगवन्त का भी जेठाणा पधारना हुआ।

आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज को विहार करना था, आचार्य भगवन्त पहुँचाने के लिए नीचे उतरे। जवाहराचार्य कहने लगे- ''आप मुझे मांगलिक सुनाओ।'' जवाहराचार्य दीक्षा पर्याय और वय में बड़े थे, फिर भी मांगलिक श्रवण करना चाहते थे। आचार्य भगवन्त लघुता प्रकट करते रहे, किन्तु जवाहराचार्य ने कहा कि मैं दक्षिण में जा रहा हूँ, आपकी मांगलिक श्रवण करके जाऊँगा। आदर-समादर का वह कितना सुन्दर उदाहरण है।

आचार्य भगवन्त आत्म-साधक थे। जब तक जीये हर व्यक्ति के वे आस्था के केन्द्र रहे। अन्तिम समय आया तो समाधिमरण से वे चिर स्मरणीय बन गये। जिनाज्ञा के अनुसार उनका आचरण था। इसलिए बड़े-बड़े आचार्य भगवन्त और सन्त उनका परामर्श प्राप्त करते। बड़े छोटों में जब कुछ विलक्षणता देखते हैं, तभी उनकी प्रशंसा होती है।

श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज का राजस्थान में पदार्पण हुआ। आचार्य सम्राट् भोपालगढ़ पधारे, जहाँ आचार्य भगवन्त पहले से विराज रहे थे। दोनों में कैसा प्रेम था, वह आज भी हमें प्रेरणा देता है। आचार्य सम्राट् श्री आनन्दऋषि जी को जोधपुर पधारना था। दोनों महापुरुषों ने आगे पीछे विहार किया। संयोग ऐसा हुआ कि आचार्य सम्राट् के साथ वाले किसी संत को सर्प ने डस लिया। आचार्य सम्राट् भक्तों से बोले- तुम आचार्य श्री हस्तीमल महाराज को सूचना करो। पूज्य गुरुदेव को सर्प डसने की सूचना मिली, वे तुरन्त विहार कर वहाँ पहुँचे। देखा तो गाँव वाले सभी चिंतित और परेशान हैं, संत जिसे सांप काट खाया, वह बेहाल है। आचार्य भगवन्त ने अपनी साधना-आराधना से कुछ सुनाया और सांप का ज़हर उतर गया। यह चमत्कार नहीं साधक की साधना के बल का नमूना है।

पूज्य गुरुदेव ने संयम-साधना में आगमवाणी को सदा आगे रखकर उसका प्रचार-प्रसार किया। उस महापुरुष के समाधिमरण की बात आपने सुनी होगी। तप-साधना में उस युगमनीषी ने पूर्ण सजगता में संथारे के प्रत्याख्यान अंगीकार किये और संथारा स्वीकार करने के बाद उस महापुरुष ने शरीर तक से ममत्व हटा लिया। हाथ हो या पैर, वह जिस अवस्था में है उसे हिलाया तक नहीं। संतों ने जिस करवट सुला दिया, उन्होंने स्वयं करवट नहीं बदली। प्रतिलेखना के लिए जब भी आसन से उठाया जाता तो भगवन्त करुणा की दृष्टि

से देख लेते। संत महर नजर रखने का निवेदन करते, पर वे आत्मरमण-आत्म चिंतन में लीन रहते। उनकी अंगुलियों पर माला थी और था स्मरण। आगमों में पादपोपगमन संथारे का वर्णन आता है, आचार्य भगवन्त का समाधिमरण ठीक वैसा ही लगता था। ऐसे महापुरुष के लिए जितना कहा जाय कम है। उस दिव्य द्रष्टा ने मेरे जैसे अनगढ़ को पामर से पावन बना दिया।

('नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' से गृहीत)

वंदन रत्नसंघ सिरताज

मधुरव्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी म.सा.

(तर्ज- धरती धोरां री)

(आचार्य हीरा का 72वाँ जन्म-दिवस)

वंदन रत्न संघ सिरताज,
हीरा गुरुवर तुम पर नाज, हस्ती पट्टधारी। (टेर)
तुमसे फैला धर्म प्रकाश,
हर दिल जगा अटल विश्वास,
रचते नित्य नया इतिहास,
जन-जन हितकारी, हस्ती पट्टधारी ॥1॥
अनुशासन में आज मिसाल,
संयम सौरभ खूब कमाल,
तुम से संघ है मालामाल,
प्रणमें नर-नारी, हस्ती पट्टधारी ॥2॥
रग-रग जिनवाणी विश्वास,
हर-पल समकित गुण की प्यास,
मिलता अरिहंत का आभास,
तुम हो अविकारी, हस्ती पट्टधारी ॥3॥
ऊँचा ज्ञान-क्रिया का साथ,
चौथे आरे की सौगात,
रखना 'मुनि गौतम' पर हाथ,
जाऊँ बलिहारी, हस्ती पट्टधारी ॥4॥

(प्रवचन के दौरान प्रसंगवश उच्चारित गीत)

प्रवचन

स्वाध्याय से साधना का खिले बसन्त

तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा दिनांक 20 जनवरी, 2010 को बसंत पंचमी के पावन अवसर पर सांचौर (राजस्थान) में फरमाए गए प्रवचनामृत का संकलन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता ने किया है। **-सम्पादक**

संसार के दुःखों का अन्त करके आत्मा का बसन्त खिलाने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्तों को और वीतराग भगवन्तों द्वारा फरमायी गयी दुःखों का अन्त करने वाली वीतराग वाणी को आत्मसात् कर संयम के बसन्त को खिलाने वाले और मुमुक्षुओं को उसकी आत्म-सौरभ से विकसित करने की प्रेरणा प्रदान करने वाले आचार्य भगवन्तों के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्-

ऋतु की अपेक्षा बसन्त की बात करें तो सर्दी के बस अन्त की तैयारी। अब सर्दी का बढ़ना नहीं होगा, सर्दी अन्त की ओर अग्रसर होती चली जायेगी। ज्योतिष की अपेक्षा से बात करें तो सुबह सूर्योदय का समय धीरे-धीरे घटता चला जायेगा। दिन का मान रात्रि की अपेक्षा बढ़ता चला जायेगा, वृक्ष की अपेक्षा से चर्चा करें तो पेड़ों के पत्तों का विकसित होने का अन्त हो गया, पतझड़ के साथ नई कोंपले फूटेंगी। विद्यार्थी की चर्चा की जाय तो उसे खेलकूद एवं उद्दण्डता का अन्त करके परीक्षा की तैयारी प्रारम्भ करनी होगी। ये सब चर्चाएँ बाहरी जगत की हैं, वीतराग-वाणी तो भव-भ्रमण के अन्त की बात करती है। जिस दिन जीव को यह ध्यान आ जायेगा कि घाणी में जुते बैल की तरह दिन भर चलते हुए भी वहीं का वहीं हूँ, प्रगति के नाम पर कुछ नहीं। बैल ने गति तो बहुत की, पर दिन भर चलने के बाद भी वहीं का वहीं, घर से बाहर तक नहीं जा सका। यह तो वही बात हुई, जैसे कोई साईकल को स्टेण्ड पर खड़ा करके पेडल पर पेडल मारता जाय तो क्या वह आगे बढ़ सकेगा? किसी को हार्ट की प्रोब्लम है, उसे हार्ट की जांच के लिए मशीन पर खड़ा कर जांच की जाती है, आपने देखा होगा मशीन पर गति तो हुई, प्रगति नहीं हुई। जीव की गति होते हुए भी प्रगति नहीं हो रही है। क्यों? कहना होगा उस जीव ने अब तक मिथ्यात्व का

अन्त नहीं किया। यदि समकित की भूमिका में एक नवकारसी भी होती तो शायद अज्ञानी लाखों-करोड़ों वर्ष तक जो कर्म नहीं खपा सकता ज्ञानी उसे केवल तीन उच्छ्वास में खपा सकता है।

आज बसन्त पंचमी है। इस बसन्त पंचमी पर हम जिस महापुरुष की जन्म-शती की बात कर रहे हैं, उस महापुरुष की जब पचासवीं वर्ष गांठ थी तब उनके गुरुदेव पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज की सौवी वर्षगांठ थी। पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज ने विक्रम संवत् 1927 में दीक्षा ली, आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज ने विक्रम संवत् 1977 में दीक्षा अंगीकार की। गुरु (आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज)की दीक्षा आज के दिन माघ शुक्ला पंचमी को पूज्य आचार्य श्री कजोड़ीमल जी महाराज के सान्निध्य में जयपुर में सम्पन्न हुई। आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज की दीक्षा माघ शुक्ला द्वितीया वि.स. 1977 को हुई, दोनों महापुरुषों की दीक्षा में लगभग पचास वर्ष का अन्तर है। एक दीक्षा पंचमी की है एवं दूसरी द्वितीया की।

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज ने ईस्वी सन् 1984 की माघ शुक्ला पंचमी को बड़ी पादु में भाव-विभोर होकर प्रवर्तक श्री पन्नालाल जी महाराज के लिए बोला था कि वे जन्म के माली थे, बीज बोना जानते थे। स्वाध्याय संघ का मौलिक चिन्तन प्रवर्तक श्री पन्नालाल जी महाराज का है, आचार्य श्री हस्ती ने उसमें प्रारम्भ से प्रेरणा एवं सहयोग दिया। एक समय था जब समाज का शेष वर्ग विरोध में खड़ा था जो कहता था कि स्वाध्यायी शास्त्र वाचन करके पर्युषण कैसे करवा सकते हैं? आज तो हम खुशनसीब हैं। स्वाध्याय की प्रवृत्ति सभी परम्पराओं ने अपना ली है। एक समय था जब प्रत्याख्यान करवाये जाते कि श्रावक के व्याख्यान में नहीं जाना। आचार्य श्री हस्ती ने स्वाध्याय की प्रेरणा करके अज्ञान अन्धकार को दूर किया है। स्वाध्याय से आत्मा की साधना का बसन्त खिलाया जा सकता है। उत्तराध्ययन सूत्र के बाईसवें अध्ययन में राजीमति के नाम से, इक्कीसवें अध्ययन में कोविद के नाम से कहते हैं, जिसका तात्पर्य है कि- श्रावक को भी शास्त्र के पठन-पाठन का पूरा अधिकार है।

अब भी तेरापंथी एवं श्वेताम्बर मूर्तिपूजक में श्रावक को कोई भी शास्त्र नहीं पढ़ाया जाता, पर स्थानकवासी समाज में आचार्य श्री हस्ती ने स्वाध्याय का

बिगुल बजाया। आचार्य भगवन्त के पहले प्रवेश में बालोतरा में धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ हुई, वह आज भी विद्यमान है तो दूसरी बार प्रवेश में सिवांची पट्टी का विवाद मिटा। सिवांची पट्टी में विवाद का अन्त करवा कर सहृदयता-समता का बसन्त खिलाने वाले आचार्य श्री हस्ती ने अद्वितीय कार्य किया। तीसरे प्रवास में पर्युषण में कारोबार बन्द रखकर धर्म साधना के बसन्त खिलाने का कार्य हुआ, वह आज भी चल रहा है। कभी लोग कहते इस बार दो पर्युषण हैं, तो दोनों बार कारोबार नहीं किया जाता। इस तरह हर बार नया बसन्त खिला है बालोतरा में।

बालोतरा के सालेचा जागीरदार परिवार ने 30 दिसम्बर को पालनपुर में आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी के शुभारंभ पर खड़े होकर बोला था कि आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज के हमारे ऊपर इतने उपकार हैं, जिन्हें हम चुका नहीं सकते। अपनी दो सुपौत्रियों की दीक्षा की घोषणा कर जागीरदार परिवार का कहना था यह तो ब्याज है, मूल चुकाना तो अभी बाकी है।

आज सत्यपुर (सांचौर) में सत्य के रास्ते चलने के लिए आप उपस्थित हुए हैं, वरना शायद पाली-जोधपुर की तरफ आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हीराचन्द्र महाराज) की विहार-यात्रा चलती, पर आपके उत्साह से, उमंग से, दृढ़ता से, श्रद्धा से, भक्ति से आचार्य भगवन्त इधर पधारे। बाबूलाल जी सांचौर वाले यहाँ बैठे हैं। ये तैंतीस वर्ष पहले सामायिक से जुड़े। इनकी भावना थी कि पौष शुक्ला चतुर्दशी सांचौर कर ली जाय। इन्होंने चौपन वर्ष की आयु में शीलव्रत का खंद कर लिया। बालोतरा की श्रद्धा-भक्ति से आचार्य भगवन्त के चरण बाड़मेर की ओर गतिमान हैं। सांचौर में प्रायः चौमासे होते रहते हैं। यहाँ तो एक-एक घर से पाँच-पाँच लड़कियों एवं एक-एक लड़के की दीक्षा हुई है।

आप स्वाध्याय का सम्बल लेकर अज्ञान-अन्धकार का अन्त करें, अविद्या दूर कर जीवन में ज्ञान की ज्योति जगायें। जीवन के चरम लक्ष्य की अनुभूति का दृढ़ निश्चय करना दीक्षा है। दीक्षा की पाठशाला है 'एकान्त' और दीक्षा का पाठ है 'मौन'। उत्तराध्ययन सूत्र के पन्द्रहवें अध्ययन की पहली गाथा है-

मोणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं, सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने।
संथवं जहिज्ज अकामकामे, अन्नायएसी परिव्वए जे स भिक्खू।।

इस गाथा में धर्म को जानकर मौन के आचरण की बात कही गई है। इसी प्रकार प्रश्नव्याकरण के दूसरे संवरद्वार में मौन रखने की प्रेरणा है। उत्तराध्ययन सूत्र के नौवें अध्ययन की सोलहवीं गाथा भी मौन करना सिखा रही है।

अपनी आत्मा से अपनी गवेषणा कराती है वह है- दीक्षा। पाप से मौन होकर आत्मा में रमण करने का नाम है दीक्षा। दोषों को सदा-सदा के लिए तिलांजलि देना दीक्षा है। उसी दीक्षा की अनुमति देने के लिए आज आप यहाँ उपस्थित हुए हैं, तो आपको भी निश्चय करना है कि हर व्यक्ति के मन में पाप के प्रति घृणा का भाव जगे। हर जीव से मैत्री रखते हुए भव-भ्रमण का अन्त करने के लिए आप तैयार हों। पाप हेय है यह तो नजर आये। हेय को हेय समझकर उपादान का गुण जिससे प्रकट होता है वह है सम्यग्दर्शन।

मिथ्यात्व का अन्त तभी होगा जब चाह की सही समझ आवे। साधना का बस्ता तभी खुल सकता है जब पहले हेय 'हेय' नज़र आवे। उपदेश के रास्ते पर चलने के लिए वीतराग भगवन्त कहते हैं-सोच्चा जाणेइ पावगं। सोच्चा जाणेइ कल्लाणं। सुनकर जाना जाता है कि पाप मार्ग क्या है? पुण्य का मार्ग क्या है? पाप और पुण्य का मार्ग जानने का माध्यम है सुनना। आपको कानों के माध्यम से पहले सुनना पड़ेगा। सुनना कब तक? जब तक कि आप अपने भीतर की आवाज न सुनें।

चोर चोरी करता है। चोर के भीतर से आवाज आती है-चोरी करना बुरा है, चोरी नहीं करें। व्यभिचार का सेवन करने वाले के भीतर से आवाज आती है व्यभिचार ठीक नहीं। बुरे से बुरे कार्य करते समय भीतर से आवाज आती है बुरा कार्य मत करो। किन्तु भीतर की आवाज बाहर के शोरगुल में दब जाती है, इसीलिये जीव भव-भ्रमण में भटकता रहता है। गुरु की वाणी बाहर में ऐसी चोट मारती है कि भीतर के अवरोध को हटाकर अन्तर की आवाज सुनने का सामर्थ्य पैदा कर देती है। पीपाड़ के भजनरसिक श्रावक प्यारेलाल जी कांकरिया ने अपनी कविता में कहा है-

दर्शन से भक्ति जगावे, भक्ति से समकित पावे
समकित गुण श्रेणी चढ़ते, सच्चिदानंद हो जावे
यही रहस्य है गुरुदर्शन का, साहु सरणं पवज्जा

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज के ईस्वी सन् 1981 के रायचूर चौमासे में गुरुचरणों में उस समय पंडित रत्न श्री हीरामुनि जी सेवा में थे, उनतीस साल पूरे हुए हैं। आचार्य श्री गुरु के स्वाध्याय के सन्देश को जहाँ भी जाते हैं, पहुँचाते हैं। उस समय के श्रावक भी कैसी-कैसी रचनाएँ करते थे। कविहृदय प्यारेलाल जी कांकरिया आगम के आधार पर काव्य-रचना करते थे। आचार्य श्री मेड़ता में विराज रहे थे तब सुश्रावक जंवरीलाल जी ओस्तवाल की पोती भजन गुनगुनाती-

श्रमणों में श्रेष्ठ सुधीर हो, सहस्रों संवत्सर श्रुत झरे।
शूरों की है यह साधना, सृष्टि में सौरभ स्थिर करे।।
मानव के गुण तो समक्ष हैं, वीतरागता पर लक्ष्य है।
नित सत्य का ही सुपक्ष है, वाणी भी हित शिक्षा भरे।।
श्रमणों में।

श्रावक कहाँ तक पहुँच सकते हैं? कब पहुँच सकते हैं? प्यारेलाल जी कांकरिया का अन्त समय आया तो उनकी बेटी शकुन्तला ने संथारा करवा दिया। उनका संथारा भले ही कम चला हो, पर होश-हवाश में संथारा लेकर समाधि-मरण प्राप्त करना बहुत बड़ी बात है। हम आत्मा में बसन्त खिलाने वाले महापुरुषों के मुखारबिन्द से सुनकर आचरण में उतारने का प्रयास करें तो हम संसार का अन्त कर सकेंगे।

सद्वाक्य

श्री दिलीप जैन

1. ममतारहित एवं निष्कामता पूर्वक समर्पण ही विनय है।
2. गुणों का सीमित (विपरीत) होना ही दोष है।
3. स्वयं की साता की आसक्ति टूटना ही अनुकम्पा है।
4. सेवक कहलाने की आशा भी नहीं रहे तो ही सेवा है।
5. दोषों से निवृत्ति हेतु गुणों की प्रवृत्ति आवश्यक है।

संकलितः-श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा के प्रवचनों से

कविता

जन्म शताब्दी मनाएँ

श्री देवेन्द्र नाथ मोदी

बिखरावों से दूर रहें,
हम सुश्रावक बन जाएँ।
क्षमताओं का संचय कर,
जन-मंगल करते जाएँ।
सुश्रावक ही जीवन में,
तप-बल का संचय कर पाते।
सुश्रावक ही अपनी क्षमताएँ,
सीमित से अक्षय कर पाते।
अर्जित शक्ति और क्षमता,
जनहित में सुनियोजित कर लें।
महामंत्र नवकार का मिलजुल कर,
हम जप कर लें।
अपने हित सर्वदा किया श्रम,
अब और के हित सुकर्म कर लें।
जन-जन के उज्ज्वल भविष्य की,
भावना मन में भर लें।
सामायिक-स्वाध्याय को,
निज जीवन का अंग बनाकर,
आचार्यप्रवर श्री हस्ती जन्म शताब्दी मनाएँ।
सामूहिक सामायिक-स्वाध्याय से,
गुरु कृपा सहज मिल जाती।
ज्यों सावनी फुहारों में,
उपवन की कली-कली खिल जाती।
आचार्य श्री हीरा के व्यसन त्याग संदेश से,
विश्व संकट का समाधान भारी।

विघ्नों में भी विजयी होगी,
इससे मानवता सारी।
समय और सामर्थ्य जरा भी,
आज प्रदर्शन में न गवाएँ।
आचार्यप्रवर श्री हस्ती जन्म शताब्दी मनाएँ।
अध्यात्म चेतना वर्ष की वेला में,
मूल्य समय का हम पहचानें।
जागृत रहकर महाकाल के,
संकेतों को समझें जानें।
हर वसंत से पहले,
पीले पत्तों को झरना पड़ता।
वर्षा से पहले अम्बर को,
मेघों से घिरना पड़ता।
इसलिए अवरोधों को देख,
बिल्कुल न घबराएँ।
आचार्यप्रवर श्री हस्ती जन्म शताब्दी मनाएँ।
समय कड़ी धूप का है,
पगडंडी बहुत संकरी है राहों की।
है न समझदारी ऐसे में,
इच्छा सुविधाओं छाँहों की।
एक साथ चलकर,
सफलता मिल पाएगी।
दिखे अलग-सा हमें कोई,
उसे फिर समझाएँ।
बिखरावों से दूर रह,
आचार्यप्रवर श्री हस्ती जन्म शताब्दी मनाएँ।

-5-A/1, सुभाष नगर, पालरोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

आचार्य हस्ती जन्मशती

अमरत्व का वह उपासक (2)

गुण प्रशस्ति - मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

शब्द प्रस्तुति - श्री सम्पतराज चौधरी

श्रद्धेय मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के विशिष्ट गुणों का प्रशस्ति गान एवं उनके प्रति अपने अहोभाव समय-समय पर व्यक्त किये। गुरुदेव के जन्म शताब्दी वर्ष में मुनि श्री के भावों का प्रस्तुतीकरण अपने शब्दों में धारावाहिक रूप में कर रहे हैं- श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली।

अवतरणिका

(6)

मुनि के अहोभाव

"दीन-दुनिया से दूर,
तेरी अर्चना करते हुए,
मैं तुझ में मिल चुका हूँ।
तेरा जीवन मेरे मानस पटल पर
चलचित्र की तरह घूम रहा है।
तेरा संदेश मेरे कानों में गूँज रहा है।"

"जब मैंने तुमसे याचना की थी कि
मुझे शान्ति चाहिए
तो तुमने कहा, "वह तो मेरे पास ही है।
मन के विकल्पों के कारण
शान्ति की अनुभूति नहीं हो रही है।
मन के विकल्प अशान्ति के कारण हैं,
विकल्पों की गठरी उतार,
उनका प्रशमन कर,
शान्ति की अनुभूति हो जाएगी।"

मैंने कहा, "गुरुदेव इसके लिये सहारा चाहिए।"
तुमने पूछा- "किसका सहारा? मेरा सहारा?
"मेरा सहारा तो इतना भर कि
मैं तुम्हें सही दिशा बता दूँगा,
रास्ते की ठोकरों से सावधान कर दूँगा,
पर चलना तो तुझे ही पड़ेगा।"

(7)

मुनिवर के बहते उद्‌गारों के बीच सहसा पथिक बोल उठा–
"हे मुनिवर!
मुझे उस गुण समुद्र का विस्तृत परिचय दो,
ताकि मैं भी उनमें तन्मय हो जाऊँ,
उनका प्रीति पात्र बन जाऊँ।
मेरी उत्सुकता प्रबल हो रही है।"

मुनिवर का आश्वासन
"पथिक, धैर्य रखो।
मेरे अहोभावों के उद्‌गारों में
तुम्हें उनका परिचय भी मिलेगा
और दिशा बोध भी।
मैं इस उधेड़बुन में हूँ कि
उस दिव्य दिवाकर का परिचय कहाँ से प्रारम्भ करूँ?
तुम्हारी प्रबल उत्कंठा को शीघ्र शान्त करने हेतु
मैं उनके निकट अतीत को
जो साक्षात् मेरे समक्ष है,
जो उनकी साधना की चरम परिणति है,
उसका पहले दर्शन करा देता हूँ।"
"पथिक, तुमने इसी स्वरूप को
उस प्रकाशमणि के पार देखा है,
अब उन्हें निकट से
बिना व्यवधान के देख लो।"

(8)

दिव्यात्मा का परिचय

''उस महान साधक ने
अपने जीवन के संध्याकाल में,
समस्त बहिरंग और अंतरंग
परिग्रहों का त्याग कर,
उत्कट आराधना पूर्वक
अपनी पर्याय को
बड़ी कुशलता से नियोजित किया।
उस निस्पृह, निर्लिप्त संत ने,
अपनी एकान्त साधना में तल्लीन हो,
संल्लेखना के हवन कुंड में,
अति निरपेक्ष भाव से,
शेष आयु के एक एक पल की
आहुति दे, संचित कर्मों का दहन किया।''

''फिर एक दिन शान्तिपूर्वक,
सुनहली संध्या में,
सूर्य के अवसान के साथ
उनके जीवन दीप का निर्वाण हो गया।
दिनकर अपना दिव्य ज्ञानालोक
वसुधातल पर विकीर्ण कर अस्त हो गया।
देह और जीव की पृथक्ता के तत्त्व विज्ञान को
जैसा उन्होंने जीवन में प्रतिपादित किया,
वैसे ही अपने समाधिमरण में प्रमाणित कर दिया।''

''पथिक, सच कहता हूँ,
जीवन का इतना सार्थक समापन
और मरण का ऐसा उज्ज्वल आह्वान
मैंने पहली बार देखा।''

''तुम्हारी उत्कंठा शान्त करने को

कथानक का उपसंहार तो बता दिया,
अब मैं तुम्हें महाकाव्य के पुरोभाग में
ले चलता हूँ।"

(9)

"पथिक,
सही अर्थों में तो अमरत्व का वह उपासक
असंसारी ही था।
चूंकि उनका आविर्भाव इसी जगत में हुआ,
मैं उनका सांसारिक परिचय भी दे देता हूँ।

"आज से एक शताब्दी पूर्व
मारवाड़ क्षेत्र की पुण्यधरा पीपाड़ शहर में,
स्वनाम धन्य बोहरा कुल में
उनका अवतरण हुआ,
माँ रूपा और पिता केलवचन्द जी के घर।
जन्म के पूर्व ही पिता सिधार गये,
माँ विरक्ता हो गई।
वैराग्य के संस्कारों के साथ जन्म हुआ।
नाम दिया - हस्तीमल।
लघुवय में ही परिजनों की अकाल मृत्यु से
साक्षात्कार हुआ।
किशोर को संसार की अनित्यता का बोध हो गया।
जो बन गया उसके जीवन का आधार,
अतः दस वर्ष की आयु में ही कर लिया
श्रमण पथ स्वीकार।"

"सम्भवतः उनका अतीन्द्रिय ज्ञान जागृत हो चुका था।
सवा उन्नीस वर्ष की वय में
उन्हें संघ के अनुशास्ता-
आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया।
जैन इतिहास में यह एक विरल घटना थी।
सत्तर वर्ष उन्होंने निरवद्य मुनि धर्म का

पालन किया
जिसमें साठ वर्ष पर्यंत वे
आचार्य पद को सुशोभित करते रहे।"

आध्यात्मिक परिवार में
वे कुशल वंश की परम्परा में
एक कुशल साधक थे,
रत्न संघ के जाज्वल्यमान रत्न थे
और गुरु शोभाचन्द्र की अप्रतिम शोभा थे।
विषय-कषायों की धूलि,
मोह का बवण्डर,
उनकी निरंजन देह को
कभी मलिन नहीं कर पाया।
इस देश की धरा
उस निर्ग्रन्थ संत के
ईर्या-मर्यादित पग-विन्यास से
धन्य हो गई।"

"सम्राट् श्रेणिक के हाथी को
इतिहासविदों ने गंध हस्ती कहा है।
कहते हैं कि गंध हस्ती के समक्ष
हाथियों की सेना टिक नहीं पाती थी
देवराज इन्द्र ने तीर्थंकरों को
पुरुषों में गन्ध हस्ती के नाम से अलंकृत किया है।
गंध हस्ती की शत्रुओं को
पराजित करने की विशिष्टता के कारण
एक महान् आचार्य ने आचार्य हस्ती को
'पुरुषवरगंधहत्थी' के नाम से अभिहित किया।
कर्म शत्रुओं को परास्त कर आचार्य हस्ती ने
अपने नाम को सार्थक कर दिया।"
"मैं और अधिक उनकी सांसारिक पर्याय का
क्या वर्णन करूँ।

केवल इतना ही कह देता हूँ कि-
कर्म शत्रुओं को परास्त करने में
तप और संयम के शस्त्रों से
सभी श्रमण सुसज्जित होते हैं,
पर संल्लेखना का सुदर्शन चक्र तो
किसी संयमी चक्रवर्ती को ही प्राप्त होता है,
क्योंकि उसे धारण करने की क्षमता
हर एक में नहीं होती।"

(क्रमशः)

अनमोल वचन

1. भूल के वक्त झुकना सीखें, क्रोध के वक्त रुकना सीखें।
2. मूड ऑफ मत करो, मन को साफ करो, जो आए उसको माफ करो।
3. करो तपस्या, मिटे समस्या।
4. सपने मत सजाओ, टूट जाते हैं। अपने मत बनाओ, छूट जाते हैं।
5. जब प्रेम अनन्त होता है तब रोम-रोम में संत होता है।
6. करेमि भंते बोल, सामायिक है अनमोल।
7. मृत्यु को रोका तो नहीं जा सकता, पर मृत्यु को सुधारा जा सकता है।
8. हमें अपने जीवन में दुःख में दीन नहीं होना, सुख में लीन नहीं होना और पापो में तल्लीन नहीं होना चाहिए।
9. ज्योतिषी तो भविष्य बता सकते हैं, पर गुरु भविष्य बना सकते हैं।
10. शरण को स्वीकार करने वाला ही अशरण की भावना को भा सकता है।
11. जीवन ज्येष्ठ बने या ना बने परन्तु जीवन श्रेष्ठ अवश्य बने।
12. जब तक लायक नहीं बनेंगे तब तक नायक नहीं बनेगें।
13. जीवन को बढ़ाया तो नहीं जा सकता है, पर बढ़िया किया जा सकता है।
14. जीवन को वंदनीय बनायें, निन्दनीय नहीं।
15. एक मुखिया सही, तो पूरा परिवार सुखिया।

-श्री प्रमोद हीरावत, जयपुर द्वारा
महासती श्री मुदितप्रभा जी के प्रवचनों से संकलित

गीत

आओ गुरुवर आओ

श्री मनमोहनचन्द बाफना

आओ गुरुवर आओ मेरे हिवड़े में बस जाओ,
मेरे चिंतन के हर पल से, विषय कषाय हटाओ।। आओ..।।
रूपा नंदन प्यारा है, केवल कुल उजियारा है,
बोहरा कुल को दिपाया है, शहर पिपाड़ का प्यारा है,
गुरुवर शोभा पाये हो, सरस्वती कंठ विराजे है,
पोह सुद चौदस के शुभ दिन ये, चमके दशों दिशाओं ।।आओ..।।
पाया हस्ती का शरणां है, मन गणिवर में रहता है,
मन को ममता ने मारा है, परिग्रह किया पसारा है,
कल्प तरुवर पाये हैं, मन वांछित जब पाते हैं,
देकर ज्ञान की ज्योति सबको, आत्मिक बोध कराओ ।। आओ..।।
कलयुग में भगवान मिला, पारस अनुपम हाथ लगा,
अमर फलों का बांटा था, फिर भी समझ नां पाया था,
इस भव से भव पार मिले, मुक्ति पंथ की राह मिले,
आगम के अमृत को पिलाते, जीवन जीना सिखाओ ।। आओ..।।
महामहिम गज प्यारा है, स्वाध्याय जग छाया है,
वीर वाणी का हो सिंचन, ध्यान मौन से संवारा है,
समता संग सामायिक हो, बारह व्रतों के धारक हो,
स्वाध्याय की गजब श्रृंखला, जग उद्योत कराओ। आओ..।।
लिख इतिहास अनूठे हैं, वचन निभाने आये थे,
भोलावन दे बोझ हटा, क्षमा मांगते कर्म कटा,
तेला कर संथारा प्रभु, तेरह दिन में मुक्त गुरु,
जन्म शताब्दी पे श्रद्धा सुमन से, हैं भाव समर्पित आओ। आओ..।।
युगों-युगों तक अमर रहे, रवि, शशि, सम प्रद्योत करे,
ज्ञान क्रिया से कठिन साधना, संत सती का तेज बढ़े,
हीरा तरासा गजब प्रभु, शुभ्र सरल अति मान गुरु,
विनय भाव व श्रद्धा भक्ति से, सबकी वंदना स्वीकारो ।। आओ..।।

-प्रमोद दाल मिल, कानपुर

आचार्य हस्ती जन्म-शती

श्री हस्तिमल्ल शतक (2)

श्री सुमन्त भद्र

घनसाराम्बरमुखवस्त्रिका रजोहरणधर
धर्मध्यान ध्याता आर्तरौद्रध्यानत्यक्ता हैं
कर्णप्रिय मनोहर हृदयहारी मलहारी संत
जिनवाणी भूषण मधुरतम प्रियवक्ता हैं
साध्वाचार शुद्धतास्वरूप मूर्तिमान श्रमण
सार्थक-सजीव-सभ्य-साधन-प्रयोक्ता हैं
दिव्यसंचारी भावभूषित अनन्तकीर्ति
आचार्य हस्तिमल्ल अनेकान्तमुक्ता हैं ||10 ||

शिक्षक परीक्षक सुदीक्षक सुभिक्षुकवर
धैर्यहिमवान सागरगम्भीर सत्त्व हैं
प्रभविष्णु परमसखा माता पिता बन्धु गुरु
विद्याद्रविणधामधारी अतिशय महत्तत्त्व हैं
निरभिमान ऋजुतम मृणालमसृणहृदयधर सात्त्विक
प्रकाशक प्रशासक प्रभासक सत्तत्त्व हैं
पुण्यपुंज-भामण्डल तेजोदीप्त संकर्षक
आचार्य हस्तिमल्ल शुद्ध सम्यक्त्व हैं ||11 ||

शिथिलाचारसंवरक सुयोद्धा सुविचारधन्य
क्रियोद्धारक, युगचेता भिषक्पुरुषाकार हैं
अनगार कौस्तुभ सुरेन्द्रवर्णब्रह्मवर्चस
निरवद्य निर्भय निरन्तरानगार हैं
साक्षर सदाशय सुसम्यक् सुचीर्णशुभ
सूरिशीर्ष सन्धाता संध्यासूत्रधार हैं

श्रद्धाविश्वासाभिषिक्त साधुसम्राट्
आचार्य हस्तिमल्ल दिव्यलोकाधार हैं | ||12 ||

अनासक्त विगतस्पृह अनुद्विग्न विमलचित्त
करुणार्द्रमुक्तहृदय दिव्य गुणागार हैं
परीषहजयी सर्वोपसर्गजेता महाप्राण
धर्मकर्मदयादानवीर मोक्षद्वार हैं
अनिकेत आदर्श आर्ष आप्तसाधकश्रेष्ठ
अमितगति अकिंचन वरिष्ठ अनगार हैं
दानशीलतपभाव चतुरानन हरिहरस्वन
आचार्य हस्तिमल्ल शासन सिणगार हैं ||13 ||

कस्तूरीपरिमल प्रमेयकमलमार्तण्ड
दिङ्नाग-सिद्धसेन-हरिभद्राकार हैं
वैय्याकर टीकाकार अनुवादक कविवरेण्य
भजनानन्दी धर्मतन्त्री हर्षाधिकार हैं
युगमहर्षि युगोद्योत युगबोधक युगाधार
युगविमर्शवागर्थ युगधर्माधार हैं
चिदानन्द गतखेद भागवत ऋतम्भरधी
आचार्य हस्तिमल्ल लोकहृदय हार हैं ||14 ||

करुणामैत्रीमुदितोपेक्षास्वयंबुद्ध परमार्हत
नित्यनूतन निर्माता जिनपथविहारी हैं
आत्मचैत्यसमाधिस्थ स्थितप्रज्ञ समदर्शी
शब्दरूपरसगन्धस्पर्शसुखकारी हैं
भेदविज्ञानी अवधानी अवदानीवर
गुणज्ञ गुणगायक निरन्तरोपकारी हैं
अक्षुण्ण विदेही देही शीलसौरभसंसिक्त
आचार्य हस्तिमल्ल मोक्षाधिकारी हैं ||15 ||

उत्तम क्षमामार्दवार्जव सत्यशौच संयम तप
त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्य धर्मधारी हैं
आत्मबोध सम्पन्न आनन्दसुधाधारा स्नात
भवरुजसंजीवनी वैद्य परम अविकारी हैं
ज्ञानकीर्तिगौरवरूप वाचस्पति अतिसौम्य
सिद्धिदाता महादेव निर्मल अघहारी हैं
देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षस किन्नरवन्द्य
आचार्य हस्तिमल्ल बालब्रह्मचारी हैं ||16 ||

निष्ठाधृतिसत्यप्रवण आशुतोष जनवत्सल
शीलैरावत लोकोत्तम साधक निर्व्याज हैं
कंचनकीर्तिकामिनीविमुक्त आप्तकाम सन्त
हर्षामर्शपरित्यागी सत्यधर्मराज हैं
समाधानसागर प्रजागर निशीथकान्त
जिनशासनाभरण सुमेध रत्नराज हैं
कल्पतरु कामधेनु चिन्तामणि पारसगुण
आचार्य हस्तिमल्ल पौरुषमृगराज हैं ||17 ||

बुद्धाग्रणी विवेकानन्द भद्रबाहु सिद्धवाक्
तीर्थ प्रतिनिधि सुभद्र लोकनाथ हैं
भिषग्वर पीयूषपाणि अभयंकर
सुगन्धिपुष्टिवर्धकत्र्यंबक त्रिनाथ हैं
यशः काय ज्ञानकोष दिव्यौषध अमृतदृष्टि
मुक्तिसृष्टि बीजाक्षर सरित्पावन पाथ हैं
दीनबन्धु दयासागर प्रेरक प्रवीण तत्त्व
आचार्य हस्तिमल्ल सदय अनाथ-नाथ हैं ||18 ||

(क्रमशः)

-ए 1/3, सुखवानी उद्यान, पिंचरी-चिंचवड़ रोड़, पुणे-411033 (महा.)

आचार्य हस्ती जन्म-शती

हस्ती-गुणसौरभ (2)

श्री कस्तूरचन्द बाफना

(33)

दिव्य सितारे

नाम रोशन किया शोभा गुरु का, रत्नसंघ उजियारे थे।
महावीर के शासन में वो, एक दिव्य सितारे थे।।

(34)

गुरुओं पर श्रद्धावान

पूर्व गुरुओं पर पूरी श्रद्धा थी, सबसे बढ़कर निकला हस्ती।
जन्म से लेकर मृत्यु तक, अनुपम काम कर गया हस्ती।।

(35)

अतिशयधारी

असंभव काम भी संभव हो जाता, महान अतिशय के धारी थे।
संतप्त दिलों पर शांति बरसाते, ऐसे शीतल वारि थे।।

(36)

संपदाधारी

एक संपदा छोड़ी इनने, आठ संपदा धारी थी।
जो भी आया शरण आपने, विपदा उनकी निवारी थी।।

(37)

दुर्लभ विभूति

अष्ट सिद्धि नव निधि चरण चूमती,
चौथे आरे की बानगी थे गुरुवर।
जीवन के हर पहलू, को आदर्श बनाया,
इस जग की दुर्लभ, विभूति थे गुरुवर।।

(38)

प्रसिद्धि से दूर

सदा बांटते रहते गुरुवर, लेने का कोई काम नहीं।
सबका हित सब करते गुरुवर, कभी न चाहते नाम कहीं।।

(39)

समाज सेवा

स्नेह देते थे बच्चों को, युवकों को देते थे शक्ति।
बहनों को स्वावलंबी बनाते, वृद्धों में भरते थे भक्ति।।

(40)

प्रदाता

तेरे दरबार की महिमा ही गुरु निराली है।
देते कुछ देखा न गया, पर गया न कोई खाली है।।

(41)

उपकारी

कोई नहीं ऐसा जो धन्य न हुआ तुम्हें पाकर।
मालोमाल हो गया सब कोई, गुरु तुम्हारे पास आकर।।

(42)

बालसंयमी — दस वर्ष में दीक्षा लीवी, वर्ष इकहत्तर संयम पाला।
इकसठ वर्ष तक आचार्य रहे, बन चतुर्विध संघ की गलमाला।।

(43)

महापुरुष — धन्य हुई जननी जन्मभूमि, जब अवतरण किया तुमने।
धन्य हुए पिता कुलगुरु, जब संन्यास लिया तुमने।।

(44)

पंचम आरे के एवंता — लघुवय में भी विचक्षण प्रतिभा के धनी थे।
पंचम आरा के एवंता, संकट विमोचन चिंतामणि थे।।

(45)

कल्याणकारी — लाल हो तो हस्ती जैसा, स्वपर का कल्याण किया।
धन्य है वो नर नारी, जिनने इनसे साक्षात्कार किया।।

(46)

विश्ववंद्य — कद छोटा पद मोटा, तीजे पद के धारी थे।
विश्ववंद्य गुरु हस्ती, इस जग के हितकारी थे।।

(47)

मोहनीसूरत — पुनारा पोरसा गुरुवर बडी सुहानी सूरत थी।
तृप्त न होती ये आँखें, बडी मोहनी सूरत थी।।

(48)

साधक — अजब-गजब थी साधना तेरी, उच्च कोटि का साधक था।
हर पल साधना में बीता, जिनधर्म का आराधक था।।

(49)

प्रभुता — अल्पभोजी, अल्पभाषी, जीवन भर बना रहा लघु।
लघुता में प्रभुता छिपी, भक्तों का था वो प्रभु।।

(50)

गंधहस्ती — नवनीत सा दिल था उनके, साधना में थे वज्र समान।
सागर सम गंभीर थे वो, हस्ती थे गंध हस्ती समान।।

(51)

गुरुकृपा — महान मनोबल के धारी, असंभव कोई न था जिनके।
संभव होते काम सभी, गुरुकृपा होती उनके।।

(52)

यशस्वी — कभी न चाहते नाम अपना, फिर भी यशस्वी कहाए हैं।
कभी न की बड़ी तपस्या, फिर भी तपस्वी कहाए हैं।।

(53)

करुणाशील अत्यंत दयालु थे गुरुवर रगरग में करुणा समाई थी।
जीवन के अंतिम काल में बकरों की जान बचाई थी।।

(54)

तपस्वी तप तेजमय जीवन उनका, न्यारा ही तप करते थे रोज।
सदा प्रफुल्लित चेहरा उनका, कभी न करते थे वे क्रोध।।

(55)

सुरभि दिखावा कुछ नहीं करते, न इच्छा थी नाम की।
प्रफुल्लित होती रहती सुरभि, उनसे अच्छे काम की।।

(56)

मनोनियन्त्रण निंदा विकथा से दूर रहते, स्व पर नियंत्रण भारी था।
मन के चंचल घोडे को बनने न दिया स्वच्छंद विहारी था।।

(57)

समभावी कभी न घबराये गुरुवर चाहे आए परीषह प्रतिकूल।
कभी न इतराये गुरुवर चाहे आए परीषह अनुकूल।।

(58)

पैनीदृष्टि बडी ही पैनी दृष्टि, पात्रता की थी पहचान उन्हें।
सुषुप्त प्राणियों को जगाया, कार्यरत बना दिया उन्हें।।

(59)

हीरा चयन गुण रत्नों के वे जौहरी, योग्य शिष्य चुना हीरा।
अहर्निश रत्नवंश चमकेगा, खोल दिये तुमने तकदीर।।

(60)

- मानमुनि चौथे पद पर प्रतिष्ठित किया मान को दिया तुमने मान।
मान में मान किंचित् नहीं, कैसा अद्भुत है सम्मान।।

(61)

सामायिक बिना किसी भेदभाव के, सबके लिए खुला दरबार।
स्वाध्याय सामायिक स्वाध्याय की, प्रेरणा करते थे हरबार।।

(62)

महादेव मनुज रूप में देव पुरुष थे, देवों के भी वे थे देव।
दुःख का गरल पीनेवाले, इस जग के थे महादेव।।

(63)

मौन साधक कृष्ण पक्ष की हर दशमी को, अखंड मौन व्रत करते थे।
विघ्न हरण मंगल करण, प्रभु पारस का जाप करते थे।।

(क्रमशः)

शोधालेख

भारतीय तंत्र-साधना और जैन धर्म-दर्शन(7)

प्रो. सागरमल जैन

जैन ग्रन्थों में कुण्डलिनी जागरण और षट्चक्र भेदन-

जैन ग्रन्थों में कुण्डलिनी जागरण की साधना-विधि का विशिष्ट उल्लेख नहीं मिलता है। यहाँ तक कि तंत्र-साधना से प्रभावित शुभचन्द्र के ज्ञानार्णव एवं हेमचन्द्र के योगशास्त्र में भी इस संबंध में कोई निर्देश नहीं है। सर्वप्रथम सिंहतिलकसूरि (13 वीं शती) में परमेष्ठिविद्यामंत्रकल्प में इसका निर्देश किया है। वे लिखते हैं कि-

कुण्डलिनीतन्तुद्युतिसंभृतमूर्तीनि सर्वबीजानि।
शान्त्यादि-संपदः स्युरित्येषो गुरुक्रमोऽस्माकम्॥
किं बीजैरिह शक्तिः कुण्डलिनी सर्वदेववर्णजनुः।
रवि-चन्द्रान्तर्ध्याता भुक्त्यै च गुरुसारम्॥
भ्रूमध्य-कण्ठ-हृदये नाभौ कोणत्रयान्तरा ध्यातम्।
परमेष्ठीपंचकमयं मायाबीयं महासिद्ध्यै॥
श्री विबुधचन्द्रगणभृच्छिष्यः श्रीसिंहतिलकसूरिरिमम्।
परमेष्ठियन्त्रकल्पं लिलेख साह्लाद देवतोक्त्या॥
परमेष्ठिविद्यायन्त्रकल्पः।

यह कुण्डलिनी नाड़ी सभी बीजाक्षरों (मंत्र-बीजाक्षरों) की प्रकाशवान मूर्ति ही है। वही शांति आदि सम्पदाओं का आधार है, ऐसी हमारी गुरु परम्परा या मान्यता या आम्नाय है। वस्तुतः इन मंत्र-बीजाक्षरों से भी क्या? जब कुण्डलिनी शक्ति सभी देव (देव-पदों) एवं वर्णाक्षरों (बीजाक्षरों) की जनक है तो फिर इसी की साधना करनी चाहिए। सूर्य नाड़ी एवं चन्द्र नाड़ी (ईडा, पिंगला) में इन बीजाक्षरों का ध्यान करने से भोग और सुषुम्ना में ध्यान करने से मुक्ति की प्राप्ति होती है, ऐसा गुरु के द्वारा बताया गया रहस्य है।

भ्रूमध्य अर्थात् आज्ञाचक्र, कण्ठ अर्थात् विशुद्धि चक्र, हृदय अर्थात् अनाहत चक्र, नाभि अर्थात् मणिपूरचक्र और कोणद्वय अर्थात् स्वाधिष्ठान और मूलाधारचक्र में पंच परमेष्ठि मायाबीज ह्रीं का ध्यान करने पर ही महासिद्धि की

प्राप्ति होती है।

सिंहतिलक सूरि के अतिरिक्त श्वेताम्बर परम्परा में कुण्डलिनी शक्ति एवं ईडा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियों की चर्चा करने वाले दूसरे आचार्य हैं आनन्दघन जी। अपने एक पद में इस संबंध में चर्चा करते हुए वे लिखते हैं-

म्हारो बालूडो संन्यासी, देह देवल मठवासी।
इडा पिंगला मारग तजि जोगी, सुसमना धरि आसी।
ब्रह्मरंध्रमधि आसणपूरी बाबू, अनहद नाद बजासी।।
म्हारो ।।1 ।।

जम नियम आसण जयकारी, प्राणायाम अभ्यासी।
प्रत्याहार धारणा धारी, ध्यान समाधि समासी।।
म्हारो ।।2 ।।

मूल उत्तर गुण मुद्राधारी, परयंकासनचारी।
रेचक पूरक कुंभककारी, मन इन्द्री जयकारी।।
म्हारो ।।3 ।।

थिरता जोग जुगति अनुकारी, आपो आप विचारी।
आतम परमातम अनुसारी, सीझे काज सवारी।।
म्हारो ।।4 ।।

मेरा बाल-अल्पवयस्क (अल्पअभ्यासी) संन्यासी जो देह-शरीर मठ में निवास करता है, वह ईडा, पिंगला नाड़ियों का मार्ग छोड़कर सुषुम्ना नाड़ी के घर आता है। आसन जमाकर सुषुम्ना नाड़ी द्वारा प्राणवायु को ब्रह्मरंध्र में ले जाकर अनहदनाद बजाता हुआ चित्तवृत्ति को उसमें लीन कर देता है।

यम-नियमों को पालन करने वाला, एक आसन से दीर्घकाल तक बैठने में समर्थ, प्राणायाम का अभ्यासी, प्रत्याहार, धारणा एवं ध्यान करने वाला साधक शीघ्र ही समाधि प्राप्त कर लेता है।

वह बाल संन्यासी संयम के मूल और उत्तर गुणों रूपी मुद्रा को धारण कर तथा पर्यंकासन का अभ्यासी रेचक, पूरक और कुंभक प्राणायाम क्रियाओं को करने वाला है। वह मन तथा इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर योग-साधना का अनुगमन करता हुआ जब परमात्म पद का अनुसरण करता है तो उसके सभी कार्य शीघ्र ही सिद्ध हो जाते हैं।

तांत्रिक साधना में कुण्डलिनी शक्ति के जागरण हेतु षटचक्रों की साधना को प्रधानता दी जाती है। सामान्यतया हिन्दू तांत्रिक साधना पद्धति में षट्चक्र की अवधारणा ही प्रमुख रही है। किन्तु कुछ आचार्यों ने सप्तचक्रों और नवचक्रों की भी चर्चा की है। ये षटचक्र हैं- 1. मूलाधार, 2. स्वाधिष्ठान, 3. मणिपूर, 4. अनाहत, 5. विशुद्धि और 6. आज्ञाचक्र। जिन आचार्यों ने सात चक्र माने हैं वे सहस्रार को सातवां चक्र और जिन्होंने नौ चक्र माने हैं उन्होंने उपर्युक्त सात चक्रों के साथ-साथ आज्ञाचक्र और सहस्रार के मध्य तालु में स्थित ललनाचक्र और ब्रह्मरन्ध्र में स्थित गुरुचक्र की भी कल्पना की है। जैन तन्त्रसाधना में लगभग तेरहवीं शती से चक्र साधना के उल्लेख मिलते हैं, किन्तु वे हिन्दू तांत्रिक साधना और हठ योग की परम्परा से ही गृहीत हैं।

जैन परम्परा में हरिभद्र (8वीं शती) के योगदृष्टिसमुच्चय आदि योग संबंधी ग्रंथों में शुभचन्द्र (12 वीं शती) के ज्ञानार्णव में एवं हेमचन्द्र (12 वीं शती) के योगशास्त्र में भी हमें इन चक्रों का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। इस प्रकार षट्चक्र की अवधारणा 12वीं शताब्दी के पश्चात् ही जैन परम्परा में अस्तित्व में आयी। सर्वप्रथम आचार्य विबुधचन्द्र के शिष्य सिंहतिलकसूरि (13 वीं शती) ने अपने 'परमेष्ठिविद्यायंत्रकल्प' नामक ग्रंथ में इन नव चक्रों का उल्लेख किया है। इससे यह सिद्ध भी होता है कि चक्रों की यह अवधारणा उन्होंने हिन्दू तंत्र से ही अवतरित की है। क्योंकि उनके नाम आदि हिन्दू परम्परा के अनुरूप एवं बौद्ध परम्परा से भिन्न हैं। उनके अनुसार ये नवचक्र निम्न हैं - 1. आधार चक्र, 2. स्वाधिष्ठानचक्र, 3. मणिपूरचक्र, 4. अनाहत चक्र, 5. विशुद्धि चक्र, 6. ललनाचक्र, 7. आज्ञा चक्र, 8. ब्रह्मरन्ध्र चक्र (सोमचक्र) और 9. सुषुम्ना चक्र (ब्रह्मबिन्दुचक्र या सहस्रार चक्र)। सिंहतिलकसूरि ने इन नौ चक्रों के शरीर में नौ स्थान भी बताये हैं-उनके अनुसार आधारचक्र गुदा के मध्यभाग में, स्वाधिष्ठानचक्र लिंगमूल के समीप, मणिपूरचक्र नाभि में, अनाहतचक्र हृदय के समीप, विशुद्धिचक्र कण्ठ में, ललनाचक्र तालु में घंटिका (कण्ठकूप) के समीप, आज्ञाचक्र कपाल में दोनों भौहों के बीच, ब्रह्मरन्ध्र चक्र मूर्धा के समीप और सुषुम्नाचक्र मस्तिष्क के ऊर्ध्व भाग में स्थित है। प्रत्येक चक्र के कमलदलों की संख्या इस प्रकार बतायी गई है-मूलाधार चक्र में 4 दल, स्वाधिष्ठान में 6, मणिपूर में 10, अनाहत में 12, विशुद्धि में 16, ललना में 20, आज्ञा में 3, ब्रह्मरन्ध्र में 16 और ब्रह्मबिन्दु या सहस्रार चक्र में 6 दल होते हैं। कुछ आचार्यों के अनुसार

ब्रह्मबिन्दु या सहस्रार चक्र में सहस्र (1000)दल होते हैं। सिंहतिलकसूरि के अनुसार ललना चक्र में वाक् शक्ति (सरस्वती), आज्ञाचक्र में मन और ब्रह्मचक्र में चन्द्र के समान शीतल एवं निर्मल परमात्मशक्ति का निवास है। इनके दलों पर एक विशिष्ट व्यवस्था के अनुसार मातृकाक्षरों का स्थान है। इनमें आधारचक्र रक्त, स्वाधिष्ठान अरुणाभ, मणिपूरचक्र श्वेत, अनाहतचक्र पीत, विशुद्धिचक्र श्वेत, ललना, आज्ञा और ब्रह्मचक्र रक्तवर्ण के और सहस्रार चक्र श्वेत रंग वाला है। इस प्रकार आचार्य तिलकसूरि ने इन चक्रों के नाम, स्थान, कमलदलों की संख्या, रंग, बीजाक्षर आदि की चर्चा तो की है, किन्तु वह हिन्दू तंत्र से प्रभावित है। **(क्रमशः)**

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.)

मैं ही क्यों ?

मीनाक्षी सुराना

आर्थर ॲश, एक सुप्रसिद्ध विम्बल्डन खिलाड़ी, मृत्युशय्या पर अपने जीवन की शेष घड़ियां गिन रहा था। उसे पूरी दुनियाँ से सद्भावना चिट्ठियाँ प्राप्त हो रही थीं। उसके किसी प्रशंसक ने लिखा था-ऐसी महाभयंकर बीमारी के लिए भगवान् ने तुम्हें ही क्यों चुना?

इस पत्र का उत्तर ॲश ने जिन शब्दों में दिया उससे उसकी मन की भावना, जिन्दगी की ओर देखने का उसका नज़रिया, उसके सकारात्मक विचार करने की प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। पत्र में उसने लिखा कि- पूरी दुनिया में करीबन 5 करोड़ बच्चे टेनिस खेलना शुरु करते हैं। उनमें से 50 लाख बच्चे टेनिस सीखते हैं। उनमें से 5 लाख व्यावसायिक खिलाड़ी बनते हैं। उनमें से 50 हजार के लिए सर्किट में प्रवेश करना संभव होता है। उनमें से 5 हजार ग्रान्डस्लेम तक पहुँच पाते हैं। उनमें से 50 विम्बल्डन तक पहुँचते हैं। उनमें से 4 को उपान्त्य स्पर्धा में प्रवेश मिलता है और 2 अन्तिम प्रतिस्पर्धा में खेलते हैं।

इन सारी प्रक्रियाओं में से गुजरते हुए जब मैं जगज्जेता का सम्मान पाकर सारी दुनियाँ की आंखों का नूर बना, तब मेरे जहन में यह खयाल कभी भी नहीं आया कि 'आखिर मैं ही क्यूँ?' तब, अब मैं ऐसा क्यों सोचूँ?

-सुराना की बड़ी पोल, नागौर-341001(राज.)

युवा-स्तम्भ

धर्म क्या है?

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ धारण करना होता है। जो धारण किया जाय या धारण करने योग्य है, वह धर्म है। धारण वही बात की जाती है जो अच्छी, इष्ट और हितकारी हो। इस दृष्टि से जो हमें इष्ट लगे, हितकारी लगे, उसे स्वीकार करना, धारण करना यही धर्म है। जो हमें इष्ट या हितकारी न लगे, वह अधर्म है। इस दृष्टि से विचार करें तो हम देखते हैं कि कोई हमें ताड़ना-पीटना करे, हमें बुरा-भला कहे, गाली गलोच करे, नुकसान पहुँचावे, हमारे साथ झूठ बोले, हमारी चोरी करे, हमसे धोखाधड़ी करे तो हमें अच्छा नहीं लगता है। उसके इन कामों को हम अनिष्ट, अहितकारी और बुरा समझते हैं और ऐसा करने वालों को हम बुरा मानते हैं। यह सबके अनुभव की बात है। अतः जिस कार्य को हम अपने अनुभव ज्ञान से बुरा मानते हैं, अधर्म मानते हैं, वैसा व्यवहार अगर हम दूसरों के साथ करेंगे तो हमारा यह कार्य भी बुरा और अधर्म ही होगा और हम बुरे ही होंगे। अतः ऐसा व्यवहार दूसरों के साथ न करना ही अधर्म से बचना है। तथा कोई व्यक्ति हमारे मन की बात पूरी करे, मधुर वचन बोले, दुःख में साथ दे वह हमें अच्छा लगता है। उसके इन कार्यों को हम अच्छा समझते हैं। जिन कार्यों को हम अच्छा समझते हैं उन्हें हम दूसरों के साथ करें तो हमारा ऐसा करना धर्म का कार्य होगा।

आशय यह है कि हिंसा, झूठ, चोरी आदि व्यवहारों को कोई हमारे साथ करे तो हम बुरा व अकर्तव्य समझते हैं। उन व्यवहारों को दूसरों के साथ करने का त्याग, अकर्तव्य का त्याग करना ही धर्म है और जिन व्यवहारों को हमारे प्रति करने पर हम उन्हें अच्छा समझते हैं, जो हमें प्यारे और इष्ट लगते हैं वैसे व्यवहार दूसरों के साथ करना धर्म है। इस दृष्टि से हिंसा, झूठ, चोरी, निन्दा, धोखा, शोषण, दुष्ट वचन आदि का त्याग करना, दूसरों की सेवा करना, दूसरों के साथ सद्व्यवहार करना कर्तव्य रूप धर्म है। यह कर्तव्य-अकर्तव्य रूप धर्म हुआ।

धर्म की दूसरी परिभाषा है 'वत्थुसहावो धम्मो' अर्थात् वस्तु का स्वभाव धर्म है। जैसे अग्नि का स्वभाव उष्णता अग्नि का धर्म है, जल का स्वभाव शीतलता

जल का धर्म है। स्वभाव के विपरीत अवस्था विभाव कही जाती है। विभाव की उत्पत्ति, पर या विजातीय द्रव्य के संयोग व संग से होती है। जैसे जल का स्वभाव शीतलता का है, जब जल के साथ विजातीय द्रव्य अग्नि का संयोग होता है तो अग्नि के संग से जल उष्ण हो जाता है। यह जल की उष्णता विभाव अवस्था है। विभाव अवस्था का नाम ही अधर्म है, विकार है, पाप है।

स्वभाव को प्राप्त करने के लिए विभाव का त्याग करना होता है। जैसे अग्नि के संयोग का, संग का त्याग होते ही जल स्वतः शीतल होने लगता है। इसी प्रकार चेतना का स्वभाव शान्त, स्वाधीन (मुक्त) एवं प्रसन्न रहने का है। परन्तु जब चेतना का शरीर, संसार की भोग्य सामग्री आदि अचेतन एवं विजातीय पदार्थों के साथ संयोग होता है तो उनके प्रति आकर्षण पैदा होता है। आकर्षण से बंध होता है। आकर्षण उसी के प्रति होता है जिससे सुख भोगना है। अतः आकर्षण या बंध का कारण विषय-सुख का भोग है। जो संसार के पदार्थों से सुख का भोग नहीं करना चाहता है, वह संसार में रहते हुए भी संसार के पदार्थों से असंग हो जाता है, परे हो जाता है। उस पर संसार के पदार्थों, अवस्थाओं एवं स्थितियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् विभाव का अभाव हो जाता है। अपने से भिन्न, नश्वर पदार्थों से प्रभावित होना ही विभाव है एवं उनसे बंधना है। अतः जो नश्वर पदार्थों से सुख नहीं भोगना चाहता, उसमें राग-द्वेष उत्पन्न नहीं होता। राग-द्वेष नहीं होने से वह कर्त्ता-भोक्ता नहीं होता, मात्र ज्ञाताद्रष्टा रहता है।

संसार या लोक के समस्त पदार्थों के प्रति राग-द्वेष नहीं होने से वह कर्त्ता-भोक्ता नहीं होता, मात्र ज्ञाता-द्रष्टा रहता है। संसार का लोक के समस्त पदार्थों के प्रति राग-द्वेष रहित होना, उदासीन असंग रहना ही लोक से परे होना है, लोकातीत होना है। इसी प्रकार शरीर या देह से सुख न भोगना देह से परे होना है, देहातीत होना है। जिसे देह से सुख नहीं भोगना है उसके लिये देह का संग, उसकी आवश्यकता की पूर्ति, उसकी रक्षा करना वैसा ही है जैसे राज्य या बैंक के कोष के धन को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना, अथवा संभाल व रक्षा करना। जिस प्रकार धन रक्षक उस सिपाही को अपने इस दायित्व से मुक्ति पाने में प्रसन्नता होती है उसी प्रकार देहातीत व्यक्ति को देह की संभाल व रक्षा के भार से मुक्ति पाने में प्रसन्नता होती है। प्रकृति का यह नियम है कि जो व्यक्ति शरीर के जिस

अंग का उपयोग करना बंद कर देता है वह अंग निर्बल, शक्तिहीन हो निष्क्रिय हो जाता है अर्थात् जो वस्तु जिसके लिए अनुपयोगी होती है वह उसके लिए व्यर्थ हो जाती है। व्यर्थ वस्तु को संभालना, रक्षा करना भार रूप ही होता है। व्यर्थ भार कोई ढोना नहीं चाहता। इसलिये जिसे देह से सुख नहीं भोगना है उसके लिए देह व्यर्थ व भार रूप होती है। अतः भविष्य में देह की प्राप्ति ही नहीं होती। देह की प्राप्ति या जन्म न होना भव से छुटकारा पाना है, भवातीत होना है। भवातीत होना अर्थात् संसार, शरीर, जन्म-मरण से मुक्ति पाना ही सच्ची मुक्ति है। भवातीत चेतना स्वभाव में स्थित हो जाती है उसमें विभाव लेशमात्र भी नहीं रहता। अतः स्वाधीन हो वह स्वभाव रूप धर्म को प्राप्त हो जाती है।

आशय यह है कि जिसने अपने से भिन्न, शरीर, संसार आदि पदार्थों से सुख भोगने का त्याग कर दिया वह लोकातीत और देहातीत होकर भवातीत हो जाता है। भवातीत होना ही मुक्ति है अर्थात् विषय सुख का त्याग ही मुक्ति है। विषय सुख के त्याग से हिंसा, झूठ, चोरी आदि अकर्तव्य स्वतः छूट जाते हैं और सेवा रूप कर्तव्य स्वतःहोने लगता है। वह धर्म का व्यावहारिक रूप है।

प्रश्न उपस्थित होता है कि विषय सुख क्यों छोड़ा जाय? तो कहना होगा कि विषय सुख वस्तुतः सुख है ही नहीं, सुखाभास है, दुःख रूप ही है। कारण कि विषय सुख (1) काल्पनिक है वास्तविक नहीं है (2) क्षणिक है, नश्वर है (3) पर के आधीन होने से पराधीन बनाता है। (4) विषय सुख प्रवृत्तिपरक होने से इसकी प्राप्ति व भोग में श्रम की अपेक्षा होती है। श्रम से शक्ति का ह्रास होता है, अतः विषय सुख शक्ति का ह्रास करने वाला है। (5) विषय सुख का अन्त नीरसता में होता है अर्थात् इस सुख से उकलाहट होती है जो नवीन सुख भोग की कामना को जन्म देती है, इत्यादि विषय सुख में असंख्य कमियाँ व दोष हैं। यह कहा जा सकता है कि संसार में जितने भी दुःख हैं वे सब विषय-सुख की ही देन हैं। अतः इस सुख के त्याग में ही सच्ची शान्ति, स्वाधीनता, प्रसन्नता आदि दिव्य गुणों की उपलब्धि सम्भव है। इस सुख का त्याग ही विभाव का त्याग है, धर्म है।

ऊपर कह आए हैं कि हिंसा, झूठ, चोरी आदि दुष्प्रकृतियों एवं विषय सुख का त्याग ही धर्म है। त्याग करने में संसार की किसी वस्तु की यहाँ तक कि शरीर की भी आवश्यकता नहीं है और न श्रम की आवश्यकता है। अतः त्याग करने में मानव मात्र स्वाधीन एवं समर्थ है। त्याग रूप धर्म किसी भी काल में किया जा

सकता है। अतः उसके लिए विषयभोग के समान किसी समय-विशेष की आवश्यकता नहीं होती अतः धर्म सार्वकालिक है, सनातन है। त्याग रूप धर्म भारतीय, यूरोपियन, रशियन, अमेरिकन किसी देश का पुरुष कहीं पर भी कर सकता है अतः धर्म सार्वदेशिक है। त्याग रूप धर्म बालक, वृद्ध, युवा, रोगी, नीरोग, सबल, दुर्बल, शिक्षित, अशिक्षित कोई भी जन कर सकता है अतः धर्म सार्वजनीन है।

स्वभाव में स्थित होना स्व में स्थित होना है, स्वस्थ होना है। अतः स्वस्थता धर्म है। शरीर का स्वस्थ रहना शरीर का धर्म है। शरीर में जब कोई विष आदि विजातीय द्रव्य प्रवेश कर जाता है तो शरीर अस्वस्थ हो जाता है। अफीम आदि विषैले पदार्थ का वमन करने से शरीर पुनः स्वस्थ हो जाता है। इसी प्रकार कषाय व विषय भोग से चेतना विषैली एवं विकारी हो जाती है, जिसके वमन अर्थात् त्याग करने से चेतना स्वस्थ होती है। स्वस्थ होना ही स्वभाव को प्राप्त होना है। स्वभाव का प्राप्त होना ही धर्म है। आशय यह है कि धर्म से स्वस्थता, निर्विकारता की प्राप्ति होती है। धर्म है स्वभाव में आना, पर के सम्बन्ध से छुटकारा पाना। पर के सम्बन्ध से छुटकारा मिलने से पराधीनता मिटती है और स्वाधीनता आती है। स्वाधीनता का ही नाम मुक्ति है। शरीर और संसार रूपी पर पदार्थों से छुटकारा पा जाना ही सच्ची स्वाधीनता है। शरीर और संसार से छुटकारा तभी मिलता है जब हम उनसे सुख न चाहें। जो सुख चाहता है उसे शरीर और संसार का दास बनना पड़ता है। जहाँ दासता है वहाँ स्वाधीनता नहीं है, वहाँ मुक्ति नहीं है। इसलिये मुक्ति चाहने वाले को शरीर और संसार की दासता छोड़नी होगी। वह तभी सम्भव है जब शरीर और संसार से सुख न चाहें। इसलिये भगवान् महावीर ने विषय सुख के त्याग में ही मुक्ति बताई है। मुक्ति का पाना ही धर्म है, स्वभाव में स्थित होना ही धर्म है।

स्वभाव या धर्म को प्राप्त करने के लिए विभाव या दोष का त्याग करना होता है। इसीलिए आगम में- "त्याग में ही धर्म है यह कहा है।" धर्म के लिए केवल दोषों (सावद्य योगों) का त्याग करना होता है। त्याग करने में पर की, देश-काल, वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति की आवश्यकता नहीं होती है। अतः मानवमात्र सब देश, सब काल, सब परिस्थिति में त्याग रूप धर्म करने में समर्थ एवं स्वाधीन है।

-82/127, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

Tattva bodha

TRANSGRESSIONS OF THE TWELVE *VRATAS* (VOWS)

Dr. Priyadarsna Jain

B.THREE *GUNAVRATAS* OR MULTIPLICATIVE VOWS

(vi) *Disivrata or Vow of Limiting theMovements*

Transgressions of the sixth *Digvrta* or *Diśāvrata*

TEXT	TRANSLATION
(I) *Uddhadisippamāṇāikkame*-	Traveling upwards beyond limit
(ii) *Ahodisippamāṇāikkame*-	Traveling downwards beyond limit
(iii) *Tiriyadisippamāṇāikkame*-	Traveling in transverse directions beyond limit
(iv) *Khittavuddhī*-	Enhancing the limits
(v) *Saiantaraddhā*-	Forgetting the limits and traveling

Meaning

Digvrata or ***Disivrata*** or limiting one's movements and directions inspires one to regulate his movements in different directions. The five transgressions of this vow are limiting one's movements in the upper, lower and transverse directions, extending the limitations and being forgetful of the limitations; if any or all of the transgressions have been practised then the aspirant expiates for the same through this ***sūtra***.

Explanation

R. Williams remarks that the fundamental idea of the ***vrata*** is to reduce quantitatively a man's sinful actions by

circumscribing the area in which they can be committed. The self-imposed restrictions through this *vrata* save the aspirant from unwanted travel and enable him to save time and seek spiritual perfection. This vow supplements the previous vows thus enabling the aspirant not to be ambitious about globetrotting and thus conquer one's greed for acquisitions, creation of business empires etc. By doing so one indirectly works towards environmental protection, saves the earth from further environmental degradation and contributes his best to sustainable development. By limiting one's movement in all the directions one learns the art of discipline and self-restraint and saves himself from sin and karmic influx. T.K. Tukol remarks that he who thus limits his activities to the prescribed limits is sure of observing the vow of non-injury fully as regards the area lying beyond the limits fixed by him and also he would be able to exercise self-restraint in all matters in relation to the area beyond the limits.

While fixing the directions, many things are taken into account, i.e. nature of business, occupation etc. The vow may be taken for a fixed period or for life long. As this is a multiplicative vow it enhances the benefits of the primary vows like non-violence, non-possession, etc.

(vii) *Upabhoga-Paribhoga Parimaṇa Vrata-Limiting articles of daily use*

Transgressions of the seventh *Upabhoga-Paribhoga Parimaṇavrata*

TEXT	TRANSLATION
(i) *Sacittahāre*-	Consuming eatables with life
(ii) *Sacittapadibaddhahāre* -	Consuming eatables partly with life
(iii) *Appauliosahibhakkhaṇaya*-	Consuming uncooked food

(iv) ***Duppauliosahibhakkhaṇaya***-	Consuming food not cooked properly
(v) ***Tucchosahibhakkaṇaya***-	Consuming food in which the waste part is more than the edible part.

LIMITING TWENTY-SIX THINGS OF DAILY USE

1.	***Ullaṇiyāvihi***-	Towels and napkins
2.	***Dantaṇavihi***-	Tooth-pastes and powders
3.	***Phalavihi***-	Amla, Ritha & Soaps
4.	***Abbhaṅgaṇavihi***-	Cosmetic oils etc
5.	***Uvattaṇavihi***-	Massages
6.	***Majjaṇavihi***-	Bathing
7.	***Vatthavihi***-	Clothes
8.	***Vīlevaṇavihi***-	Creams and lotions
9.	***Puphavihi***-	Perfumes and flowers
10.	***Ābharaṇavihi***-	Ornaments
11.	***Dhūvavihi***-	Incense
12.	***Pejjavihi***-	Juices
13.	***Bhakkhaṇavihi***-	Sweets
14.	***Odaṇavihi***-	Grains
15.	***Sūpavihi***-	Pulses
16.	***Vīgayavihi***-	Milk,curds,ghee etc
17.	***Sāgavihi***-	Vegetables
18.	***Māhuravihi***-	Fruits and dry fruits
19.	***Jīmaṇavihi***-	Number of food items per meal
20.	***Paniyavihi***-	Number of taps,wellsetc
21.	***Mukhavasavihi***-	Betel-nutsetc
22.	***Vāhaṇavihi***-	Vehicles
23.	***Uvāhaṇavihi***-	Foot-wear
24.	***Sayaṇavihi***-	Furniture
25.	***Sacittavihi***-	Eatables with life
26.	***Davvavihi***-	Total number of food items per day

FIFTEEN KINDS OF FORBIDDEN TRADES

1. ***Ingālakamme***- Livelihood from charcoal
2. ***Vaṇakamme***- Livelihood from destroying plants
3. ***Sādīkamme*** - Livelihood from carts, vehicles, etc.
4. ***Bhādīkamme***- Livelihood from transport, etc.
5. ***Phodīkamme***- Livelihood from hewing, digging, mining, etc.
6. ***Dantavāṇijje***- Trade in animal products like teeth of elephant.
7. ***Lakkhavāṇijje*** - Trade in wax and inflammables
8. ***Rasavāṇijje***- Trade in alcohol and forbidden food stuffs
9. ***Kesavāṇijje***- Trade in men and animals
10. ***Visavāṇijje***- Trade in destructive things like drugs, weapons, etc.
11. ***Jantapīlaṇakamme***-Work involving milling
12. ***Nillachaṇakamme***- Work involving mutilation
13. ***Davaggidāvaṇaya***- Work involving the use of fire
14. ***Saradahatalāyasosanayā***- Work involving water
15. ***Asaījaṇaposaṇaya***- Work involving breeding and rearing.

Meaning

Through this vow the laity limits the use of articles of daily use which are of twenty six types as mentioned above. ***Upabhoga*** means to use once, paribhoga means to use the same thing many times. Of the above 26 items some belong to the first category and some belong to the second. Through this vow one limits the consumer goods as well as the trades through which he acquires those consumer goods. The above are the five transgressions of this vow and if the lay aspirant has violated the vow he expiates for the same through this ***sūtra***, besides the above fifteen forbidden trades too are to be given by him.

Explanation

As technology has advanced the productivity of consumer

goods and it has increased by leaps and bounds, but the resources remain limited and they may exhaust quickly down the centuries. This is not real development in the long term. Excessive use of the resources is not the solution to the environmental crisis faced by man today. The consumer attitude and the use and throw attitude of man is at the root of the crisis, this crisis in the individual has led to all kinds of pollutions, exploitation of natural and human resources, global warming, extinction of species etc. Thus ***Jainism*** has advocated to practise self-restraint at every step and compulsorily not to take to the above forbidden trades, which causes excessive damage to the environment.

Hence those interested in true development, in checking environmental degradation, global warming and other related issues need to discover the age-old truth propounded by the great spiritual scientists (***Tīrthaṅkaras***) and consider following the art of right living as propounded by them. All individuals, societies, and nations need to check their appetite for increasing comforts and luxuries, instead they should think in terms of developing a self-sustaining system with deep rooted culture of concern for all elements of the environment, be it living or non-living. "Environmental awareness can be inculcated only after a thorough scientific and spiritual analysis of the symbiosis between man and nature. The system, statistics and documentation of the West should be supplemented with deep-rooted spirituality of the East", observes Geetha Ramanujam.

Thus through this vow and that of fifteen forbidden trades ***Jainism*** has once again propounded its reverence for all life. Violations of the above vows causes influx of ***karma***, whether one accepts or not, the law of ***karma*** operates universally and reveals that man is responsible for all his actions and the consequences there of.

(Continue..)

-Lecturer, Dept. of Jainology, University of Madras, Chennai

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (6)

प्रश्न 7. दशवैकालिक अध्ययनों में वर्णित विषय-वस्तु के आधार पर अध्ययनों के क्रम का क्या रहस्य है?

उत्तर : आत्मा का पूर्ण विकास, आत्मा पर आए हुए कर्म-रूप आवरणों से सर्वथा मुक्ति, राग-द्वेष, मोह, कषाय आदि वैभाविक भावों से रहित होकर आत्मा के निज गुणों या स्व-स्वभाव में सर्वथा रमण ही मोक्ष है। यही मुमुक्षु आत्माओं का अंतिम साध्य है। मोक्ष-प्राप्ति का साधन धर्म है, जो आत्मा को अपने स्वभाव, निज-गुण अथवा सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र में धारण करके रखता है। स्वयं के पुरुषार्थ से स्वयं में रही हुई मलिनता या अशुद्धि को दूर करने की प्रक्रिया को धर्म कहा है।

पहला अध्ययन कहता है, साधक कर्त्तव्यशील बनो! कर्त्तव्य का पालन करना धर्म है। अकर्त्तव्य ने इस जीव को बहुत भटकाया है, बहुत दुःखी बनाया है, क्योंकि इससे दूसरों के अधिकारों का हनन होता है। जबकि कर्त्तव्य-पालन में अपना हित तो है ही, साथ ही उसके द्वारा किसी का अहित भी नहीं होता। कहा भी है- जहाँ भगवान् का धर्म है, वहाँ अशान्ति नहीं है और जहाँ अशान्ति है, वहाँ धर्म नहीं है। अतः प्रथम गाथा में धर्म का स्वरूप प्रतिपादित है। धर्म में रमणता सभी दिव्य और उदात्त वृत्तियों को आकर्षित करती है तथा पाशविक वृत्तियाँ दूर करके अनुकूलता की सृष्टि करती है। इस प्रकार का धर्ममय जीवन जीने के लिए जीवन-यापन की सामग्री का अर्जन पावनता से होना चाहिए, किसी को पीड़ा देकर नहीं। अतः शेष चार गाथाओं में साधक की निर्वद्य माधुकरी भिक्षा-वृत्ति का विवेचन किया गया है। क्योंकि धर्म की आराधना में शरीर प्रथम साधन है। कहा भी है-"**शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्**" और शरीर का

निर्वाह आहार से होता है। आहार जितना शुद्ध और निर्दोष होगा, उतना ही संयम में निखार आयेगा। क्योंकि लोकोक्ति है-"जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन। जैसा पीवे पाणी, वैसी बोले वाणी।" यदि आहार आधाकर्मी आदि दोषों से दूषित है तो मन विकार-ग्रस्त हुए बिना नहीं रहता। ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र में कुण्डरीक का उदाहरण स्पष्ट प्रेरणा दे रहा है कि किस प्रकार औषध के निमित्त ग्रहण किया हुआ सदोष आहार भी वर्षों की साधना को नीलाम कर दुर्गति में जाने के लिए मजबूर कर देता है। इससे बचने के लिए शास्त्रकारों ने माधुकरी वृत्ति का उपदेश दिया। इसके माध्यम से साधक किसी को भी पीड़ा न देकर अहिंसा की, थोड़े से आहार में निर्वाह करके संयम की तथा न मिलने या कम मिलने पर यथा-लाभ, संतोष या इच्छा- निरोध तप की आराधना कर सकता है। लेकिन जिनशासन के इस कठोर अनुशासन को कोई शूर-वीर साधक ही पाल सकता है, निर्वद्य वृत्ति से आवश्यकता की पूर्ति धैर्यवान साधक ही कर सकता है। अतः **दूसरा अध्ययन कहता है-"साधक! धैर्यशील बनो!"**

जिसमें धैर्य होता है- उसके तप होता है। जिसके तप होता है, उसको सुगति सुलभ है। जो धृतिहीन हैं, निश्चय ही उनके लिए तप दुर्लभ है, क्योंकि धैर्यहीन साधकों के मन पर विकार शीघ्र धावा बोल देते हैं। काम-विकारों के वशीभूत हुआ व्यक्ति संकल्प-विकल्पों के थपेड़ों से आहत एवं पद-पद पर विषाद पाता है। फिर उसके लिए श्रामण्य का पालन बहुत मुश्किल हो जाता है। वह सुख-सुविधावादी, सुकुमार, कायर एवं शिथिल होकर अनाचार की ओर प्रवृत्त होने लगता है। अतः **तीसरा अध्ययन कहता है-"साधक! आचारशील बनो।"**

कामना-उत्पत्ति का मुख्य कारण अपने को शरीर मानना है। यह मोह है। मोह के कारण यह वस्तु मेरी है, ऐसा लगता है। वस्तु की कामना से प्रवृत्ति होती है। प्रवृत्ति से आरम्भ होता है। इसलिए तीसरे अध्ययन में बावन अनाचारों के माध्यम से हिंसा का विवेचन किया गया है।

अनाचार सेवन में षट्जीव निकाय की विराधना रही हुई है। अतः **चौथा अध्ययन कहता है– "साधक संवेदनशील बनो।"**

संवेदना का विकास ही सम्यक् दर्शन है। जब तक सभी जीवों से अपनापन नहीं होगा, उसकी पीड़ा अपनी पीड़ा नहीं लगेगी, तब तक साधक उनकी हिंसा से विरत नहीं हो सकता। वस्तुतः षट्जीवनिकाय के आरम्भ के त्याग से ही पाँच महाव्रत और छठा रात्रि-भोजन विरमण व्रत निष्पन्न होते हैं। अतः इस अध्ययन में षट् जीवनिकाय का सामान्य वर्णन है। फिर उनमें दंड-परित्याग की प्रतिज्ञा का पाठ है, और इसके बाद छह प्रकार के व्रतों की प्रतिज्ञा के पाठ हैं। व्रतों की अनुपालना वही कर सकता है जो भिक्षाजीवी है, अतः **पाँचवाँ अध्ययन कहता है– "साधक! भिक्षाशील बनो"।**

साधक मात्र आजीविका का प्यासा नहीं होता, वह धर्ममय जीवन जीना चाहता है। उसकी दृष्टि में जीवन से भी अधिक महत्त्व धर्म का होता है। इसलिए चतुर्थ अध्ययन में साधक के मूल गुणों का वर्णन करने के पश्चात् पंचम अध्ययन में उन्हीं मूल गुणों को परिपुष्ट एवं रक्षा करने वाले उत्तर-गुणों में से पिण्डैषणा का वर्णन किया गया है। जठराग्नि के संताप की बाधा को शांत करने के लिए औषधि के समान आहार को ग्रहण किये बिना शरीर की स्थिति नहीं रह सकती। इसलिए संयमी को कब, किससे, किस विधि से और किस प्रकार का आहार ग्रहण करना चाहिए,यही वर्णन सभी पहलुओं से इस अध्ययन में किया गया है। किन्तु इस विधि का आचरण शुद्ध संयमवान मुनि ही करते हैं। अतः **छठा अध्ययन कहता है– "साधक! संयमशील बनो।"**

आहार- नियंत्रण के बिना संयम-सदाचार का यथावत् पालन नहीं हो सकता। अतः आहार-विधि के बाद छठे अध्ययन में 18 स्थानों में आश्रित संयमी-साधकों की आचार-विधि की उत्सर्ग एवं अपवाद दोनों अवस्थाओं का निरूपण किया गया है। इस प्रकार आचार धर्म

के विधि-निषेध रूप में सहेतुक प्रतिपादन के साथ इस अध्ययन में धर्म-कथा का वर्णन किया गया है। धर्म-कथा निर्वद्य-भाषा के द्वारा होती है। अतः सातवाँ अध्ययन कहता है- **"साधक! विवेकशील बनो।"** ।

विवेकपूर्वक वचनों की प्रवृत्ति करने वाला ही अभाषक बन सकता है। कहा भी है जो सही करता है, वह किये हुए गलत के प्रभाव को समाप्त कर, नहीं करने को उपलब्ध होता है। पाँच महाव्रतों में दूसरा महाव्रत भाषा से संबंधित है, तो अष्ट प्रवचनमाता में भी भाषा समिति एवं वचनगुप्ति भाषा से ही सम्बन्धित है। अविवेक पूर्वक बोली गई भाषा कर्म-बंध का हेतु है। अतः इस अध्ययन में वचन-विवेक पर बल दिया गया है। केवल वाणी ही नहीं, मन और काया की एकाग्रता भी आचार के पालन में अत्यन्त अपेक्षित है। अतः **आठवां अध्ययन कहता है- "साधक! एकाग्रशील बनो"** ।

आचार की सरिता में अवगाहन करते हुए इन्द्रियों एवं मन को दुष्प्रणिधान से रोककर सुप्रणिहित करना अर्थात् एकाग्र करना या निहित करना आचार प्रणिधि है। अर्थात् शास्त्र में कही हुई मर्यादा का नाम आचार है, उसमें सावधान रहना, आचार प्रणिधि है। किन्तु आचार रूपी धन को विनयवान साधु ही सुरक्षित रख सकता है। अतः **नवम अध्ययन कहता है- "साधक! विनयशील बनो"** ।

विनय, धर्म का मूल है, विनय के आधार पर ही श्रमणाचार का विशाल भव्य प्रासाद टिका रह सकता है। विनयवान शिष्य को ही गुरु प्रसन्नतापूर्वक अपनी श्रुत सम्पदा एवं आचार सम्पदा प्रदान करते हैं। अहम् का विसर्जन ही अर्हं का सर्जन है। इस प्रकार गुरु एवं रत्नाधिक मुनि भगवंतों का सम्मान करते हुए, उनकी आज्ञाओं का पालन करते हुए अनुशासित जीवन जीने वाला ही आदर्श भिक्षु होता है। अतः **दसवाँ अध्ययन कहता है- "साधक !आदर्शशील बनो"** ।

आदर्श भिक्षु ही सच्चा भिक्षु है- इस विषय में भारत के पूर्व राष्ट्रपति

डॉ. अब्दुल कलाम ने ठीक ही कहा है- ''हम सितारों तक नहीं पहुँच सकें, इसमें कोई शर्म की बात नहीं। किन्तु हमारे जीवन में कोई सितारा नहीं (कोई आदर्श नहीं), इससे बढ़कर कोई शर्म की बात नहीं''। आदर्शहीन जीवन, व्यर्थ है। गुणों से जो साधु है उसे ही साधु कहा जा सकता है। नाम, रूप, वेश या बाह्य क्रियाओं से कोई सद्भिक्षु नहीं होता। आदर्श भिक्षु के जीवन को निखारने के लिए चिंतनीय दो चूलिकाओं का प्ररूपण भी अंत में किया गया है। जो संयम में रति उत्पन्न कर श्रमण-निर्ग्रंथचर्या का बाह्य और आन्तरिक रूप से एकान्त आत्महितकारी विवेक-युक्त पालन करवाने में समर्थ है। इनका विवचेन पूर्व प्रश्न में किया जा चुका है, अतः पुनः विवेचन अपेक्षित नहीं है।

(क्रमशः)

आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी

आचार्य श्री हस्ती पर अज्ञात संस्मरण एवं घटनाएँ आमन्त्रित

अध्यात्मयोगी, युगमनीषी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज सा. पर यद्यपि 'नमोपुरिसवरगंधहत्थीणं', 'आचार्य हस्ती : व्यक्त्वि एवं कृतित्व' तथा 'श्रद्धाञ्जलि विशेषाङ्क' प्रकाशित हुए हैं, तथापि उस तपःपूत योगी के व्यक्तित्व की ऐसी अनेक घटनाएँ एवं संस्मरण शेष हैं जो कतिपय श्रद्धालुओं तक सीमित हैं एवं अभी तक प्रकाश में नहीं आ सके हैं। हमारी योजना है कि जन्म- शताब्दी के अवसर पर ऐसे अज्ञात संस्मरण एवं प्रभावी घटना-प्रसंग भी प्रकाश में आएँ। श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन है कि वे स्वयं इन्हें लिखकर अथवा लिखवाकर भेज सकें तो अत्युत्तम है, यदि वे स्वयं न लिख सकें तो कच्ची-पक्की साधारण भाषा में प्रेरक प्रसंग भेज दें, उनकी मूल भावना को सुरक्षित रखते हुए ऐसे घटना-प्रसंगों को सन्दर्भ और नाम सहित पुनः लिखवाकर अच्छा स्वरूप दे दिया जाएगा।

-डॉ. धर्मचन्द जैन, सम्पादक

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 55)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(वैक्रिय समुद्घात)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- वैक्रिय समुद्घात किसे कहते हैं?

समाधान- विविध प्रकार के वैक्रिय रूपों का निर्माण करने हेतु वैक्रिय वर्गणा के पुद्गलों को ग्रहण करने के लिये आत्मप्रदेशों का एक दिशा अथवा विदिशा में संख्यात योजन तक का दण्ड निकालना वैक्रिय समुद्घात कहलाता है।

जिज्ञासा- वैक्रिय समुद्घात में निकाले जाने वाले दण्ड की चौड़ाई कितनी होती है?

समाधान- वैक्रिय समुद्घात में निकाले जाने वाले दण्ड की चौड़ाई एवं मोटाई अपने-अपने शरीर प्रमाण होती है।

जिज्ञासा- वैक्रिय समुद्घात कब होता है?

समाधान- जब कोई वैक्रिय शक्तिधारी जीव वैक्रिय-लब्धि का प्रयोग करता है, तब उसके वैक्रिय समुद्घात होता है।

जिज्ञासा- वैक्रिय समुद्घात किन-किन जीवों में होता है ?

समाधान- वैक्रिय लब्धि का प्रयोग करने वाले जीव जैसे- बादर वायुकाय के पर्याप्त जीव, संख्यात वर्ष की आयुवाले सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्त जीव, संख्यात वर्ष की आयु वाले गर्भज मनुष्य के पर्याप्त जीव तथा नारकी-देवता के पर्याप्त जीवों में वैक्रिय समुद्घात होता है।

किन्तु कोई भी जीव अपर्याप्त अवस्था में वैक्रिय समुद्घात नहीं कर पाता है। संख्यात वर्ष वाले गर्भज मनुष्य में इतना अवश्य समझना चाहिए कि प्रमादी अवस्था तक अर्थात् पहले से छठे गुणस्थान (तीसरा गुणस्थान छोड़कर) वाले ही वैक्रिय समुद्घात कर सकते हैं, अप्रमादी नहीं कर सकते।

जिज्ञासा- संख्यात वर्ष की आयु से क्या तात्पर्य है?

समाधान- यद्यपि संख्यात की गिनती बहुत लम्बी चौड़ी होती है, किन्तु

यहाँ पर संख्यात वर्ष से तात्पर्य एक करोड़ पूर्व तक की आयु से लेना चाहिए। क्योंकि एक करोड़ पूर्व से यदि एक अन्तर्मुहूर्त भी आयु जिस मनुष्य व तिर्यञ्चों की अधिक हो जाती है तो वे असंख्यात वर्षायुष्क कहलाते हैं।

दूसरे शब्दों में वे कर्मभूमिज न कहलाकर युगलिक कहलाते हैं। युगलिकों में वैक्रिय लब्धि होती ही नहीं है, इसलिये वे वैक्रिय समुद्घात कर ही नहीं सकते। इस कारण से वैक्रिय समुद्घात करने वाले जीवों में संख्यात वर्ष की आयु वाले तिर्यञ्च व मनुष्य के पर्याप्त लिए गए हैं।

जिज्ञासा– वैक्रिय समुद्घात के लिये, संख्यात वर्ष की आयु होने का नियम क्या नारकी व देवता में भी लागू होता है?

समाधान– नहीं, वैक्रिय समुद्घात के लिये संख्यात वर्ष की आयु होने का नियम नारकी, देवता में लागू नहीं होता, क्योंकि नारकी देवता में संख्यात वर्ष वाले तथा असंख्यात वर्ष वाले, दोनों ही तरह के जीवों में वैक्रिय समुद्घात पाया जाता है।

जिज्ञासा– वैक्रिय समुद्घात और वैक्रिय मिश्रकाय योग में क्या सम्बन्ध है?

समाधान– जब भी कोई जीव वैक्रिय समुद्घात करेगा, तब उसमें वैक्रिय मिश्र काययोग भी साथ में रहेगा। किन्तु पूरे वैक्रिय मिश्र के काल में वैक्रिय समुद्घात होना आवश्यक नहीं है। दूसरे शब्दों में वैक्रिय समुद्घात में वैक्रिय मिश्र काय योग की नियमा है, किन्तु वैक्रिय मिश्र काय योग में वैक्रिय समुद्घात की भजना है।

जिज्ञासा– वैक्रिय मिश्र काय योग में वैक्रिय समुद्घात की भजना किस अपेक्षा से समझना चाहिए?

समाधान– यद्यपि वैक्रिय मिश्र काय योग व वैक्रिय समुद्घात इन दोनों का काल अन्तर्मुहूर्त ही है, तथापि वैक्रिय मिश्र काययोग का अन्तमुहूर्त बड़ा होता है, जबकि वैक्रिय समुद्घात का अन्तर्मुहूर्त अपेक्षाकृत छोटा होता है। अर्थात् वैक्रिय मिश्र काययोग में प्रारंभिक अन्तर्मुहूर्त तक ही वैक्रिय समुद्घात रहता है, बाद के अन्तर्मुहूर्त में वैक्रिय समुद्घात नहीं रहकर मात्र वैक्रिय मिश्र काय योग ही रहता है, इस कारण से वैक्रिय मिश्रकाय योग में वैक्रिय समुद्घात की भजना कही गई है।

जिज्ञासा- वैक्रिय समुद्घात की शाश्वतता किन-किन जीवों में घटित हो सकती है?

समाधान- जिन-जिन जीवों में वैक्रिय मिश्र काय योग पर्याप्त अवस्था में हमेशा पाया जाता है, उन जीवों में वैक्रिय समुद्घात की शाश्वतता घटित होगी। अर्थात् बादर वायुकायिक जीवों में, सन्नी तिर्यञ्च व मनुष्यों में, नारकी व देवों में पर्याप्त अवस्था में अनेक जीवों की अपेक्षा से वैक्रिय लब्धि का प्रयोग होता ही रहता है, अतः उनमें वैक्रिय समुद्घात करने वाले जीव भी हमेशा मिल ही जाते हैं। नवग्रैवेयक तथा पाँच अनुत्तर विमान के देवों में पर्याप्त अवस्था में वैक्रिय मिश्र काय योग नहीं होने के कारण वैक्रिय समुद्घात नहीं मिलता है।

जिज्ञासा- एक जीव एक भव में कितनी बार वैक्रिय समुद्घात कर सकता है?

समाधान- वैक्रिय समुद्घात करने वाला जीव यदि संख्यात वर्ष की आयु वाला है तो वह संख्यात बार तथा यदि असंख्यात वर्ष की आयु वाला है तो एक भव में वह असंख्यात बार भी वैक्रिय समुद्घात कर सकता है।

जिज्ञासा- वैक्रिय समुद्घात में आत्म-प्रदेशों की जघन्य व उत्कृष्ट कितनी अवगाहना होती है?

समाधान- वैक्रिय समुद्घात में आत्म-प्रदेशों की अवगाहना जघन्य अंगुल के संख्यातवें भाग तथा उत्कृष्ट संख्यात योजन की अवगाहना एक दिशा या विदिशा की अपेक्षा होती है।

जिज्ञासा- किन जीवों में एक दिशा की अपेक्षा तथा किन जीवों में एक दिशा व विदिशा की अपेक्षा अवगाहना समझनी चाहिए?

समाधान- नारकी, तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय एवं वायुकायिक जीवों में एक दिशा की अपेक्षा से अवगाहना समझना तथा भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक देवों एवं मनुष्यों में एक दिशा व विदिशा की अपेक्षा अवगाहना समझनी चाहिए। अर्थात् भवनपति आदि देवों व मनुष्यों में अवगाहना एक दिशा की अपेक्षा भी हो सकती है तथा विदिशा की अपेक्षा भी हो सकती है।

-रजिस्ट्रार- अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

चिन्तन

संस्थाओं में सेवा का अर्थ

डॉ. दिलीप धींग

यह एक हकीकत है कि करोड़ों की लागत से बनी अनेक धार्मिक सामाजिक संस्थाएँ योग्य एवं निष्ठावान व्यक्तियों के अभाव में अपनी निर्धारित गतिविधियों का संचालन सही रूप से नहीं कर पा रही हैं। जिस समाज में वाणिज्य और प्रबंधन में निपुण व्यक्तियों की कोई कमी नहीं, उस समाज द्वारा संचालित संस्थाओं की दयनीय दशा सचमुच चिन्ताजनक है।

कुछ लोगों के भरोसे विकट स्थितियों में भी कुछ संस्थाएँ चल रही या चलाई जा रही हैं। कुछ संस्थाएँ कागजों में चलती रहती हैं। ऐसी संस्थाएँ अपने स्थापित, निर्धारित उद्देश्यों से कोसों दूर रह जाती हैं। जिन उद्देश्यों के लिए धन इकट्ठा किया गया, उसका या तो दुरुपयोग होता है या वह बैंक में पड़ा रहता है। कभी-कभी उस धन के लिए झगड़ा भी हो जाता है। स्थिति हास्यापद बन जाती है।

कई संस्थाएँ पर्याप्त समृद्ध हैं, लेकिन वे अपने उद्देश्यों के अनुरूप कोई कार्य नहीं कर पा रही हैं। संस्थाओं में पैसा बढ़ रहा है तो सम्पत्तियाँ भी बढ़ रही है, आडम्बर बढ़ रहे हैं, लेकिन योग्य व निष्ठावान व्यक्तियों को इन संस्थाओं से नहीं जोड़ा जा रहा है। संस्थाओं के संचालन में जो अर्थ केन्द्रीय भूमिका में है, उसके स्थान पर मानव को केन्द्रीय भूमिका में आना चाहिये।

किसी भी संस्था, योजना, परियोजना या प्रकल्प की स्थापना और संचालन में चल-अचल सम्पत्ति, धन, साधन, संसाधन आदि अनेक घटक होते हैं। उनमें सिर्फ मानव ही ऐसा घटक होता है, जिसके पास चेतना, बुद्धि, प्रज्ञा, विवेक, संकल्प और इच्छाशक्ति जैसी विशेषताएँ होती हैं। योग्य व्यक्ति अल्प साधनों में भी करिश्मा दिखा सकते हैं और अयोग्य व्यक्ति विपुल साधनों के बीच भी कुछ विशेष नहीं कर पाते हैं।

उत्साहवर्द्धक वातावरण नहीं होने के बावजूद जो व्यक्ति संस्थाओं में कार्य करते हैं, उन्हें तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है- भावनाप्रधान, विवश तथा अयोग्य।

1. भावनाप्रधान– अपनी योग्यता के अनुसार प्रतिफल नहीं मिलने के बावजूद उच्चतर भावनाओं के साथ कार्य करने वाले सचमुच अभिनन्दनीय हैं। निश्चित ही इन सेवाभावियों का जीवन संयम और सादगी से अनुप्राणित होना चाहिये। समाज और संस्कृति के उत्कर्ष में इनकी सेवाओं का अत्यधिक मूल्य होता है। ऐसे निष्ठावान व्यक्तियों का समुचित मूल्यांकन होना चाहिये।

2. विवशः– कुछ व्यक्ति अपनी निजी विवशताओं की वजह से संस्थाओं में बने रहते हैं। बेहतर अवसर मिलने पर वे संस्थाओं से विदा ले लेते हैं। किसी की विवशता का अनुचित फायदा उठाना ठीक नहीं है। प्रयास करना चाहिए कि उनकी विवशता समर्पण में परिवर्तित हो जाए और उनके स्थानान्तरण का विचार उनके स्थायित्व में बदल जाए। ऐसा होने से संस्था और व्यक्ति दोनों को लाभ होता है।

3. अयोग्यः– योग्यता और अयोग्यता सापेक्ष होती है। हर व्यक्ति की उसकी अपनी योग्यता व खूबियाँ होती हैं। एक व्यक्ति किसी एक कार्य में योग्य या निपुण होता है तो दूसरा दूसरे में। योग्यता के अनुसार कार्य नहीं दिये जाने से किसी एक क्षेत्र का विशेषज्ञ भी दूसरे क्षेत्र की दृष्टि से अयोग्य सिद्ध हो जाता है। व्यक्ति की योग्यता के अनुसार ही उसे कार्य या पद दिया जाना चाहिये। संस्थाओं में यह देखा जाता है कि अल्प योग्य व्यक्ति को महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ सौंप दी जाती हैं। प्रायः ऐसा इसलिए होता है कि वह व्यक्ति मामूली वेतन पर मिल जाता है। इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगना चाहिये।

समाज और संस्थाओं से जुड़े अनेक मामलों में यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उपयुक्त व्यक्ति को उपयुक्त कार्य नहीं सौंपा गया है। मसलन, कुछ धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं का अवलोकन करने पर यह कहा जा सकता है कि उनका सम्पादन दक्ष व्यक्ति के हाथों में नहीं है। कुछ व्यक्तियों की अनुचित महत्त्वाकांक्षाएँ, अकुशल नेतृत्व, कमजोर प्रबंधन और संस्थाओं से जुड़े पूर्वाग्रह ऐसी स्थितियों के लिए जिम्मेदार होते हैं। अनेक कारणों से निजी संस्थाओं में सेवाएँ देने के प्रति लोगों में आकर्षण कम दिखाई पड़ता है। कुछ कारणों पर यहाँ चर्चा की जा रही है।

1. वेतनः– आमतौर पर सरकारी सेवाओं की तुलना में निजी संस्थाओं में

वेतन बहुत ही कम मिलता है। पिछले कुछ वर्षों से व्यावसायिक निजी कम्पनियों में सेवाएँ देने वालों के लिए भी वेतमान आकर्षक हो गया है। आर्थिक स्पर्धा के युग में अपर्याप्त वेतन पर कार्य करने वालों की कठिनाइयाँ समझी जानी चाहिये।

2. सुविधाएँ:- सरकारी एवं गैर-सरकारी सेवाएँ देने वालों के लिए प्रायः आवास, चिकित्सा, अवकाश, बीमा, पेंशन आदि कई प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। जहाँ आवश्यक हो, वहाँ निजी संस्थाओं में भी इन सुविधाओं पर विचार किया जाना चाहिये।

3. स्वतंत्रता:- संस्थाओं में कार्य करने वालों को समुचित स्वतंत्रता दी जानी चाहिये। योग्य व्यक्ति की नियुक्ति और उस पर विश्वास किया जाना चाहिये। आदेश अथवा नियंत्रण के केन्द्र अधिक होने से भी निष्पादन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यह सुनिश्चित हो कि व्यक्ति मुक्त रूप से कार्य करें, उन्मुक्त या स्वच्छन्द रूप में नहीं।

4. आत्म-सम्मान:- आत्म-सम्मान अथवा स्वाभिमान सबसे महत्त्वपूर्ण बिन्दु है। समाज की नेतृत्वकर्त्ताओं को समझना चाहिये कि संस्थाओं में कार्य करने वाले हमारे अपने ही बन्धु हैं। उनका अपना सामाजिक गौरव होता है। वे कार्य के एवज में कुछ ग्रहण करते हैं तो उन्हें किसी भी तरह से कम आँकना ठीक नहीं है। ऐसा ही स्वस्थ दृष्टिकोण समाज के प्रत्येक सदस्य को रखना चाहिये।

5. रोजगार सुरक्षा:- संस्था-कर्मचारियों को रोजगार-असुरक्षा के भय से मुक्त रखना आवश्यक है। इसे भी एक प्रकार से अभयदान कहा जा सकता है। किसी व्यक्ति की आजीविका पर एकाएक चोट कर देना न्यायपूर्ण नहीं है। ऐसे विचारणीय बिन्दुओं पर मापदण्ड निर्धारित किये जाने चाहिये।

कई संस्थाओं के उद्देश्यों में मानव-कल्याण, स्वधर्मी-वात्सल्य और अनेक प्रकार के पारमार्थिक कार्यों की बड़ी-बड़ी घोषणाएँ की जाती हैं। लेकिन उन संस्थाओं में सेवाएँ देने वालों की दयनीय स्थिति देखकर बड़ा विचार आता है। सामान्य प्रश्न है कि जो अपनों का भला नहीं कर सकता है, वह दूसरों का क्या कर सकेगा? नेतृत्वकर्ताओं को चाहिये कि वे अपने लोगों की वाजिब कठिनाइयों से मुँह नहीं मोड़ें।

यह सच है कि संस्थाएँ कोई व्यावसायिक प्रतिष्ठान नहीं हैं। कुछ अपवादों को छोड़कर उनमें किसी उत्पाद या सेवा के विक्रय के एवज में आमदनी नहीं होती है। अधिकतर संस्थाएँ अनुदान और सहयोग पर अवलम्बित होती हैं। संस्थाओं के कार्य ही किसी को अनुदान के लिए प्रेरित करते हैं। परिणामदायी कार्य होने पर धनाभाव नहीं रहता है।

शिक्षा चिकित्सा जैसे उद्देश्यों के लिए समर्पित संस्थाओं में पर्याप्त आमदनी भी होती है। कुछ संस्थाएँ लागत या लागत से भी कम मूल्य पर अपनी सेवाओं अथवा वस्तुओं से समाज को लाभान्वित करती हैं। इस प्रकार के सारे तथ्य संस्थाओं में सेवा देने वालों को ध्यान में रखने चाहिये। कार्य सबको प्रिय होता है। निष्ठा से बढ़िया कार्य करने का मजा अलग ही होता है। संस्थाओं से जुड़े कर्मचारियों को संस्था के मिशन से जुड़ जाना चाहिये। सेवा करने के लिए मिले स्वर्णिम अवसर का उन्हें पूरा लाभ उठाना चाहिये।

समर्पित कर्मचारी तथा सुदृढ़ व दूरदर्शी नेतृत्व हो तो सारी स्थितियों को अनुकूल बनाया जा सकता है। कुछ संस्थाओं की बढ़िया कार्यप्रणाली उनके नेतृत्व की कुशलता और कर्मचारियों की प्रतिबद्धता अभिव्यक्त करती है। श्रेष्ठ संस्थाओं से जुड़कर अनेक व्यक्तियों ने अपने जीवन को अभिनव आयाम दिये हैं। पर्याप्त यश व सम्मान उन्होंने पाया है। निश्चित ही, योग्य व्यक्तियों की सेवाओं से संस्थाएँ भी नई ऊँचाइयाँ पाती हैं। इस परस्पर आदान-प्रदान के नियम को समझ लिया जाए तो समाज और संस्कृति का बहुत भला हो सकता है। जैन प्रतीक के साथ लिखे जाने वाले तत्त्वार्थ सूत्र के उद्घोष 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' में पारस्परिक निर्भरता के इस प्रेरक सिद्धान्त का प्रतिपादन हुआ है।

-53-बी, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

सुविचार

उपचार के लिये डॉक्टर आपका तन काटता है, सुई चुभाता है, फिर भी अच्छा लगता है। उपकार के लिए माता पिता डाँटते हैं, दण्ड देते हैं, फिर भी बुरा लगता है, क्यों सच है न?

-आचार्य श्री हस्ती

गीत

जिनवाणी महिमा

श्री मोहन कोठारी "विनर"

छोटे और बड़े सब मिलकर, जिनवाणी संगान करो,
भव भव रोग मिटाने वाली, इसका तुम सम्मान करो।
श्रद्धा रखो सदा अंतर में, जिन वचनों पर प्रतीति हो,
जिनवाणी को अपना करके, अपना तुम कल्याण करो।।
छोटे और बड़े सब मिलकर......... ।।1।।

जिनवाणी का निर्मल झरना, पावन सुमन खिलाता है,
दूर हटा अज्ञान अंधेरा, नव आलोक जगाता है।
नित उठ करके जिन चरणों में, शत-शत बार प्रणाम करो
छोटे और बड़े सब मिलकर......... ।।2।।

लाखों पतितों को तारा है, इस पावन जिनवाणी ने,
कर्मों के बंधन तोड़े हैं, द्वादशांगी वाणी ने।
वीर प्रभु ने फरमाया है, नौ तत्त्वों का ज्ञान करो,
छोटे और बड़े सब मिलकर......... ।।3।।

चार गति में इस जीव ने, कितने चक्कर काटे हैं,
नरक, निगोद के जीव सभी तो, घोर वेदना पाते हैं।
भव का भ्रमण मिटाने को तुम, जीवन का उत्थान करो,
छोटे और बड़े सब मिलकर......... ।।4।।

बस धर्म ही एक हमारा, सच्चा साथी जीवन में,
प्रेम, समाधि व्यापे जग में, अमन चैन हो कण कण में।
जिनवाणी है महा हितकारी, इसका अमृत पान करो,
छोटे और बड़े सब मिलकर.......... ।5।।

-जैन साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

धारावाहिक (4)

धरोहर

श्रीमती पारसकंवर भण्डारी

पूर्ववृत्त- सेठजी का पाँचवां पुत्र विवाह योग्य हो गया। सेठानी के बहुत समझाने पर सेठजी ने अपने मुनीम को लड़की ढूँढ़ने के लिए भेजा। एक सौतेली माँ ने सब कुछ जानकर भी अपनी बेटी के लिए मुनीम जी से विवाह का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। लड़की गाँव के बाहर जाकर एक पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगी। तभी वहाँ से एक सिद्ध पुरुष निकले उन्होंने उसके दुःख को दूर करने के लिए उपाय बताया। तब उसने खुशी से विवाह कर लिया और डोली में बैठ सेठजी के घर पहुँच गई। डोली में से नई बहू को उतरने के लिए कहा गया तो उसने अपने श्वसुर को बुलवाया और उनसे धरोहर के रूप में दबाए हुए रत्नों के बारे में पूछा। उसी क्रम में.........

बहू ने सेठजी से दूसरा सवाल पूछा- ''क्या वह रत्नों की पोटली अभी भी आपके पास है या रत्न कहीं बेच दिये हैं?'' सेठजी ने कहा- ''नहीं, बेचे नहीं, मेरे पास पड़े हैं, मैंने उनको बाहर भी नहीं निकाला।'' तब बहू ने कहा- ''पिताजी! क्या आप वह पोटली मुझे दे सकते हैं? वह पोटली मिलने पर मैं डोली से उतर जाऊँगी।'' सेठजी लड़खड़ाते पांवों से दुकान में गये, और तिजोरी खोल कर उन्होंने पोटली निकाली तथा बहू के हाथों में लाकर रख दी। दूर खड़ी सारी महिलाएँ यह नज़ारा देख रही थीं, शब्द तो कानों में पड़े नहीं, पर आँखों से देखकर कुछ सोच रही थीं। यह नई बहू ससुर से क्या खुसर-फुसर कर रही है कि सेठजी के चेहरे की हवाइयाँ उड़ रही हैं। ऐसा क्या दबाव ड़ाल रही है कि सेठजी कुछ बोल नहीं पा रहे हैं और अन्दर से कुछ लाकर भी दिया है। अब जितने मुंह उतनी बातें। कोई कहने लगी- शायद अपना हिस्सा पहले से ही मांग रही है। कोई कुछ-कोई कुछ बातें बनाने लगीं। रत्नों की पोटली हाथ में आते ही, बहू ने उसको अपने कपड़ों में अच्छी तरह से छिपा लिया, कहीं कोई देख न ले। अब वह डोली में से उतरी, औरतें उसके पास पहुँची और आदर के साथ तथा रीति रिवाज के अनुसार उसे घर में प्रवेश करवाया। सबके चेहरों पर खुशियों

की झलक दिखने लगी। दिन-भर खुशी का माहौल रहा। विभिन्न कार्य करने में सब व्यस्त हो गये थे।

अब रात आई, महलों में जाने का समय आया तो सब अन्दर ही अन्दर डर से कांप रहे थे, पर ऊपर से खुशी जता रहे थे। बहू से महलों में चलने को कहा गया तो वह कहने लगी, पहले मैं कहूँ वैसा करो। सब उसका आदेश सुनने को बेताब हो रहे थे। उसने केशर और मिश्री से मिश्रित दूध का कटोरा मंगवाया और एक दीपक भी मंगवाया। फिर उसने कहा- कोई पहले सीढ़ियों पर नहीं चढ़ेगा, सिर्फ मैं पहले चढ़ूँगी। पति को कहा- मैं आगे चलूँगी, आप मेरे पीछे आना। सारा इन्तजाम करके हाथ में दीपक, दूध का कटोरा लेकर सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। सारी सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद सिर्फ एक सीढ़ी शेष रही तब वहाँ रुक गई। दीपक वहाँ रखा, दूध का कटोरा भी वहाँ रखा और साथ में पाँचों रत्न भी वहाँ रख दिए और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने लगी- "हे नागदेवता! हमें क्षमा करना, हमारे से बहुत बड़ी भूल हो गई। आपके पाँचों रत्न यहाँ पर रख दिये हैं, आप अपने रत्न संभालिए और मेरे पति को बख्शिए, मैं आपसे मेरे सुहाग की भीख मांग रही हूँ।" इतने में वहाँ पर एक नाग आया, दीपक के प्रकाश में वह सबको दिखाई दिया। उस नाग ने कटोरे में मुँह डाल कर सारा दूध पी लिया। अपनी नजरें उठाकर नई बहू को देखा, मन ही मन आशीर्वाद दिया और पाँच में से एक रत्न अपने मुँह में लिया और जिस रास्ते से आया था, उसी रास्ते से वापस चला गया।

अब दुल्हन अपने पति से कहती है कि अब आप आगे चलो, मैं आपके पीछे चलूँगी। दोनों महल में पहुँच गये, पीछे-पीछे सेठजी तथा सब घर वाले भी महलों में आ गये, और प्रश्नों की झड़ी लगा दी। तुम्हें कैसे पता कि यहाँ नाग आने वाला है और तुम सब तैयारियों के साथ ऊपर चढ़ी? इतने में सेठजी ने कहा- "बेटा! इतने वर्षों पुरानी बात तुम्हें किसने बताई, कैसे तुम्हें पता चला? मेरे परिवार वालों को भी यह बात नहीं मालूम थी। तब बहू ने अपनी बात कहना शुरू किया, कि आपके मुनीम जी मेरा रिश्ता पक्का करने आए, तब आपके घर जो घटनाएँ घटी थीं वह सब मेरी

सौतेली माँ को बता दी गई थीं। मेरी सौतेली माँ को मेरी कोई फिक्र नहीं थी, उन्हें तो बस रुपये चाहिए थे। मैं यह सुन कर बहुत दुःखी हो गई, और एक पेड़ के नीचे बैठ गई। मुझे बार-बार रोना आ रहा था। उस समय एक सिद्ध पुरुष वहाँ पर आए, जो मेरे लिए एक भगवान् का ही रूप थे। उन्होंने मेरा दुःख सुन कर अपने ध्यान के बल से सारी बातें जान लीं, और यह भी जान लिया कि उन रत्नों के बदले आपका एक-एक पुत्र जा रहा है। तब इससे बचने का उपाय उन्होंने मुझे बताया और कहा कि जैसा मैं कहूँ वैसा करना तो तेरा सुहाग बच जाएगा। आपने जिस पुरुष की धरोहर दबाई थी, वह पुरुष रत्नों के पीछे पागल हो गया था, और मेरे रत्न, मेरे रत्न की रट लगाता रहता था। इसी रट में उसने प्राण छोड़ दिये। रत्नों की आसक्ति के कारण मर कर उसने सर्प की योनि में जन्म लिया। उसे जाति स्मरण ज्ञान हो गया था, आपसे बदला लेने के लिए आपके पुत्रों को विवाह की प्रथम रात में ही आकर डस जाता था। अगर आज भी हम ये रत्न नहीं उसके समक्ष नहीं रखते तो यह आपका पुत्र भी नहीं बचता। तब किसी ने पूछा कि फिर वह पाँच में से एक रत्न ही क्यों लेकर गया, चार क्यों छोड़ गया? तब बहू ने कहा- चारों रत्नों के बदले में पहले चारों पुत्रों को ले गया, अतः अब एक रत्न ही लेकर गया है एवं इनको (एक पुत्र को) छोड़ गया है। यह सुनकर सब आश्चर्य चकित हो गये। बहू की प्रशंसा करते नहीं थक रहे थे। सबके मुँह से यही निकला कि आज इस बहू के कारण ही सेठजी का घर बच गया।

सेठजी ने बहू से कहा- "बेटी! मेरी कुछ पुण्यवानी बची थी, जिससे भगवान् ने तुम्हें बहू के रूप में भेजकर मेरे परिवार की रक्षा की। मेरे घर के चिराग को बचाकर तुमने मुझ पर बहुत बड़ा एहसान किया है। मैं तुम्हारा उपकार कभी न भूलूँगा।" सेठजी को अब पश्चात्ताप हो रहा था कि मेरी एक गलती के कारण, कितने जीवों की हानि हुई। एक पाप सब को ले डूबा। अब सेठजी को संसार से विरक्ति हो गई। उन्हें घर-संसार भार भूत लगने लगा। उन्होंने पुत्र को दुकान का, पुत्रवधू को घर का भार सम्हला दिया तथा सेठ और सेठानी दोनों दीक्षित हो गये। **(समाप्त)**

-128, मिन्ट स्ट्रीट, साहुकार पेट, चेन्नई-19

उपन्यास (12)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- किशनलाल के पुत्र विश्वास और उसकी पत्नी घर छोड़कर बम्बई जाने वाली ट्रेन में बैठ गए। ट्रेन में बैठकर दोनों अतीत की स्मृतियों में डूब गए। ट्रेन से उतरकर वे दोनों बम्बई की भीड़ भरी गलियों में चलने लगे। धीमी गति के कारण मीनाक्षी पीछे रह गई तो विश्वास ने उसे तेज चलने को कहा, यह सुनकर..

मीनाक्षी, हल्के से मुस्कुराती हुई तेज-तेज चलने लगी।

'लगता है कई वर्षों बाद बम्बई आई हो?'-विश्वास ने उससे पूछा।

'हाँ, दस वर्ष से भी ज्यादा हो गये होंगे।'

'तभी तो कुछ अटपटा सा लग रहा है तुम्हें।'

'हाँ, यह भीड़-भाड़ देखकर मेरा दम घुटा जा रहा है।'

'अरे भाई! आखिर इस नगरी की आबादी भी तो एक करोड़ हो रही है। इसे कहाँ भगा देना चाहती हो तुम!'

'यहाँ के लोग कहाँ जायेंगे भागकर! बम्बई तो वैसे भी भगोड़ों की नगरी कही जाती है।'

'हाँ यह बात बिल्कुल सही है। जिसका मन, देश के किसी शहर में नहीं लगा, वही भागकर बम्बई आ जाता है, और मौज करने लगता है।'

मीनाक्षी के चेहरे पर, पैदल चलने की खिन्नता स्पष्ट झलकने लगी थी। यह देखकर, विश्वास ने पूछा- 'टैक्सी ले लें?'

'चलोगे कहाँ?'

'अपने एक मित्र के घर!' उत्तर देने के साथ ही उसने एक टैक्सी को हाथ के इशारे से रोका, और पूछा-भूलेश्वर चलोगे?'

'क्यों नहीं। आइये।'-कहते हुए ड्राइवर ने पिछला दरवाजा खोल दिया।

मीनाक्षी और विश्वास, दोनों उसमें जा बैठे।

'भूलेश्वर आ गया है बाबूजी! किधर चलना है?' ड्राइवर ने करीब पन्द्रह मिनट बाद, पूछा विश्वास से।

विश्वास ने बाहर झाँककर देखा और कहा– 'बस यहीं उतार दो।'

टैक्सी से उतरकर विश्वास ने उसे किराया दिया, फिर मीनाक्षी को साथ लेकर एक गली में मुड़ गया।

'बस, यही मकान है मीनाक्षी!'–कहता हुआ विश्वास रुका और मित्र के घर के द्वार तक पहुँचकर, उसने कॉलबेल बजाई।

'भाभी नमस्ते।'– दरवाजा खोल रही महिला को देखते ही बोला विश्वास।

'अरे विश्वास बाबू तुम! लन्दन से कब आये?'

'पहिली तारीख को आया था।'

'साथ में कौन है?'

'एक पति के साथ जिसे होना चाहिए।'

'सच!.... लगता है, चोरी छिपे से विवाह किया है। हमें सूचना तक नहीं दी।'

'इतना समय नहीं था भाभी!–रमन भैया हैं?'

'हाँ हैं। आओ, अन्दर आ जाओ'– कहती हुई विमला तेजी से अन्दर आकर बोली– 'अजी देखो तो कौन आये हैं?'

'अरे, विश्वास तुम!'– रमन ने नीचे आकर, विश्वास को देखते ही कहा– 'कमाल है भाई! कल रात को ही तुम्हारी चर्चा की थी हम लोगों ने।'

'तुमने याद किया, और मैं आ पहुँचा।'

'बहू को भी ले आये हो क्या?'

'हाँ, यह मीनाक्षी है। मेरी पत्नी।' विश्वास ने रमन को बतलाया। फिर मीनाक्षी से बोला– 'ये हैं मेरे मित्र, या यों कहूँ, मेरे बड़े भाई मिस्टर रमन। और वे हैं विमला भाभी!'

'नमस्ते'– मीनाक्षी ने दोनों को हाथ जोड़कर कहा।

'नमस्ते। कहाँ से आ रहे हो अभी?'–रमन ने पूछा।

'अरे! खड़े–खड़े ही सब पूछ लोगे।' 'आइये,अन्दर आइये विश्वास बाबू!' –विमला ने उन्हें संकेत से बुलाया।

'इतनी सुन्दर बीबी लाने के लिए मुझे नहीं बुलाया। क्या सोचता था.....'

रमन ने आगे का वाक्य अधूरा छोड़ दिया।

"कैसे बुलाता तुम्हें? लन्दन में ही हमारी शादी हुई थी। पिताजी को भी सूचना तक नहीं दे पाया था। घर पहुँचा, तो बहुत नाराज हुए वे। मुझे घर से निकल जाने तक के लिए कह दिया। बस, वहाँ से सीधा तुम्हारे पास आ गया हूँ।"

'अरे भाई! अपनी इंग्लैण्ड की खोज से सबको परिचित तो कराना ही चाहिए था। वैसे तुम्हारी पसन्द की दाद तो देनी ही पड़ेगी। क्यों विमल!'

'बिल्कुल! विश्वास की पसन्द तो अनोखी है ही। इनके पिताजी ने भेजा था डिप्लोमा लेने के लिए। ये महाशय, साथ में डिग्री भी लेते आये।'

अपनी बीबी के तर्क पर रमन मुस्काराये बिना न रह सका। उसी मूड में उसने भी पूछ लिया- 'भारतीय उत्पादन जान पड़ता है। क्यों विश्वास।'

'बिल्कुल विशुद्ध भारतीय जैन।'

'फिर पिताजी ने क्यों मना कर दिया इसे अपनाने से?'

'यही तो समझ में नहीं आया। फिर मेरे ही सामने, इसका जो अपमान उन्होंने किया, वह भी मैं बर्दास्त नहीं, कर पाया। और, यहाँ चला आया।'

'अच्छा किया जो यहाँ आ गये। देखो मीनाक्षी! इस घर को भी तुम अपना घर समझो। आराम से यहाँ रहो। विश्वास मेरा सच्चा मित्र है। इसके तमाम अहसान हैं मुझ पर। शायद, इसी बहाने से कुछ उधार चुका सकूँ।'

'ऐसा क्यों कह रहे हो रमन!'

'सच तो कहना ही पड़ता है। तुम्हें यहाँ कोई परेशानी नहीं होगी। और फिर तुम तो एक डॉक्टर हो। बम्बई, डॉक्टरों के ऊपर हमेशा से ही सोने की वर्षा करती रही है। कल, इस घर के बाहर अपने क्लीनिक का बोर्ड लटका देना। लोग टूट-टूटकर गिरेंगे।'

'गुरुदेव पधार रहे हैं'- विमला ने घर के खुले दरवाजे से देखकर रमन को बतलाया।

चारों एक साथ उठकर द्वार पर आ गये। गुरुदेव के निकट आते ही सबने विधिवत् वन्दना की।

'आप कौन हैं?' -मुनिश्री ने विश्वास की ओर इशारा करके पूछा।

'मेरे मित्र हैं विश्वास! और यह हैं इनकी पत्नी मीनाक्षी। इंगलैण्ड से डाक्टरी में डिप्लोमा लेकर आये हैं। मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों के विशेषज्ञ हैं।'

'खास रहने वाले कहाँ के हैं आप?'

'जी! आगरा में है मेरा घर। सेठ किशनलाल अग्रवाल का बेटा हूँ मैं।'

'अच्छा, अच्छा, जान गया। आपके पिताजी तो एक-दो बार अवश्य मिले थे। मगर, आपकी माताजी शान्ति बाई की धर्मध्यान में विशेष रुचि रहती है। वे सब आनन्द में तो हैं?'

'जी! आपका आशीर्वाद है।'

'अभी एक-दो दिन यहाँ रहोगे?'

'अब तो हमेशा के लिए यहाँ आ गये हैं गुरुदेव! पिताजी ने इन्हें घर से निकाल दिया है।'

'क्यों, ऐसी क्या बात हो गई?'

'विश्वास ने अपनी सजातीय कन्या से बिना दहेज के विवाह कर लिया। बस, नाराज हो गये।'

'लाला किशनलाल ने ऐसा किया। बहुत गलत है यह तो। मगर तुम घर छोड़कर क्यों आ गये?'

'क्या करता गुरुदेव! पिताजी के आगे, माँ की बिल्कुल नहीं चलती। लड़ाई-झगड़ों से अच्छा यही है कि दूर ही रहा जाये।'

'कोई बात नहीं। तुम तो योग्य हो भाई। बम्बई में योग्य डॉक्टरों की आवश्यकता हमेशा ही बनी रहती है। गुरुदेव के साथ आए किसी श्रावक ने कहा- अस्पताल में नौकरी करना चाहो, तो अभी-अभी एक नया अस्पताल बना है। वहाँ डॉक्टर का एक स्थान रिक्त है। तुम चाहो तो वहाँ रह सकते हो। मेरी समझ से तो अच्छा ही रहेगा।'

'किसका अस्पताल है श्रीमान्!' - रमन ने पूछा।

'राजस्थानी सेठ हैं- पूसाराम किरोड़ीमल। दोनों भाई मिलकर इसे बनवा रहे हैं। पाँच करोड़ की योजना है। कल ही गुरुदेव से भेंट की थी उन्होंने। गुरुदेव का नाम लेकर बात कर लेना। काम हो जायेगा। उनका पता है- बी.पी. रोड़, पाँचवाँ माला।'

'ठीक है गुरुदेव! कल सबेरे हम वहाँ चले जायेंगे। गुरुदेव के आशीर्वाद से काम हो जायेगा।'

'आहार ग्रहण कीजिये गुरुदेव!'-विमला ने प्रार्थना के स्वर में कहा।

मुनि श्री ने कुछ गोचरी ग्रहण की। फिर मंगल पाठ सुनाकर चले गये।

विश्वास को बड़ी राहत मिली अब।

गुरुदेव की स्मरण शक्ति कितनी तेज है?'- उसने रमन से कहा।

'विद्वान् सन्त हैं। इस बार आपका चातुर्मास यहीं तो है। इसीलिए तो एक-दो दिनों बाद दर्शन दे जाते हैं। बड़े ही परोपकारी सन्त हैं। मानव सेवा के लिये प्रेरणा देते ही रहते हैं।

'अब आप लोग भोजन करिए पहिले।' विमला ने अपनी बात कही।

'क्या बात है भाई! जबाव नहीं है तुम्हारा विमला। ये लोग, अभी तक गाड़ी के यात्रियों जैसी दशा में बैठे हैं। इन्हें नहा-धो लेने दो। चलो उठो विश्वास! पहिले तुम निवृत्त होओ। बाद में सब साथ-साथ भोजन करेंगे।'

विश्वास के निवृत्त होने के बाद, मीनाक्षी भी नहा कर आ गई, तब सब एक साथ भोजन करने बैठे।

'कितना स्नेह है आप लोगों का?'-मीनाक्षी ने धीमे से प्रशंसा वाक्य कहा।

'स्नेह तो आप लोगों का है, जो मेरी कुटिया को पवित्र कर दिया। वरना, बम्बई में ठहरने की कोई कमी है क्या?'-रमन ने तुरन्त उत्तर दिया।

'विश्वास! हम आज ही पूसाराम किरोड़ीमल से मिल लें तो कैसा रहे?'-रमन ने पूछा।

'मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं तैयार हूँ। शुभ काम में देर ही क्यों की जाये?'

'ठीक है। तब तुम नीचे चलो, और कार में बैठो। मैं तैयार होकर आया। और देखो विमला। मीनाक्षी का ध्यान रखना। इसे किसी प्रकार की परेशानी न हो।'

'आप विश्वास बाबू का ध्यान रखिए। हम लोगों का नहीं। क्यों मीनाक्षी!'

मीनाक्षी, धीरे से मुस्कराकर रह गई। उसकी इसी मुस्कान पर गद्गद होते विश्वास और रमन, दोनों नीचे चले गये।

(क्रमशः)

प्रासङ्गिक

पाद-विहारी जैन संतों के निरापद विहार

श्री रत्नेश कुमार पोखरना

राजस्थान में पाली शहर के पास दो विदुषी साध्वियों, दूदू (जयपुर) के पास श्रमण संघीय महामंत्री पूज्य श्री मोहनमुनि जी, खरपीणा (उदयपुर) के पास तीन विदुषी साध्वियों, हाल ही में मेहसाणा के समीप चार जैन साध्वियों तथा बालोतरा के पास दो जैन संतों के दुर्घटना में देहावसान ने पूज्य साधु-साध्वी एवं समग्र जैन समाज को झकझोर दिया है। देश के अन्य भागों में भी अनेक ऐसी ही दुर्घटनाओं ने विवश कर दिया है कि आए दिन पाद-विहारी पूज्य साधु-साध्वियों के साथ होने वाली दुर्घटनाओं के क्या कारण हैं? उनके निवारण के क्या उपाय हैं? हमें ऐसे प्रयास करने होंगे जिनसे साधु-साध्वियों के विहार 'दुर्घटना शून्य' हो सके। पाठकों से अनुरोध है कि निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देकर पूज्यवरों की सुरक्षा हेतु आगे आएं:-

1. अनुशासनहीन वाहन चालकों से बचने के लिए जब भी सड़क पर चलें तो **"सड़कों या राजमार्गों पर दाँये चलने का नियम अपनाना चाहिए।"** हम शहर की सड़कों पर बाँये चलने के नियम ही राजमार्ग पर अपनाते हैं, जो सही नहीं है। दांये चलने के नियम से ओवरटेक करने वाले वाहनों से पूरा बचाव होगा।
2. राजस्थान में जिन मार्गों पर प्रायः जैन साधु-साध्वी के पद-भ्रमण होते हों उन पुलिस थानों को स्थानीय संघों द्वारा यात्रा से पूर्व पुलिस सहायता हेतु लिखित अनुरोध महानिदेशक पुलिस, राजस्थान के आदेश दिनाँक 03 मई, 2008 (पत्र की प्रति इसी लेख के अन्त में प्रकाशित है) के अनुपालन में किया जाए। अन्य प्रांतों में भी ऐसे आदेश निकलवाने होंगे।
3. पूर्व में पाद विहारी पूज्य साधु-साध्वियों को पूरे रास्ते श्रावक भी पैदल चलकर अगवानी करते थे। स्थानीय संघों का दायित्व है कि विहार के समय पूज्य साधु-साध्वियों के साथ जैन समाज के भी आवश्यक संख्या में

भाई-बहिन श्रद्धा पूर्वक रहें। समाज के लोग चाहें तो स्वयं वाहन का उपयोग कर सकते हैं। यह महत्त्वपूर्ण दायित्व संघ के कर्मचारियों पर न छोड़ें।

4. पौ फटने (सूर्योदय पूर्व) के साथ ही किसी परम्परा के साधु-साध्वी पद-विहार शुरु कर देते हैं। प्रायः सूर्योदय पूर्व की दुर्घटना वाहन चालक के नींद/झपकी आने के कारण होती है। सूर्योदय के बाद या संभव हो तो नवकारसी के बाद ही विहार प्रारम्भ उचित है।

5. प्रायः राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अन्तर्गत उचित दूरी पर एम्बुलेंस उपलब्ध रहती है। स्थान-स्थान पर मोबाइल नम्बर ऐसे वाहनों के मिल जायेंगे। दुर्घटना होते ही तत्काल सहायता के लिए फोन करें।

6. नजदीक के किसी भी अस्पताल, ट्रोमा अस्पताल या एम्बुलेंस के सम्पर्क सूत्र विहार से पूर्व साथ में चलने वाले श्रावक वर्ग को रखने चाहिए, जिससे तत्काल मदद मिल सके।

7. दुर्घटना की स्थिति में वाहन चालक मौके का फायदा उठाकर भागना चाहता है। तत्काल नजदीक के थाने में एवं टोलबूथ पर ऐसे वाहनों की नाकाबंदी हेतु थाने में फोन द्वारा अनुरोध करना चाहिए। श्रावक वर्ग की सावचेती से इस बाबत बड़ी राहत मिलेगी।

8. राजमार्गों पर अलग-अलग स्पीड के वाहनों के लिए अलग-अलग लेन निर्धारित हैं। उसकी पालना राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण से कराना चाहिए। ओवरटेक करना या गलत लेन में चलना भी दुर्घटना होने का प्रमुख कारण है।

9. शहर की सड़कों व राष्ट्रीय राजमार्ग की सड़कों को पार करते समय ज़ेब्रा लाइन (काली सफेद रेखा) का ही उपयोग करें।

10. अब राजस्थान में एवं अन्य प्रदेशों में भी राजमार्गों के समानान्तर सड़कों का जाल बिछ गया है। जहाँ संभव हो, थोड़े से लम्बे रास्ते का उपयोग कर भारी वाहन वाले रास्ते से बचना चाहिए।

11. राष्ट्रीय राजमार्ग संगठन, नई दिल्ली एवं राज्य सरकारों के भवन एवं पथ

विभाग मंत्री जी को प्रत्येक संघ प्रस्ताव पारित कर निवेदन करे कि "पूर्व में सड़कों के साथ पैदल यात्री सुरक्षित चलते थे, किन्तु उच्च मार्ग बनने के कारण पैदल यात्री सुरक्षित नहीं रहे हैं। आए दिन राजमार्गों पर पैदल यात्री दुर्घटनाग्रस्त होते हैं। अतः सड़क से 0.5 मीटर ऊँचा व 2 मीटर चौड़ा पैदल यात्रियों के लिए फुटपाथ बनाया जाये।"

सम्पूर्ण जैन समाज के हर घटक एवं उनके प्रमुखों से निवेदन है कि वे अपने आस-पास विराजित साधु वर्ग को उपर्युक्त बिन्दुओं बाबत अवगत करावें जिससे हमारे धर्म की रीढ़ एवं प्रणेता साधु-साध्वियों का असामयिक निधन न हो।

-आर-6, रघुविहार, लालकोठी, जयपुर-302015 (राज.)

।। कार्यालय महानिदेशक पुलिस, राजस्थान, जयपुर ।।

क्रमांक- द.2(4) पु0याता0/2007/905 दिनाँकः-03.05.2008

समस्त जिला पुलिस अधीक्षक,
राजस्थान।

विषयः- जैन साधु-साध्वियों के पद-भ्रमण के दौरान दुर्घटना होने बाबत।

महोदय,

माननीय गृहमंत्री महोदय, राजस्थान ने श्रीमान् महानिदेशक, पुलिस के ध्यान में लाया है कि जैन साधु-साध्वियों के पद-भ्रमण के दौरान होने वाली दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति काफी बढ़ रही हैं। यह विषय काफी मार्मिक है। ऐसी दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने एवं दुर्घटना हेतु जिम्मेदार वाहन चालक/मालिक के विरुद्ध कड़ी कानूनी कार्यवाही करने की आवश्यकता है।

अतः इस सम्बन्ध में निर्देश दिये जाते हैं ऐसी दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के ठोस प्रयास करें। जिन मार्गों पर अक्सर जैन साधु-साध्वियों के पद भ्रमण होते हों या अन्य पद-यात्रायें गुजरती हों उन मार्गों पर पुलिस गस्त भी बढाई जावे। इसे गम्भीरता से लिया जावे।

भवदीय

र. ए. [illegible] 3.5.2008

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस,
यातायात, राजस्थान, जयपुर (राज.)

नारी-स्तम्भ

क्या खोया और क्या पाया? (2)

श्री पारसमल चण्डालिया

मानव जीवन की डायरी-

मनुष्य अपनी उन्नति चाहता है, प्रगति चाहता है। वह जीवन की दौड़ में हर कहीं बढ़ जाना चाहता है। साधना के क्षेत्र में भी वह तप करता है, जप करता है, संयम पालता है, एक से एक कठोर आचरण अपनाता है और चाहता है कि आत्मा के कर्म-बन्ध को तोड़ डालूँ, किन्तु उसे सफलता क्यों नहीं मिल रही है? सब कुछ करने पर भी हानि क्यों है? लाभ क्यों नहीं?

बात यह है कि किसी भी प्रकार की उन्नति करने से पूर्व अपनी वर्तमान अवस्था का पूरा ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। हम बढ़ते (चलते) तो हैं, किन्तु बढ़ने की धुन में जितना मार्ग तय कर पाये हैं, उस पर नज़र नहीं डालते। वह सेना विजय का क्या आनंद उठा सकेगी जो आगे ही आगे आक्रमण करती जाती है, किन्तु पीछे की व्यवस्था पर, दुर्बलता पर भूलों पर कोई ध्यान नहीं देती। वह व्यापारी क्या लाभ कमाएगा, जो अंधाधुंध व्यापार तो करता जाता है, परन्तु बही-खाते की जांच पड़ताल करके यह नहीं देखता कि क्या लेना-देना है, क्या हानि-लाभ है? कुशल (अच्छा) व्यापारी दूसरे दिन की बिक्री उसी समय प्रारम्भ करता है जबकि पहले दिन का आय-व्यय का हिसाब मिला लेता है। जिसको अपनी पूंजी का और हानि लाभ का पता ही नहीं, वह क्या व्यापार करेगा? और उस अंधे व्यापार से उसे लाभ भी क्या होगा? अंधी बुढ़िया चक्की पर आटा पीसती है, इधर पीसती है और उधर कुत्ता चुपचाप आटा खाता जा रहा है। बुढ़िया को क्या पल्ले पड़ेगा? केवल श्रम, कष्ट, चिंता एवं शोक, और कुछ नहीं।

हमें भी अपनी जीवन रूपी बही की जांच पड़ताल करनी है हमें यह देखना है कि हमने क्या पाया है और क्या खोया है? हम अहिंसा, संयम एवं तप की साधना में कहाँ तक आगे बढ़े हैं? कहाँ तक भूले भटके हैं? कहाँ क्या रोड़ा अटका है?

अपनी जीवन की डायरी को देख कर मानव अगर सच्चे मन से चाहे तो

अपनी भूलों को साफ कर सकता है और अपने आपको पतित होने से बचा सकता है। दशवैकालिक सूत्र की चूलिका में इसी महान् भाव को लेकर कहा गया है- **''किं मे कडं किं च मे किच्चसेसं''** मैंने अब तक क्या किया है, अब आगे क्या करना शेष रहा है?

ऐसा चिंतन करने से जीवन का भला-बुरापन स्पष्टतः आँखों के सामने झलक उठता है। दुर्बल से दुर्बल और सबल से सबल साधक को भी तटस्थ भाव से अपने जीवन को देखने का अपनी आत्मा का विश्लेषण करने का अवसर मिलता है। यही वह राजमार्ग है जिस पर चलकर हजारों-लाखों साधकों ने अपने आपको सुधारा है, पशुत्व से ऊँचा उठाया है और वासनाओं पर विजय प्राप्त कर अंत में भगवत्पद प्राप्त किया है।

जीवन में खोने और पाने योग्य-

आवश्यक सूत्र में कहा है-

1. **असंजमं परियाणामि, संजमं उवसंपज्जामि।**

   -असंयम को त्यागता हूँ और संयम को स्वीकार करता हूँ।

2. **अबंभं परियाणामि, बंभं उवसंपज्जामि।**

   -अब्रह्मचर्य को त्यागता हूँ और ब्रह्मचर्य को स्वीकार करता हूँ।

3. **अकप्पं परियाणामि, कप्पं उवसंपज्जामि।**

   -अकल्प (अकृत्य) को त्यागता हूँ और कल्पको स्वीकार करता हूँ।

4. **अण्णाणं परियाणामि, णाणं उवसंपज्जामि।**

   -अज्ञान को त्यागता हूँ और ज्ञान को स्वीकार करता हूँ।

5. **अकिरियं परियाणामि, किरियं उवसंपज्जामि।**

   -अक्रिया (नास्तिवाद) को त्यागता हूँ और क्रिया (सम्यग्वाद) को स्वीकार करता हूँ।

6. **मिच्छत्तं परियाणामि, सम्मत्तं उवसंपज्जामि**

   -मिथ्यात्व (असदाग्रह) को त्यागता हूँ और सम्यक्त्व (सदाग्रह) को स्वीकार करता हूँ।

7. **अबोहिं परियाणामि, बोहिं उवसंपज्जामि**

   -अबोधि (मिथ्यात्वकार्य) को त्यागता हूँ और बोधि (सम्यक्त्व कार्य)

को स्वीकार करता हूँ।

8. **अमग्गं परियाणामि, मग्गं उवसंपज्जामि।**

-अमार्ग (हिंसा आदि) को त्यागता हूँ और बोधि (अहिंसा आदि) को स्वीकार करता हूँ।

जीवन में असंयम (प्राणातिपात आदि), अब्रह्मचर्य (मैथुन वृत्ति), अकल्प (अकृत्य), अज्ञान (मिथ्याज्ञान), अक्रिया (असत्क्रिया), मिथ्यात्व (अतत्त्वार्थ श्रद्धान)अबोधि आदि आत्मविरोधी एवं प्रतिकूल आचरण त्यागने (खोने) योग्य हैं और संयम, ब्रह्मचर्य, कल्प (कृत्य), सम्यग्ज्ञान, सत्क्रिया, सम्यग्दर्शन, बोधि आदि स्वीकार करने (पाने) योग्य हैं। जीवन में खोने योग्य और पाने योग्य की जानकारी होने के बाद यदि व्यक्ति अपने किए को याद करता है, अपनी अतीत अवस्था पर दृष्टि डालता है तो उसे पता लग जाता है कि कहां क्या शिथिलता है? कौन-सी त्रुटियाँ है और वे क्यों है? आलस्य आगे नहीं बढ़ने देता या अंदर की वासनाएँ ही साधना कल्पवृक्ष की जड़ों को खोखला कर रही हैं? मानव ने आज दिन तक ईमानदारी से अपने जीवन को जांचा, परखा और सुधारा नहीं है, इसी कारण पाने के स्थान पर वह खोता ही चला जा रहा है। आवश्यकता है सच्चे मन से जीवन की डायरी के पन्ने लिखने की और उन्हें जांचने परखने की। **(क्रमशः)**

-नेहरू गेट के बाहर, ब्यावर-305901

निशुल्क प्राप्त करें

निम्नलिखित उपयोगी प्रकाशन की कुछ प्रतियाँ धर्म प्रचारार्थ निःशुल्क उपलब्ध हैं। जिन्हें आवश्यकता हो, डाक शुल्क रुपये 8/- भिजवाकर मंगवा सकते हैं।

1. स्वाभाविक आहार-शाकाहार
2. मूढ़ता की वकालत
3. शराब है सबसे खराब
4. णमोकार महामंत्र
5. उत्तम षोडष भावनाएँ
6. भगवान मल्लिनाथ चरित्र (पद्य)
7. गृहस्थ साधक टीप

-श्री जशकरण डागा-मंत्री, जीवदया मण्डल ट्रस्ट,
डागा सदन, संघपुरा, पो. टोंक-304001 (राज.)

बाल-स्तम्भ

प्रतिक्रिया के पार

उपाध्याय अमरमुनि जी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 मार्च 2010 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

श्रमण भगवान् महावीर के युग की बात है-कृतांगला नगरी में सिंहरथ नाम का राजा राज्य करता था। उसकी सुनन्दा नाम की रानी थी। सुनन्दा के एक पुत्र हुआ, जिसका नाम रखा गया 'दमसार'।

राजकुमार दमसार युवावस्था में पहुँचा तो माता-पिता उसके विवाह की तैयारियाँ करने लगे। परन्तु, इसी बीच दमसार ने प्रभु महावीर की वाणी सुनी तो उसका हृदय ज्ञान-वैराग्य की रसधार में गहरी डुबकी लगा गया, उसने माता-पिता के समक्ष दीक्षा का प्रस्ताव रखा।

उत्कट वैराग्य का प्रवाह उमड़ता है, तो उसे कोई रोक नहीं सकता। माता-पिता ने, परिजन एवं पुरजनों ने बहुत कुछ इधर-उधर के उतार चढ़ाव किए, एक से एक बढ़कर स्नेह-बन्धन डाले, किन्तु दृढ़-निश्चयी दमसार ने अत्यन्त आग्रह करके अन्ततः माता-पिता से दीक्षा की स्वीकृति ले ही ली और प्रभु महावीर के चरणों में जाकर मुनि-धर्म स्वीकार कर लिया।

दमसार ऋषि अब शास्त्राध्ययन करके तीव्र तपःसाधना में जुट गये। तपस्वी को ही उन्होंने अपनी धर्म-साधना का लक्ष्य बनाया। एक दिन भगवान् महावीर के पास आकर उन्होंने यावज्जीवन मासक्षपण तप करते रहने का अभिग्रह ले लिया। कठोर तपस्या से शरीर जर्जर हो गया, रक्त एवं मांस सूख गया, एक तरह से शरीर नसों व अस्थियों का ढांचामात्र रह गया।

एक बार दमसार ऋषि के मन में विकल्प अंकुरित हुआ-" इतनी कठोर तपस्या करने पर भी मुझे केवलज्ञान क्यों नहीं हो रहा है? कहीं मेरे

साधना-क्रम में भूल तो नहीं है? मैं भव्य तो हूँ न?'' मन शंकाकुल हुआ, तो वे उस समय चम्पानगरी के बाहर वन-खण्ड में पधारे हुए प्रभु महावीर के समवसरण में पहुँचे। 'वंदामि नमंसामि' के बाद प्रश्न पूछा, तो सर्वज्ञानी सर्वदर्शी प्रभु ने कहा- 'दमसार! मन को शंकाग्रस्त न करो! तुम भव्य हो, इसी जन्म में केवलज्ञानी बनोगे। पर, इधर तुम्हारे अन्तर-आत्मा में कषाय-भाव प्रबल हैं। आत्मा में जब तक कषाय की तपन रहती है, केवलज्ञान का कल्पांकुर अंकुरित नहीं हो सकता। चिन्तन और विवेक की अमोघ जलधारा से कषायानल को प्रशमित करो।''

दमसार ऋषि ने प्रभु को सभक्ति वन्दना करते हुए निवेदन किया- ''प्रभो! आज्ञा शिरोधार्य है, मैं कषायाग्नि को प्रशमन करने के लिए प्रयत्न करूँगा।''

एक बार मासक्षपण का पारणा था। प्रथम के दो प्रहर स्वाध्याय एवं ध्यान में गुजार कर तीसरे प्रहर में दमसार ऋषि प्रभु की आज्ञा लेकर पारणा लाने के लिए चम्पानगरी की ओर चले। भर गर्मी का महीना। सूर्य की प्रचण्ड किरणें आकाश से सिर पर ज्वाला बरसा रही थीं। पैरों के नीचे धरती दहकते अंगारों की तरह जल रही थी। तृषा से गला सूखा जा रहा था, क्षुधा से पैर लड़खड़ा रहे थे। पीड़ा से आकुल-व्याकुल मुनि किसी तरह चम्पानगरी के प्रवेशद्वार तक आये। सोचा-असह्य धूप हो रही है, नगर में जाने का कोई सीधा और निकट का रास्ता मिल जाये, तो ठीक है। तभी एक नागरिक किसी कार्यवश नगर से बाहर आता दिखाई दिया। आगन्तुक ने मुनि को सामने खड़ा देखा, तो बड़ा खिन्न हुआ। सोचा- 'मुण्डित सिर वाला साधु सामने मिल गया, अपशकुन हो गया। अब अभीष्ट कार्य में कैसी सफलता?'' वह वहीं थक गया। मुनि के प्रति उसके मन में बड़ा रोष था।

मुनि स्वयं यात्री के निकट आये और बोले-''भद्र! इस नगर की बस्ती में जाने का कोई सीधा रास्ता हो, तो बता दो, ताकि धूप में अधिक पीड़ा न उठानी पड़े।''

नागरिक मुनि को अपशकुन समझकर झुंझलाया हुआ तो था ही। सोचा- इस साधु को रास्ते की जानकारी नहीं है, अतः क्यों न इस मुण्ड को अपशकुन करने का मजा चखा दूँ? ऐसा रास्ता बताऊँ कि बस जीवन-भर याद करे।'' अविवेकी नागरिक ने मुनि को एक गलत रास्ते की ओर संकेत

करके कहा-''मुनिवर! इस रास्ते चले जाओ।''

सरल स्वभावी मुनि उसी रास्ते चल पड़े। परन्तु वह तो बड़ा विकट, ऊबड़-खाबड़, ऊँचा-नीचा और धूल से भरा हुआ ऐसा विकट रास्ता कि कदम भर चलना कठिन हो गया। नगर के मकानों की पीठ-ही-पीठ दिखाई दे रही थी, अतः किसी घर में जाने का रास्ता ही नहीं मिला। भूखे-प्यासे तपस्वी मुनि चिल-चिलाती धूप में जलते रेत पर चलते-चलते बड़े खिन्न हो गए। वेदना असह्य हो जाती है, तो वह धीरज का बांध तोड़ देती है। मुनि को नागरिक के अकारण दुष्ट व्यवहार पर बड़ा क्रोध आया। सोचा-''इस नगर के लोग कैसे दुष्ट हैं? बिना किसी स्वार्थ के मुझ जैसे साधु को भी यों संकट में डाल दिया। ऐसे दुष्टों को तो कड़ी शिक्षा देनी चाहिए।

क्रोधावेश में आए मुनि वहीं एक ओर खड़े होकर 'उत्थान श्रुत' के उद्वेग पैदा करने वाले अंश-विशेष का पाठ करने लगे। मंत्र-प्रभाव तो अचूक होता है। नगर के लोग जो जहाँ भी खड़े थे, घबराने लगे। उद्विग्न होकर इधर-उधर दौड़ने लगे। उन्हें लगा कि जैसे अभी कुछ अनिष्ट होने वाला है। भयंकर विपत्ति आने वाली है। मन-मस्तिष्क पर प्रलय-जैसा दृश्य चक्कर काटने लगा। नगर में भयंकर कोलाहल-सा हो गया। लोग हाय-हाय करने लगे। सबके मन और तन में जैसे जलन-सी होने लगी। किसी के समझ में नहीं आया कि यह सब क्या और क्यों हो रहा है ?

नगरजनों का भयानक कोलाहल मुनि के कानों तक पहुँचा। दूसरे ही क्षण लोगों को'हाय-हाय' करते हुए इधर-उधर दौड़ते भी देखा। बड़ी विचित्र स्थिति थी। कोई कहीं गिर रहा है, तो कोई चिल्ला रहा है, चीख रहा है और कोई पागल की तरह कपड़े फाड़ रहा है। यह सब देखकर मुनि का पहले का वह क्रुद्ध मन सहसा करुणार्द्र हो उठा। लोगों के कष्ट पर उन्हें दया आ गई और अपने क्रोध पर ग्लानि। भगवान् की वाणी स्मरण हो आयी- ''कषायानल को प्रशमित करो।'' मुनि ने तुरन्त ही अपने क्रोध को शान्त किया। अब वे ज्यों ही उत्थान-श्रुत के उद्वेग निवारण करने वाले प्रशमनकारी अंश विशेष को पढ़ने लगे, तो धीरे-धीरे नगर में शान्ति हो गई। सभी लोग पूर्ववत् अपने कार्यों में जुट गए। ऐसा लग रहा था, जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

दमसार ऋषि को अपने क्रोध पर पश्चात्ताप होने लगा। वे आहार ग्रहण किए बिना ही नगर से वापस लौट आए। प्रभु के समक्ष उपस्थित हुए, तो भगवान् ने कहा-''दमसार! जो श्रमण क्रोध-कषाय में प्रवृत्त होता है, वह

दीर्घ संसारी होता है, चिरकाल तक संसार-वन में भटकता है और क्रोध को शान्त करने वाला अल्प संसारी होता है, शीघ्र ही मोक्षपद प्राप्त करता है। श्रमण धर्म का सार उपशम है, क्षमा है।''

दमसार ऋषि ने प्रभु के समक्ष अपने क्रोध का प्रायश्चित्त किया और दृढ़ संकल्प के साथ क्षमा तथा शान्ति की साधना में जुट गया। मन से कषाय-भाव का विलय हुआ, तो सातवें दिन ही उन्हें 'केवलज्ञान' प्राप्त हो गया।

-'जैन इतिहास की प्रेरक कथाएँ' से साभार

प्रश्न :-

1. ''उत्कट वैराग्य का प्रवाह उमड़ता है, तो उसे कोई रोक नहीं सकता''- ऐसा क्यों? लिखिये।
2. शंकाकुल दमसार को भगवान् महावीर ने कैसे बोध दिया?
3. संधि विच्छेद कीजिए-शास्त्राध्ययन, यावज्जीवन, कषायानल, क्रोधावेश, करुणार्द्र।
4. 'असह्य वेदना धीरज का बांध तोड़ देती है'-समझाइये।
5. आप जिसे अपशकुन मानते हैं, उसे कारण सहित बताइये।
6. श्रमण-धर्म का सार क्या है?
7. क्या मंत्र प्रभावित करते हैं? इस सम्बन्ध में अपने विचार लिखिये।
8. परिजन एवं पुरजन में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

बाल-स्तम्भ [दिसम्बर-2009] का परिणाम

जिनवाणी के दिसम्बर-2009 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'उत्थान-पतन' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 102 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 25 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	अतिका मेहता-जोधपुर	25
द्वितीय पुरस्कार-200/-	रितिका मेहता-जोधपुर	24.5
तृतीय पुरस्कार-150/-	नेहा जैन-जयपुर	24
सान्त्वना पुरस्कार-100/-	रूपमाला छाजेड़-समदड़ी	23.5
	मनीषा गोलेच्छा-ब्यावर	23.5
	दीपक जैन-जोधपुर	23.5
	खुशी बोथरा-रतलाम	23.5
	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी	23.5

संस्मरण

आचार्यप्रवर का दसवर्षीय विचरण परिदृश्य

(विक्रम संवत् 2056, सन् 1999 के नागौर चातुर्मासोपरान्त)

श्री सौभाग्यमल जैन

(परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी महाराज सा एवं संतवृन्द ने सन् 1999 के नागौर चातुर्मास के पश्चात् राजस्थान की धरा से मध्यप्रदेश, गुजरात एंवं दक्षिण की ओर विचरण कर जिनशासन की महती प्रभावना की है। यहाँ पर उनके द्वारा कृत विचरण का एक स्थूल विवरण प्रस्तुत है।)

(अ) विभिन्न राज्यों में प्रवेश तिथि:-

1. चैत्र कृष्णा पंचमी, शनिवार, 25 मार्च, 2000 (नीमच-मध्यप्रदेश में प्रवेश)।
2. चैत्र कृष्णा अमावस्या, मंगलवार, 4 अप्रेल, 2000 (ग्राम बरड़िया-राजस्थान में प्रवेश)।
3. चैत्र शुक्ला एकादशी, शुक्रवार, 14 अप्रेल, 2000 (ग्राम-आम्बा-मध्यप्रदेश में प्रवेश)।
4. ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी, शुक्रवार, 26 मई, 2000 (ग्राम हाडाखेड़-महाराष्ट्र में प्रवेश)।
5. पौष कृष्णा चतुर्दशी, बुधवार, 1 जनवरी, 2003 (उमरगाँव-गुजरात में प्रवेश)।
6. फाल्गुन शुक्ला पंचमी, शनिवार, 8 मार्च, 2003(बोर्डी-महाराष्ट्र में प्रवेश)।
7. मृगशिर कृष्णा तृतीया, बुधवार, 12 नवम्बर, 2003(बोरगाँव-कर्नाटक में प्रवेश)।
8. माघ कृष्णा तृतीया, शुक्रवार, 28 जनवरी, 2005(वी.कोटा-आन्ध्रप्रदेश में प्रवेश)।
9. माघ कृष्णा पंचमी, रविवार, 30 जनवरी, 2005 (पेरनामबट-तमिलनाडु में प्रवेश)।
10. आषाढ कृष्णा दशमी, मंगलवार, 20 जून, 2006 (हनुमान मंदिर, आन्ध्रप्रदेश में प्रवेश)।
11. आषाढ कृष्णा त्रयोदशी, शुक्रवार, 23 जून, 2006 (सुन्दरपालियम-कर्नाटक में प्रवेश)।

12. मृगशिर कृष्णा अष्टमी, शनिवार, 1 दिसम्बर, 2007 (मुचण्डी-महाराष्ट्र में प्रवेश)।

13. पौष शुक्ला पंचमी, गुरुवार, 1 जनवरी, 2009 (उमरगाँव-गुजरात में प्रवेश)।

14. माघ कृष्णा त्रयोदशी, बुधवार, 13 जनवरी, 2010 (पलादर-राजस्थान में प्रवेश)।

(ब) विभिन्न राज्यों में तय की गई दूरी :-

1. मध्यप्रदेश में	362 किमी
2. महाराष्ट्र में	3816 किमी.
3. गुजरात में	1160 किमी.
4. कर्नाटक में	2186 किमी.
5. आन्ध्रप्रदेश में	60 किमी.
6. तमिलनाडु में	812 किमी.
7. केन्द्र शासित प्रदेश में (दादरा, नागर हवेली, सिलवासा)	23 किमी.
लगभग -	8419 किमी.

(स) मनाये गये पर्व दिवस :-

पौष शुक्ला चतुर्दशी

(आचार्य श्री हस्ती जन्म-दिवस)

1. कंवलियास (राज.)	2000	2. पाचौरा (महा.)	2001
3. ताहाराबाद (महा.)	2002	4. नवसारी (गुजरात)	2003
5. हावेरी (कर्नाटक)	2004	6. के.जी.एफ. (कर्नाटक)	2005
7. आवड़ी (तमि.)	2006	8. कडूर (कर्नाटक)	2007
9. पूना (महा.)	2008	10. ऊमरगाँव (गुजरात)	2009
11. पालनपुर (गुजरात)	2010		

होली-फाल्गुनी पूर्णिमा

1. चितौड़गढ़ (राज.)	2000	2. नासिक सिटी (महा.)	2001
3. नासिक रोड़ (महा.)	2002	4. सावटा (महा.)	2003
5. वाणावार (कर्नाटक)	2004	6. पाड़ी (चेन्नई-तमि)	2005
7. पल्लावरम् (चेन्नई-तमि)	2006	8. कोप्पल (कर्नाटक)	2007
9. पनवेल (महा.)	2008	10. सूरत (गुजरात)	2009

महावीर जयन्ती (चैत्र शुक्ला त्रयोदशी)

1. सैलाना (म.प्र.)	2000	2. येवला (महा.)	2001
3. सहापुर (महा.)	2002	4. लोनावला (महा.)	2003
5. पाण्डवपुरा (कर्नाटक)	2004	6. वड़पलनी(चेन्नई-तमि.)	2005
7. आलन्दूर (चेन्नई-तमि.)	2006	8. सिंधनूर (कर्नाटक)	2007
9. विले पार्ले (मुंबई-महा.)	2008	10. अंकलेश्वर (गुजरात)	2009

आदिनाथ जयन्ती (चैत्र कृष्णा-अष्टमी)

(आचार्य भगवंत पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का जन्म-दिवस)

1. नीमच (म.प्र.)	2000	2. ओझरमिग (महा.)	2001
3. घोटी (महा.)	2002	4. विरार (महा.)	2003
5. अरसीकेरे (कर्नाटक)	2004	6. पुन्नमल्ली (तमि.)	2005
7. गुडवान्चेरी (तमि.)	2006	8. होस्पेट (कर्नाटक)	2007
9. घाटकोपर (महा.)	2008	10. अमरोली (सूरत-गुज.)	2009

अक्षय तृतीया

1. धार (म.प्र.)	2000	2. औरंगाबाद (महा.)	2001
3. भायन्दर (महा.)	2002	4. पूना (महा.)	2003
5. मैसूर (कर्नाटक)	2004	6. चैन्नई (तमि.)	2005
7. किलपाक (चेन्नई-तमि.)	2006	8. रायचूर (कर्नाटक)	2007
9. विलेपार्ले (मुम्बई-महा.)	2008	10. बड़ौदा (गुजरात)	2009

दीक्षा प्रसंग

(आचार्यप्रवर की आज्ञा से अन्यत्र हुई दीक्षाओं को छोड़कर)

1. जलगाँव (महा.) 4 दीक्षा	2000	2. घोटी (महा.) 1 दीक्षा	2002
3. सूरत (गुज.) 1 दीक्षा	2003	4. पूना (महा.) 4 दीक्षा	2003
5. शिवमोगा (कर्ना.) 1 दीक्षा	2004	6. शिवमोगा (कर्ना.) 1 दीक्षा	2007
7. रायचूर (कर्ना.) 1 दीक्षा	2007	8. बैंगलोर (कर्ना.)1 दीक्षा	2007
9. मुंबई (महा.) 4 दीक्षा	2008		

(4 संत + 14 सतियाँ = कुल 18 दीक्षाएँ)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (2)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी (अध्यात्म-चेतना वर्ष) के उपलक्ष्य में अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग एक-तीर्थंकर खण्ड)** के आधार पर मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह दूसरी किश्त है। प्रतियोगी को अपने उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते, (अंग्रेजी में) दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 मार्च 2010 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त शताब्दी वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। *- मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1

(पृष्ठ 51 से 110 तक से प्रश्न)

(अ) किसने किससे कहा-

1. मैं आपके देश में रहने वाला आपका आज्ञाकारी किंकर हूँ।
2. आज से 12 वर्ष पर्यन्त कोई भी राजपुरुष प्रजाजन के घर में प्रवेश नहीं करे।
3. कृपाकर आप हमारी ओर से प्रीतिदान ग्रहण करें।
4. तुम ऐश्वर्य का उपभोग कर रहे हो, किन्तु मेरा ऋषभ कहाँ पर होगा?
5. निराश न करो नाथ, कुछ न कुछ तो हमारी भेंट स्वीकार करो।

(आ) अंकों में उत्तर दीजिये।

6. लगभग.........वर्ष पूर्व की एक घटना का उल्लेख करते हैं।
7. पांच से बारह तक के.........गुणों को प्रतिहार्य कहा गया है।

8. दूसरे से पांचवें तक.........अतिशय जन्म के होते हैं।

9. भरत केवली..........पूर्व तक कुमारावस्था में रहे।

10. ....पदातियों की सेना थी।

(इ) शब्दों के अर्थ लिखिये।

11. आगासगयं चक्कं।

12. भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्माइक्खइ।

13. अण्णउत्थियपावयाणिया वि य णमागया वंदंति।

14. अहोसिरा कंटया जायंति।

15. अणावुट्ठि न भवइ।

(ई) हाँ या ना में उत्तर दीजिए?

16. भिक्षाकाल पर्यन्त 10 मास और 13 दिन तक प्रभु निर्जल और निराहार रहे।

17. भगवान् ऋषभदेव का प्रथम पारणा अक्षय तृतीया के दिन हुआ।

18. श्रेयांस ने उत्कृष्ट श्रद्धा-भक्ति पूर्वक खीर प्रभु की अंजलि में उंडेली।

19. मैं तो समझती थी कि मेरा प्रिय पुत्र ऋषभ कष्टों में होगा।

20. सिन्धु देवियों का जीताचार है कि वे चक्रवर्ती को भेंट समर्पित करें।

(ई) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये।

21. ध्वजपताका..........का विहार के समय आगे चलना।

22. ....अतिशय देखकर मरुदेवी को केवलज्ञान हुआ।

23. उनका सम्पूर्ण भरत क्षेत्र पर.............राज था।

24. ....भरत के समक्ष भेंट लेकर उपस्थित हुई।

25. प्रमाण के क्रम से वे...............के समीप पहुँचे।

चारित्र

1. दूध और पानी की मिलावट को जैसे हंस अपनी चोंच से अलग करता है, उसी तरह जो क्रिया या साधना आत्मा से कर्मों के समूह को अलग करती है, उसका नाम है-चारित्र।
2. यदि विषय-कषाय नहीं घटते हैं, तो कहना चाहिये कि अब तक हमारे जीवन में चारित्र नहीं है।

-'गजेन्द्र सूक्ति-सुधा' से संकलित

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

जवाहर अनमोल संगीत वाटिका एवं जीवन सूत्र (खण्ड 1 एवं 2)*- *प्रस्तोता*-** जवाहरलाल बाघमार (कोसाणा वाले), ***प्रकाशक*-** Jawahar lal Bagmar Jain, 6, Chandrappa Mudali Street, Sowcarpet, Chennai-600079, Ph. 044-25297034/25292229, Mobile-099405-71130, ***पृष्ठ- 384+336, ***मूल्य*** 125 रुपये (पूर्ण सेट), ***प्रथम संस्करण***- 30 दिसम्बर 2009

भजन, गीत आदि से सम्बद्ध पूर्व में लगभग 12 पुस्तकों के प्रकाशक श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ एवं भक्तिप्रवण श्री जवाहरलाल जी बाघमार को गीत एवं भजनों को गाकर प्रस्तुत करने में अनिर्वचनीय आनन्द मिलता है। जीवन-निर्माण में उपयोगी सुविचारों का भी वे संकलन करते रहते हैं। उनकी इसी प्रवृत्ति के प्रतिफल हैं- जवाहर अनमोल संगीत वाटिका एवं जीवन सूत्र के दो खण्ड। ये दोनों खण्ड सामायिक करने वाले प्रत्येक साधक के लिए उपयोगी हैं।

प्रथम खण्ड में सामायिक में दैनिक उपयोगी पाठ, मंगलपाठ, सामायिक सूत्र सार्थ, भक्तामर स्तोत्र सार्थ, 200 से अधिक प्रार्थनाएँ, गीत एवं भजन हैं, साथ ही आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी महाराज पर रचित अनेक भजन एवं गीतों का अद्भुत उपयोगी संकलन है। आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज रचित प्रसिद्ध कुछ भजन भी संगृहीत हैं। अन्त में प्रत्याख्यान पाठ एवं प्रत्याख्यान समय सारिणी है।

द्वितीय खण्ड में 300 से अधिक विषयों पर सुन्दर विचार संकलित हैं। इनमें कुछ विचार युवाओं, बालकों, नारियों, वृद्धों एवं स्वास्थ्य से सम्बद्ध हैं। सभी विचार जीवन को सकारात्मक ऊर्जा एवं सम्यक् सोच प्रदान करते हैं तथा भटके हुए मानव को दिशाबोध कराते हैं।

दोनों खण्डों के सम्पादन एवं मुद्रण का कार्य डॉ. भद्रेश जैन, जैन प्रकाशन केन्द्र, चेन्नई ने सम्पन्न किया है। उल्लेखनीय है कि इन पुस्तकों से प्राप्त

राशि का व्यय स्वधर्मी बन्धुओं की सेवा में किया जाएगा।

सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र- पुरुषोत्तम जैन एवं रवीन्द्र जैन, ***प्रकाशक***- 26 वीं महावीर जन्म कल्याणक शताब्दी संयोजिका समिति, पंजाब, महावीर स्ट्रीट, पुराना बस स्टैण्ड, मालेर कोटला-948023 जिला-संगरूर (पंजाब), फोन : 098158-05555, ***अन्य प्राप्ति स्थान***- भूषण दी हट्टी, सर्राफा बाजार, अम्बाला शहर (पंजाब), ***पृष्ठ***- 284+ अनेक चित्र, ***मूल्य***- 500 रुपये, ***द्वितीयावृत्ति***- अगस्त, 2009

चरम तीर्थङ्कर प्रभु महावीर के जीवन चरित्र पर बीसवीं शती में अनेक ग्रन्थ लिखे गए। पंजाबी भाषा में जैन साहित्य के प्रथम लेखक के रूप में प्रसिद्ध श्री पुरुषोत्तम जैन एवं श्री रवीन्द्र जैन ने हिन्दी भाषा में भी लेखन प्रारम्भ किया है। पंजाबी भाषा में उनकी लगभग 50 पुस्तकें हैं, जिनमें एक पुस्तक भगवान् महावीर के जीवन पर भी है। लेखकद्वय ने श्वेताम्बर एवं दिगम्बर स्रोतों के आधार पर साध्वी स्वर्णकान्ता जी की प्रेरणा से 'सचित्र भगवान् महावीर जीवन चरित्र' का लेखन किया है। उन्होंने अपनी कृति में आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज रचित जैनधर्म का मौलिक इतिहास, स्व. श्री चौथमल जी महाराज कृत भगवान् महावीर का आदर्श जीवन, मुनि श्री कल्याणविजय जी विरचित श्रमण भगवान् महावीर, आचार्य देवेन्द्रमुनि की कृति भगवान् महावीर:एक अनुशीलन आदि रचनाओं का उपयोग किया है। पुस्तक 5 खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में श्रमण संस्कृति की रूपरेखा, आरों का संक्षिप्त विवेचन एवं तीर्थंकर-परम्परा का परिचय दिया गया है। द्वितीय खण्ड में भगवान् महावीर के पूर्वभवों, महावीर कालीन परिस्थितियों आदि के वर्णन के साथ प्रभु के जन्मोत्सव, बाल्यकाल, विवाह एवं दीक्षा-कल्याणक का निरूपण है। तृतीय खण्ड साधनाकाल से सम्बद्ध है। चतुर्थ खण्ड में केवलज्ञान महोत्सव, गणधरों के साथ संवाद एवं तीर्थ स्थापना का विवेचन है। पंचम खण्ड में प्रभु महावीर द्वारा किए गए धर्म प्रचार का वर्णन है। ग्रन्थ में यथावश्यक चित्रों का प्रयोग किया गया है। भगवान् महावीर के जीवन, साधनापक्ष एवं प्रमुख उपदेशों की जानकारी इस ग्रन्थ से हो जाती है।

शब्द कुछ और ही है! अर्थ कुछ और ही है! (अद्भुत

चालीसा)- शान्तप्रकाश सत्यदास, ***प्रकाशक***- अनन्तानन्द प्रकाशन, स्टार स्टूडियो, इन्दिरा चौक, नागदा जंक्शन (म.प्र.)-456335, दूरभाषः 07366-238450, ***पृष्ठ***-16, ***मूल्य***-20 रुपये, ***सन्***-2009

अर्थानुसारी शब्दों का प्रयोग तो सामान्य रूप से हर भाषा में होता ही है, किन्तु हिन्दी भाषा में ऐसे अनेक शब्द प्रयुक्त हैं जिनका अर्थ कुछ और ही है। लेखक ने ऐसे 40 पद्यों की रचना की है जिनमें शब्द और अर्थ की भिन्नता का दिग्दर्शन कराया है, उदाहरणार्थ एक पद्य उद्धृत है-

गुलाबजामुन में गुलाब है न जामुन है
मूँगफली की फली में मूँग का पता नहीं।
संग-संग मर-मर नहीं जाता जो पत्थर,
क्यों है संगमरमर किसी को पता नहीं।
बन्दर के अन्दर न बन्दर दिखाई देते
सुरंग में दूर तक रंग का पता नहीं
फास्ट किए बिना सब करते हैं ब्रेकफास्ट
जो मन्त्री हैं, उन्हें किसी मन्त्र का पता नहीं।

स्वावलम्बी चिकित्सा का मूल सूत्र

डॉ. चंचलमल चोरडिया

प्रत्येक मनुष्य स्वस्थ रहना चाहता है, परन्तु चाहने मात्र से तो स्वास्थ्य नहीं मिलता। उपचार से पूर्व रोगी को यह जानना और समझना आवश्यक है कि रोग क्या है? रोग कब और क्यों होता है? उसके प्रत्यक्ष-परोक्ष कारण क्या हो सकते हैं? रोग के सहायक एवं विरोधी तत्त्व क्या हैं? व्यक्ति रोग तो स्वयं पैदा करता है, परन्तु दवा और डॉक्टर से ठीक करवाना चाहता है। क्या उसका श्वास अन्य व्यक्ति ले सकता है? क्या उसका खाया हुआ भोजन दूसरा व्यक्ति पचा सकता है? प्रकृति का सनातन सिद्धान्त है कि जहाँ समस्या होती है, उसका समाधान उसी स्थान पर होता है। अतः जो रोग शरीर में पैदा होते हैं, उनका उपचार शरीर में अवश्य होना चाहिये।

-'आरोग्य आपका' से साभार

गीत

जीव यतना

श्री मगनचन्द जी जैन

यतना करलो रे जीवों की, यही है धर्म अहिंसा सार।।टेर।।
उठते-बैठते, चलते-फिरते, सदा देख लो भाई।
खाते-पीते, सोते-जागते, यतना करो चितलाई।
प्रमाद चर्या में रत रहके, देओ न इनको मार।।
यतना करलो रे.........।

बहुत बुरा होता प्राणी वध, सुनलो सब नर-नारी।
जो तुम हिंसा करो जीव की, बनो नरक अधिकारी।
किया जैसा फल पाओगे, लेओ चित्त में धार।।
यतना करलो रे.... ....।

मारन-काटन ताड़न-छेदन, वध-बन्धन मत करना।
किसी तरह से पीड़ित करके दुःखी उन्हें मत करना।
अस्त्र-शस्त्रों की तेजधार से, उन पर करो न वार।।
यतना करलो रे.........।

सबको प्राण प्यारे होते हैं, मरण अप्रिय होता।
तन-मन की पीड़ा पा करके, व्याकुल होकर रोता।
सीख यही महावीर प्रभु की, रख जीवों की सार।।
यतना करलो रे...........।

शुद्ध भावना मन में धारो, करलो नेक कमाई।
वैर भावना दूर भगाओ सबकी करो भलाई।
सबसे प्रेम-प्रीति करने का, करो नियम स्वीकार।।
यतना करलो रे............।

समता भाव रखो निज मन में, राग-द्वेष कर दूर।
हृदय निर्मल बन जायेगा, कर्म-बन्ध हो चूर।
'मगन' जीव हिंसा से बचकर कर जीवन निस्तार।।
यतना करलो रे............।

- सेवानिवृत्त अध्यापक,
फाजिलाबाद (हिण्डौन) जिला-करौली (राज.)

पाठक-अभिमत

मैं पिछले 16 वर्षों से जिनवाणी नियमित रूप से पढ़ रहा हूँ। पत्रिका की साज-सज्जा उत्कृष्ट एवं काबिले तारीफ है। इसमें प्रकाशित लेख ज्ञानवर्द्धक एवं प्रेरणादायक होते हैं।

जिनवाणी पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि इसके सम्पादक हिन्दी, अंग्रेजी एवं संस्कृत तीनों ही भाषाओं के मर्मज्ञ हैं। उनके सम्पादकीय इतने बेहतरीन होते हैं कि मैं हर माह जिनवाणी की प्रतीक्षा करता हूँ।

अक्टूबर अंक में मोबाइल पर सम्पादकीय लिखकर आपने इस पत्रिका की गरिमा में चार चांद लगा दिये। इसके लिए मैं आपको साधुवाद देता हूँ।

जिनेश्वर प्रभु से प्रार्थना है कि वह आपको हमेशा स्वस्थ एवं प्रसन्न रखे, ताकि आपकी लेखनी का लाभ हमें निरन्तर प्राप्त होता रहे।

-डॉ. एस.एल. नागौरी, बूंदी (राज.)

बाल-स्तम्भ पाठक-प्रतिक्रिया

मैं जिनवाणी पत्रिका को हमेशा पढ़ता हूँ। मुझे यह बहुत अच्छी लगती है। इससे हमें कई अच्छी-अच्छी बातों की जानकारियाँ मिलती हैं। नैतिक-आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक संस्कारों का ज्ञान मिलता है, जिससे हमारा मन निर्मल बनता है तथा भविष्य भी उज्ज्वल बनता है।

मैं जिनवाणी की प्रत्येक रचना को पढ़ता हूँ तथा पढ़ने के बाद उस पर चिंतन-मनन करता हूँ। मैं एक विद्यार्थी हूँ, अतः मुझे बाल-स्तम्भ बहुत अच्छा लगता है, हमेशा नयी-नयी कथा-कहानियाँ पढ़ने को मिलती हैं, तथा उन कथा-कहानियों से हमें अच्छी-अच्छी शिक्षाएँ एवं प्रेरणाएँ मिलती हैं, जो हमारे जीवन को संवारती भी हैं तथा चिन्तन-मनन करने की शक्ति भी बढ़ाती हैं। मैं प्रत्येक माह के बाल-स्तम्भ के उत्तर भेजता हूँ। मेरा नाम भी कई बार आ चुका है, जिससे मेरा उत्साह दुगुना हो जाता है। जब प्रोत्साहन पुरस्कार राशि मेरे हाथ में आती है, तो मैं भी पुरस्कार दाताओं से प्रेरणा लेकर उस राशि में से 5 प्रतिशत राशि का दान कर देता हूँ। दान करने के पश्चात् मैं उस शेष पुरस्कार राशि का सदुपयोग करता हूँ।

-सौरभ भण्डारी, पीपाड़ शहर (राज.)

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी 'अध्यात्म चेतना वर्ष'

आचार्य हस्ती भजन-गीत गायन प्रतियोगिता

आचार्य श्री हस्ती का व्यक्तित्व बहुआयामी था और कृतित्व भी। आगममर्मज्ञ, इतिहास मनीषी, अध्यात्मयोगी, समाज-सुधारक और कुशल प्रवचनकार होने के साथ-साथ वे एक श्रेष्ठ कवि भी थे। उनके द्वारा रचित गीत, भजन, पद, काव्य आदि विविध शिक्षाओं एवं अनुभूतियों से अनुप्राणित हैं। विविध विषयों पर रचित उनके काव्य जीवन में शान्ति, आनन्द और पुनीत प्रेरणाओं का संचार करते हैं। जीवन के सुख-दुःख तथा खट्टे, मीठे क्षणों में आचार्य श्री हस्ती द्वारा रचित गीत, भजन, पद किसी भी व्यक्ति के चित्त को आलोकित कर सकते हैं। जन-जीवन में उनके भजन चर्चित बनें एवं समाज में संस्कार-सरिता बहती रहे, इसी मंगल-भावना से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर "**आचार्य हस्ती भजन-गीत गायन प्रतियोगिता**" का आयोजन किया जा रहा है।

देश-विदेश में जहाँ-जहाँ भी संघ एवं संघ से सम्बद्ध संगठनों की शाखाएँ या उपशाखाएँ है वहाँ पर आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के 19वें स्मृति-दिवस, द्वितीय वैशाख शुक्ला अष्टमी दिनांक 21 मई 2010 को इस प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया है। इस प्रतियोगिता में अधिक से अधिक बालक-बालिकाएँ, युवक-युवतियाँ और श्रावक-श्राविकाएँ भाग लें। जैन-जैनेतर सभी आयु के लोग इसमें भाग ले सकते हैं।

प्रतिभागी को आचार्य श्री हस्ती द्वारा रचित कोई एक श्रेष्ठ गीत, भजन या काव्य कण्ठस्थ करना होगा तथा प्रतियोगिता के दौरान मंच पर सुर, लय और हावभावों के साथ प्रभावी प्रस्तुति देनी होगी। आचार्य श्री पर रचित भजनों, गीतों अथवा स्तुतियों को भी इसी प्रकार प्रस्तुत किया जा सकेगा, किन्तु आचार्य हस्ती रचित रचना की प्रस्तुति को प्राथमिकता रहेगी। प्रतियोगिता समिति द्वारा नियुक्त विशेषज्ञ निर्णायकों द्वारा अंक दिये जायेंगे तथा प्रत्येक शाखा में तीन प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जायेगा। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहने वालों को क्रमशः 1100/-, 800/-, 500/- रुपये पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये जायेंगे। कम से कम 20 प्रतिभागी होने पर किसी भी शाखा पर प्रतियोगिता आयोजित कराई जा सकेगी। बड़ी शाखाओं में न्यूनतम 30 प्रतिभागी होने चाहिए। सभी स्थानों पर विजेता रहे प्रतिभागी की एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समापक प्रतियोगिता

आयोजित कराई जाएगी। समापक प्रतियोगिता में विजेता घोषित होने वाले को आकर्षक पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा। आचार्य श्री हस्ती द्वारा रचित भजन, गीत आदि निम्नांकित पुस्तकों में उपलब्ध हैं-(1) गजेन्द्र पद मुक्तावली- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित, फोन नं. 0141-2575997 (2) नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं- अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर से उपलब्ध, फोन नं. 0291-2636763 (3) भजन की अनेक पुस्तकों में भी संकलन।

जो शाखाएँ या उपशाखाएँ इस प्रतियोगिता का आयोजन कराना चाहती हैं वे निम्नांकित पते पर सम्पर्क स्थापित करें तथा प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी स्थानीय अध्यक्ष, मंत्री, युवक परिषद् एवं श्राविका मण्डल के पदाधिकारी से सम्पर्क स्थापित करें। प्रतियोगिता के लिए सूचना 15 अप्रेल 2010 तक निम्नांकित पते पर प्रेषित करना आवश्यक है -

विरदराज सुराणा, मंत्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

दूरभाष : 0141-2575997, फैक्स : 0141-2570753, मो. 9314012415

ईमेल- jinvani@yahoo.co.in, sgpmandal@yahoo.in

'एक ही बात हरदम रटें'

श्री शिखरचन्द छाजेड़

एक ही बात
हरदम रटें
आसक्ति घटे
कर्म कटें
भव-शृंखला घटे
मोक्ष-मार्ग झटपट पटे
बढ़े कोशिश कि- आसक्ति घटे - आसक्ति घटे।
जीवन पल-पल घटे
कौन जाने कब आयुष्य डोर कटे
इसलिये अज्ञान-तिमिर छँटे
बस एक ही बात हरदम रटें- आसक्ति घटे - आसक्ति घटे.....।।

-करही-451220 (मध्यप्रदेश)

जिनवाणी पत्रिका की सदस्यता ग्रहण करने हेतु प्रारूप

(इच्छुक पाठक जो जिनवाणी की सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं निम्नांकित प्रारूप में अपनी सम्पूर्ण जानकारी भरकर नीचे लिखे पते पर प्रेषित करें।)

मैं..............................पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री..............................

पता..

....

फोन नं. :..............................मो. :..............................

ई-मेल..

जिनवाणी मासिक पत्रिका की आजीवन/त्रैवार्षिक सदस्यता ग्रहण करना चाहता हूँ। इस हेतु मैं 500/-रुपये, 120/-रुपये नकद/चैक/ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। कृपया मुझे पत्रिका नियमित प्रेषित करावें।

हस्ताक्षर

मण्डल द्वारा प्रकाशित साहित्य की सदस्यता हेतु प्रारूप

(सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित साहित्य की आजीवन सदस्यता के इच्छुक पाठक निम्नांकित प्रारूप में अपनी सम्पूर्ण जानकारी भरकर नीचे लिखे पते पर प्रेषित करें।)

मैं..............................पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री..............................

पता..

....

फोन नं. :..............................मो. :..............................

ई-मेल..

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित साहित्य की आजीवन सदस्यता ग्रहण करना चाहता हूँ। इस हेतु मैं 3000/- नकद/चैक/ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। कृपया मुझे साहित्य नियमित प्रेषित करावें।

हस्ताक्षर

प्रारूप भेजने का पता– विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.), फोन नं. 0141-2575997।

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 फरवरी, 2010)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9	14 जनवरी 2010 को सांचौर पधारे। सांचौर 1 सप्ताह विराजने के पश्चात् मार्गवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए धोरीमन्ना पधारे। अग्रविहार बाड़मेर की ओर चल रहा है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6	धर्मनगरी पाली में सुख शांतिपूर्वक विराजमान हैं। कुछ दिन पाली में ही विराजने की संभावना है।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 10	सामायिक-स्वाध्याय भवन घोड़ों का चौक, जोधपुर में विराजमान हैं।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	महावीर कॉलोनी, अजमेर विराज रहे हैं। अजमेर के उपनगरों में विचरण की संभावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 8	नागपुर से विहार कर पारसिवनी पधारे हैं। अभी कुछ दिन यहाँ विराजने की संभावना है।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 8	कैलाशनगर-सूरत में विराजित है। विहार अहमदाबाद की ओर संभावित है।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	आदर्श नगर-सवाईमाधोपुर विराजित हैं। उपनगरों में विचरण की संभावना है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7	पाली विराजित हैं। विभिन्न उपनगरों में विचरण संभावित है।

महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 7	मदनगंज-किशनगढ़ विराजित हैं। अजमेर होते हुए ब्यावर की ओर विहार संभावित है।
सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 3	बारणी से गोटन होते हुए मेड़ता की ओर विहार चल रहा है।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7	अरसीकेरा (कर्नाटक) विराजित हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	नागौर से पांचला सिद्धा की ओर विहार चल रहा है।
महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3	पीपाड़ शहर से मेड़ता की ओर विहार चल रहा है।
महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4	यवतमाल विराजमान है।

आचार्यप्रवर के पावन चरण राजस्थान की पुण्य धरा पर

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 उत्तर गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों में धर्माचरण की लहर व्याप्त करते हुए पालनपुर पधारे, जहाँ पौष शुक्ला चतुर्दशी 30 दिसम्बर 2009 को परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. का 100वाँ जन्म-दिवस तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। इस दिन उल्लास का अपूर्व वातावरण था। 3 दिन चले साधना-कार्यक्रम से सबका मन उल्लसित रहा। **सम्पूर्ण देश में अध्यात्म-चेतना वर्ष का शंखनाद हुआ** तथा जन्म-दिवस पर अनेक तप-त्याग के कार्यक्रम आयोजित हुए। पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ईस्वीय नववर्ष 1 जनवरी 2010 को पालनपुर विराज रहे थे। नववर्ष के दिन ही पालनपुर के तेरापंथ भवन से प्रातः 9 बजे 5 कि.मी. विहार कर महावीर धाम पधारे। मंगल विहार में पालनपुर वासियों के साथ सूरत से गुजरात संभाग के क्षेत्रीय प्रधान श्री सुनील जी नाहर, श्री राजीव जी नाहर, जोधपुर से वीरपिता श्री इन्दरचन्द जी गांधी, वीरपिता श्री अमरचन्द जी लोढ़ा, चेन्नई से हुण्डीवाल परिवार, अहमदाबाद से श्री महावीर जी मेहता, श्री प्रसन्नराज जी श्रीश्रीमाल आदि

श्रावकों ने सेवा का लाभ लिया। नववर्ष के दिन अनेक भक्तजनों ने गुरुदेव के दर्शन एवं मांगलिक श्रवण का लाभ लिया।

आचार्यप्रवर महावीर धाम से सायंकाल 3 कि.मी. चल कर पारसधाम पधारे तथा 2 जनवरी को श्रावकरत्न श्री कांतिलाल जी बाफना की फैक्ट्री बाफना उद्योग में आपका विराजना हुआ। यहाँ से मोटा रसाणा होते हुए 3 जनवरी को डीसा पधारे। यहाँ पर श्री अनुज जी मुणोत सुपुत्र श्री अमरचन्द जी मुणोत-मुम्बई ने दर्शनों का लाभ लिया। 4 जनवरी को नागौर श्री संघ ने आगामी चातुर्मास संयुक्त रूप से नागौर में करने हेतु भावभीनी विनति प्रस्तुत की। **जरखोदा निवासी श्री दामोदर जी जैन ने अपनी लाडली सुपुत्री विरक्ता सुश्री दीपिका जैन का दीक्षा हेतु आज्ञा पत्र प्रदान कर स्वयं को एवं परिवार को कृतार्थ किया।**

4 जनवरी को डीसा से विहार कर वर्द्धमान जैन विहार धाम पधारे। यहाँ से कंसारी, झेरड़ा, रमुण होते हुए 8 जनवरी को धानेरा पदार्पण हुआ। **धानेरा में मैसूर के श्री सुभाष जी धोका एवं श्री बुधमल जी बाघमार ने महासती मण्डल के चातुर्मास हेतु अपनी भावभीनी विनति प्रस्तुत की।** बीजापुर से सहमंत्री श्री धर्मीचन्द जी भंडारी, श्री सतीश जी रूणवाल आदि छः सदस्यों ने तीन दिन सेवा का लाभ लिया। धानेरा से आपश्री 10 जनवरी को थावर पधारे तथा 11 को विंछीवाड़ी पधारे, जहाँ शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना-जलगांव तथा युवक परिषद् के कार्याध्यक्ष श्री राजकुमार जी गोलेछा-पाली आदि महानुभावों ने दर्शन एवं सेवा का लाभ लिया। 12 जनवरी को गुजरात क्षेत्र के अन्तिम गांव नेनावा पधारे। यहाँ नागौर श्रीसंघ ने पुनः चातुर्मास हेतु विनति प्रस्तुत की। यहाँ की सेवा-भावना सराहनीय रही। **13 जनवरी को आचार्य श्री हस्ती का तारीख से 100वाँ जन्म-दिवस था एवं सहज संयोग से आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का राजस्थान की पावन धरा पलादर में प्रवेश हुआ।** यहाँ पर अहमदाबाद से श्री पदमचन्द जी कोठारी, श्री ललित जी गोलेछा, श्री महावीर जी मेहता ने विहार सेवा का लाभ लिया। श्री रतनलाल जी बाफना के साथ समागत **श्री रमेश जी कोठारी ने अपनी सुपुत्री विरक्ता सुश्री कोमल जी कोठारी का आज्ञा पत्र श्रीचरणों में अर्पित किया।** पलादर से सायंकाल विहार कर प्रतापपुरा पधारे एवं मकर संक्रान्ति के दिन 14 जनवरी को सांचौर पदार्पण हुआ।

सांचौर में प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण एवं अन्य धार्मिक प्रवृत्तियों में सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यहाँ माघ शुक्ला द्वितीया 17 जनवरी 2010 को आचार्य हस्ती का 90वाँ दीक्षा-दिवस उत्साहपूर्वक 5-5 सामायिक के साथ मनाया गया। बहुसंख्यक श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक-आराधना का लाभ लिया। इस पावन-प्रसंग पर परमपूज्य आचार्यप्रवर, तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी, श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी एवं श्री बलभद्रमुनि जी ने प्रवचनों के माध्यम से आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के गुणगान किये। इस दिन जोधपुर से आए हुए युवा कार्यकर्ताओं ने दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ लिया।

अहमदाबाद से सांचौर तक विहार सेवा का विशेष लाभ अहमदाबाद के युवा कार्यकर्ताओं ने लिया, जिनमें श्री ललित जी गोलेछा, श्री महावीर जी मेहता, श्री हेमन्त जी मेहता, श्री भरत जी मेहता, श्री प्रसन्न जी श्रीश्रीमाल, श्री अशोक जी कुम्भट, श्री संजय जी कोठारी, श्री शीतल जी कोठारी, श्री महेन्द्र जी चौपड़ा, गुजरात के बीजापुर से सांचौर तक श्री कांतिलाल जी बाफना, श्री प्रवीण जी बाफना, श्री कमलेश जी बाफना ने अच्छी विहार सेवा दी। जोधपुर से वीरपिता श्री अमरचन्द जी लोढ़ा, वीरपिता जी इन्दरचन्द जी गांधी ने विहार सेवा का पूरा लाभ लिया। दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में सांचौर में श्री बापूलाल जी मेहता ने 108 तेले करने का संकल्प ग्रहण किया। मुम्बई में उन्होंने आचार्यप्रवर के बालकेश्वर चातुर्मास में शीलव्रत का खंद किया था। पालनपुर से सांचौर तक संतों का विहार दो सिंघाड़ों में चलता रहा।

सांचौर से 22 जनवरी को विहार कर आचार्यप्रवर ठाणा 5 से करोला, दमाना, जोहड़ा, रणोधर, गांधव, रामजी की गोल, बोर, गणेशियों की ढाणी होते हुए 29 जनवरी को धोरीमन्ना पधारे। यहाँ से 30 जनवरी को विहार कर खत्रियों की बेरी पदार्पण हुआ है। सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा. आदि ठाणा 4 आपके आगे-आगे विहार कर रहे हैं।

आचार्यप्रवर का अग्र विहार बाड़मेर की ओर

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9 ने पालनपुर से पाली एवं जोधपुर का मार्ग छोड़कर सांचौर का मार्ग लिया। इस मार्ग से प्रायः साधु-संतों का विचरण-विहार कम ही होता है। इस मार्ग में संतों को अनेक प्रकार के परीषहों का भी अनुभव हुआ, किन्तु समत्व की साधना के साथ आप निरन्तर विहार करते हुए राजस्थान में मारवाड़ की भूमि की ओर बढ़ रहे हैं। बाड़मेर एवं बालोतरा की

पुरजोर विनति को ध्यान में रखते हुए पूज्यप्रवर ने जोधपुर पदार्पण से पूर्व सिवांची पट्टी के क्षेत्रों को फरसने का मानस बनाया एवं आपका विहार अब बाड़मेर की ओर संभावित है। **फाल्गुनी चौमासी 28 मार्च 2010 के अवसर पर आपके बाड़मेर विराजने की संभावना है।** बाड़मेर के श्रद्धालु विहार-सेवा का भावनापूर्वक लाभ ले रहे हैं।

बाड़मेर स्थानक का पता- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, वीर दुर्गादास मार्ग, गुप्ता ट्रान्सपोर्ट के पास, बाड़मेर-344001 (राज.)

सम्पर्क सूत्र-(1) श्री दिनेश जी लुणिया-अध्यक्ष, लुणिया ट्रांसपोर्ट कम्पनी, राठी धर्मशाला के पीछे, बाड़मेर (राज.) 344001, फोन-02982-230301, 9829792201 (2) श्री जितेन्द्र जी बांठिया-मंत्री, मैसर्स विमलकुमार महेन्द्रकुमार, लक्ष्मी बाजार, बाड़मेर (राज.), फोन- 9929760675

चार दीक्षाओं की स्वीकृति बालोतरा को

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने सांचौर (सत्यपुर) में बसंत पंचमी के पावन प्रसंग पर 20 जनवरी 2010 को चार दीक्षाओं की घोषणा की है। ये चारों दीक्षाएँ द्वितीय वैशाख शुक्ला द्वितीया, शनिवार, 15 मई 2010 को बालोतरा में सम्पन्न होंगी। बालोतरा श्रीसंघ एवं सालेचा जागीरदार परिवार की पुरजोर विनति को मान्य करते हुए गुरुदेव ने यह लाभ बालोतरा संघ को दिया है। दीक्षित होने वाली मुमुक्षु बहिनों के नाम इस प्रकार हैं- (1) मुमुक्षु सुश्री ट्विंकल सालेचा सुपुत्री श्री महावीरचन्द जी सालेचा (जागीरदार)-बालोतरा (2) मुमुक्षु सुश्री वर्षा जी सालेचा सुपुत्री श्री महावीरचन्द जी सालेचा(जागीरदार)-बालोतरा (3) मुमुक्षु सुश्री समता जी जैन सुपुत्री श्री नरेन्द्रमोहन जी जैन 'श्यामपुरा वाले'-बजरिया, सवाईमाधोपुर (4) मुमुक्षु सुश्री दीपिका जी जैन सुपुत्री श्री दामोदर जी जैन 'जरखोदा वाले'-सवाईमाधोपुर।

उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में पाली-मारवाड़ के श्रावक-श्राविकाओं में धर्माराधना का उत्साह

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 6 का विचरण-विहार पाली शहर एवं उपनगरों में हो रहा है। माघ शुक्ला द्वितीया 17 जनवरी 2010 को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का 90वाँ दीक्षा-दिवस उपवास-पौषध,

दया-संवर एवं तपाराधना के साथ मनाया गया। श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर ने प्रवचन में फरमाया कि पूज्य आचार्य हस्ती जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र थे, उनकी विद्वत्ता, सरलता एवं तेजस्विता का प्रभाव सर्वत्र फैल गया था। वे हजारों, लाखों भक्तों के वंदनीय एवं पूजनीय थे। उनके वन्दन, दर्शन हेतु बड़े-बड़े वैज्ञानिक, दार्शनिक, एडवोकेट, डॉक्टर, ज्योतिषी एवं अधिकारी उपस्थित होकर कुछ-न-कुछ धर्मज्ञान एवं व्रत-प्रत्याख्यान प्राप्त करके जाते थे। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने फरमाया कि बचपन में डाले गये संस्कार प्रभावशाली होते हैं। माताओं को माँ रूपा की भांति बालकों में संस्कार स्थापित करने चाहिए। श्री यशवंतमुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संयमी व्यक्ति का जन्म दो बार होता है। एक बार अपनी माता की कुक्षि से तथा दूसरी बार संयम-प्रदात्ता अपने गुरु की कोख से। उन्होंने आचार्य हस्ती के दोनों जन्मों की महिमा का गुणगान किया। इस अवसर पर महासती श्री सिद्धिप्रभा जी म.सा. ने भी आचार्य हस्ती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। सैकड़ों श्रद्धालु भाई-बहिनों ने सामायिक-व्रत में बैठकर धर्म-श्रवण किया। प्रवचन में तेला, उपवास, एकासन, दयाव्रत एवं संवर व्रत के प्रत्याख्यान उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से अनेक भाई-बहिनों ने ग्रहण किए। स्थानीय मंत्री श्री ताराचन्द जी सिंघवी, श्री पारसमल जी चौपड़ा, श्री दलपत जी भंडारी, श्री नवरतनमल जी डोसी-जोधपुर एवं अनेक बहनों व बच्चों ने भी अपनी भावनाएँ प्रस्तुत की। श्री लाभचन्द जी ललित कुमार जी गोलेछा ने जीवदया प्रकल्पों में एवं मानव सेवा में विशेष योगदान की घोषणा। इस दिन नवकार मंत्र का भी जाप किया गया। श्री मांगीलाल जी लादानी ने गुणानुवाद सभा का सफल संचालन किया।

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 76वें जन्म-दिवस माघकृष्णा चतुर्थी 4 जनवरी 2010 को तप-त्याग एवं व्रत-नियम अंगीकार किए गए। इस दिन सुराणा मार्केट भोजनशाला के पास में स्थित भवन खरीदने हेतु सम्पूर्ण व्यय श्रीमती लीलादेवी धर्मपत्नी श्री लाभचन्द जी गोलेछा ने करने की भावना व्यक्त की। साथ ही गोलेछा परिवार ने वात्सल्य सेवा एवं पशु-पक्षियों की सेवा में योगदान की घोषणा की। जनवरी माह में श्री रूपचन्द जी गाँधी ने उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया।

सम्पर्क सूत्र- श्री रूपकुमार जी चौपड़ा, पाली-09414122304, श्री ताराचन्द जी सिंघवी, पाली-02932-250021

साध्वीप्रमुखा के सान्निध्य में तप-त्याग की निरन्तरता

जोधपुर–साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा.आदि ठाणा 10 के सान्निध्य में घोड़ों का चौक स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 76वें जन्म-दिवस माघ कृष्णा चतुर्थी, 4 जनवरी 2010 के अवसर पर अखण्ड नवकार मंत्र का जाप हुआ तथा सामायिक के बहुसंख्यक तेले हुए। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 90वें दीक्षा-दिवस माघ शुक्ला द्वितीया, 17 जनवरी 2010 के उपलक्ष्य में श्री मदनलाल जी कांकरिया-जोधपुर ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। इस दिन नीवी एवं दयाव्रत का सामूहिक कार्यक्रम रखा गया तथा अखण्ड नवकार मंत्र का जाप हुआ, जिसमें श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह से भाग लिया। माघशुक्ला त्रयोदशी, 28 जनवरी को साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के 64वें दीक्षा-दिवस के अवसर पर श्री सिद्धराज जी सुराणा एवं श्री पीरचन्द जी चोरडिया ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। 31 श्रावक-श्राविकाओं ने वर्ष भर ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया। 20 व्यक्तियों ने वर्षभर रात्रि-भोजन का त्याग किया। कुछ श्रावक-श्राविकाओं ने 64 दिन रात्रि-भोजन त्याग, कुछ ने 64 दिन सामायिक, कुछ ने 64 दिन ब्रह्मचर्य व्रत, कुछ ने 64 दिन दो घंटे मौन तथा कुछ ने 64 दिन एक घंटे मौन का व्रत अंगीकार किया। इस दिन 150 दया-उपवास का आराधन एवं अखण्ड नवकार मंत्र का जाप किया गया।

सम्पर्क सूत्र–श्री नरपतराज जी चौपड़ा, फोनः 0291-2545265, 9460422134

अध्यात्मयोगी आचार्य हस्ती के 100वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम

(जनवरी अंक में प्रकाशित समाचारों से आगे)

जबलपुर- परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म-शताब्दी के प्रसंग से यहाँ 27 से 29 दिसम्बर तक प्रातः 7.30 से 10 बजे तक नमस्कार मंत्र का जाप रखा गया तथा 30 दिसम्बर प्रातः 7.30 से सांय 5 बजे तक नवकार मंत्र का जाप किया गया। इस अवसर पर तेला, सामायिक की पचरंगी, उपवास, दया,

एकासन आदि हुए। बच्चों एवं युवाओं ने संकल्प पत्र भरकर संकल्प ग्रहण किये। गुणानुवाद सभा आयोजित की गई, जिसमें प्रो. मंगलचन्द जी टाटिया मुख्य अतिथि एवं श्री सम्पतलाल जी बाघमार, अध्यक्ष थे। लगभग 1500 सामायिक हुईं।

शिवमोगा- यहाँ आचार्यप्रवर के जन्मदिवस पर 30 दिसम्बर को 150 से अधिक लोगों ने सामायिक का तेला किया। श्री वरदीचन्द जी गुन्देचा, श्री सुमेरमल जी पालरेचा , श्री प्रकाशराज जी मेहता, श्रीमती कविता जी मेहता, श्रीमती पुष्पा बाई जी कवाड़, मंजुला जी मेहता एवं पूनम जी कवाड़ ने आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। *- हरकचंद विनायकिया, मंत्री*

पुणे- यहाँ पर भवानी पेठ में साध्वी इन्द्रकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में आचार्यप्रवर का गुणानुवाद किया गया। इस दिन यहाँ पर नवकार महामंत्र का जाप किया गया। महासती इन्द्रकंवर जी अभी 91 वर्ष की हैं, उन्होंने बताया कि पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज यहाँ पधारे थे, बहुत आनन्द रहा। गुणानुवाद सभा में जैन कान्फ्रेंस के उपासक श्री पोपटलाल जी ओस्तवाल, संघ के उपाध्यक्ष श्री विजय जी धोका, श्री पी.धोका, श्री हरकचन्द जी ओस्तवाल, श्री सुखलाल जी ओस्तवाल आदि अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे।

मैसूर- गुरुदेव का 100वाँ जन्म-दिवस यहाँ कर्नाटक स्वाध्यायी संघ के वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री शान्तिलाल जी डूंगरवाल के सान्निध्य में मनाया गया। प्रातः 6.30 से 7.30 तक प्रार्थना, 7.30 से 8.30 तक स्वाध्याय और कक्षा तथा 9.15 से 11.15 बजे तक प्रवचन के माध्यम से गुणानुवाद किया गया। लगभग 125 एकासन, 20 उपवास, आयम्बिल आदि का आराधन हुआ। सौ व्यक्तियों ने सामायिक का तेला एवं बीस ने पचोला किया। गुणानुवाद सभा में लगभग 250 की उपस्थिति रही।

बीजापुर- यहाँ गुरुदेव का 100वां जन्म-दिवस आचार्यप्रवर श्री विजयराज जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी मयंका श्री जी म.सा. के सान्निध्य में तप-त्याग पूर्वक मनाया गया। दिनांक 28-30 दिसम्बर तक तीन से लेकर पाँच सामायिक का आयोजन हुआ। यहाँ 101 एकासन, 25 तेला एकासन, तेला, उपवास एवं प्रतिक्रमण-पौषध आदि की आराधना हुई।

उदयपुर- यहाँ आचार्यप्रवर का 100 वां जन्म-दिवस नवकार मंत्र के जाप, एकासन, सामायिक एवं संवर पूर्वक मनाया गया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

के स्थानीय अध्यक्ष प्रो. चाँदमल जी कर्णावट ने कहा कि गुरुदेव हस्ती के अनुसार स्वाध्याय से सभी समस्याओं का हल हो सकता है। आचार्य हस्ती सम्पूर्ण समाज का कल्याण एवं उत्थान चाहते थे। वे आडम्बर एवं प्रचार से दूर रहने वाले संत थे। वे क्रान्तिकारी थे, उन्होंने मृत्यु भोज, दहेज प्रथा और पर्दा-प्रथा के विरुद्ध जोरदार मुहीम चलाई। शिक्षाधिकारी श्री धर्मचन्द नागौरी ने कहा कि आचार्य हस्ती ने इस धारणा को तोड़ दिया कि समाज में केवल अमीरों का ही महत्त्व है। उनकी मान्यता थी कि अर्थ से व्यवस्था चलती है तो ज्ञानवान श्रावक ही संघ की आधारशिला होते हैं। विद्वत्परिषद् की स्थापना इसी का परिणाम थी। डॉ. मानमल कुदाल, डॉ. सुषमा सिंघवी, श्रीमती चन्द्रकला मेहता, श्रीमती हुक्म जी कर्नावट आदि ने विचार एवं भक्ति गीत प्रस्तुत किए। समारोह की अध्यक्षता श्री के.एस. मोगरा ने की एवं संयोजन श्रीमती माया कुम्भट ने किया।

कोलकाता- पूज्य आचार्यप्रवर की जन्मशताब्दी पर यहाँ 30 दिसम्बर को प्रातः नमस्कार मंत्र का जाप हुआ, दया-व्रत की आराधना हुई, जिसमें लगभग 300 सामायिकें हुईं। रविवार 3 जनवरी, 2010 को महावीर सदन उपासरे में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इसमें 39 सदस्यों ने रक्तदान किया। इसके अनन्तर 10.30 बजे धर्मचर्चा एवं गुणानुवाद का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सुश्राविका श्रीमती मंजू प्रेम भण्डारी ने गुरुदेव के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। सभा को श्री सरदारमल जी कांकरिया, श्री रिखबदास जी भंसाली एवं श्री चंचलमल जी बच्छावत ने सम्बोधित किया। कुछ भजनों के पश्चात् उपप्रवर्तक श्री अरुणमुनि जी म.सा. ने आचार्य हस्ती के जीवन पर प्रकाश डाला। संघाध्यक्ष श्री सुमेरचन्द जी मेहता ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा सभा का संचालन डॉ. निर्मल जी पीपाड़ा ने किया।- गुमानसिंह पीपाड़ा, महामंत्री

इन्दौर- यहाँ आयोजित गुणानुवाद सभा में जैन चेतना मंच प्रणेता श्री सिद्धार्थ मुनि जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. श्रमण जगत् के ज्योतिर्मय नक्षत्र थे, उनका जीवन, त्याग, संयम एवं सरलता का मूर्त रूप था। नवकार मंत्र के सामूहिक जाप से प्रारम्भ हुए महोत्सव में श्री अरविन्द मुनि जी ने श्रद्धा गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री सौरभ सुधा जी, चेतना जी, डॉ. सुनीता जी, मंगलप्रभा जी एवं दिव्यज्योति जी ने आचार्य हस्ती एवं मरूधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. का गुणानुवाद किया। श्रावक संघ की ओर से श्री नेमीनाथ जैन, श्री गजराज सिंह झामड़, श्री सागरमल बेताला, श्री जिनेश्वर जैन, श्री जगदीश जैन,

श्रीमती मंजुला बेन बोटादरा, सूरज बहिन बोहरा एवं सुनीता छजलानी ने भावाञ्जलि अर्पित की। श्री मोहनलाल पीपाड़ा ने संस्था परिचय दिया एवं श्री हस्तीमल झेलावत ने आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी वर्ष एवं संकल्प पत्र की जानकारी दी। संचालन श्री अशोक मंडलिक ने किया तथा गजेन्द्र बोडाना ने आभार व्यक्त किया।

कुम्भकोणम्- सकल जैन संघ द्वारा उपवास, एकासन एवं सामायिक की साधना के साथ सात सौ गरीबों को भोजन वितरित किया गया। विश्वशान्ति के लिए नकस्कार मंत्र का आराधन किया गया। इस दिन लगभग 150 सामायिक हुईं।

खेरली- आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी पर यहाँ प्रातःकालीन प्रतिक्रमण, प्रार्थना, प्रभात फेरी तथा 8 से 9 बजे तक नवकार मंत्र का जाप किया गया। श्री सुरेशचन्द जी जैन, श्री धर्मचन्द जी जैन ने गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डाला। श्री छगनलाल जी जैन ने आचार्यप्रवर को युगप्रणेता बताया, अध्यक्ष श्री रामबाबू जी जैन ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। युवारत्न श्री मनीषकुमार जैन एवं श्री मुकेशकुमार जैन के विशेष सहयोग से श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 148 युनिट रक्तदान हुआ।

दिल्ली- चांदनी चौक में स्थित जैन स्थानक में श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक प्रबन्धन समिति के सान्निध्य में जन्म शताब्दी मनाई गई। इसी अवसर पर आचार्य श्री ज्ञानचन्द जी म.सा. की अर्द्धशताब्दी भी मनाई गई। श्रावक-श्राविकाओं ने नवकार मंत्र का जाप, उत्तराध्ययन सूत्र की वाचनी तथा सामायिक एवं स्वाध्याय के द्वारा गुरु भक्ति का परिचय दिया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, दिल्ली के प्रधान श्री कैलाशचन्द जी सिंघवी ने आचार्य हस्ती के जीवन पर प्रकाश डाला। आचार्य हीराचन्द्र जी म.सा. के सांसारिक भ्राता श्री प्रेमचन्द जी गाँधी ने अपने जीवन पर आचार्य श्री की प्रेरणा से पड़े प्रभाव से अवगत करवाया। कोषाध्यक्ष श्री दिनेश जी जैन ने बताया कि आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. सन् 1958 में यहाँ पधारे थे। सन् 1988 में उनकी पावन कृपा से श्रद्धेय मानमुनि जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास प्राप्त हुआ। सभा का संचालन करते हुए श्री जगमोहन जी चतुरमुथा ने कहा कि आचार्य प्रवर हस्ती की सत्प्रेरणा से भारत वर्ष में सामायिक एवं स्वाध्याय की विशेष लहर चली।

आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के 90वें दीक्षा-दिवस पर कार्यक्रम

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. एवं महासती-मण्डल दीक्षा-दिवस पर जहाँ विराजमान थे, वहाँ तो तप-त्याग के कार्यक्रम सम्पन्न हुए ही, अन्यत्र भी यह शृंखला जारी रही। कुछ प्राप्त विवरण यहाँ प्रकाशित किए जा रहे हैं।

अजमेर- आचार्य भगवन्त का 90वाँ दीक्षा-दिवस सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में यहाँ महावीर भवन, महावीर कॉलोनी में 17 जनवरी को तप-त्याग के साथ मनाया गया। महासतियाँ जी ने प्रवचन के माध्यम से आचार्य भगवन्त के गुणग्राम किए। 4 वर्षीय बालिका आशु मेहता ने मनमोहक लघु कविता प्रस्तुत की। इस अवसर पर संघ अध्यक्ष श्री पारसमल जी रांका ने 'अध्यात्म-चेतना वर्ष' में आयम्बिल की लड़ी, सौ आयम्बिल, दो लाख गाथाओं का स्वाध्याय, पांच लाख सामायिक, तीन सौ तेले, अजमेर संघ द्वारा करने का संकल्प व्यक्त किया। संघ मंत्री श्री नेमीचन्द जी कटारिया ने इस पुनीत प्रसंग पर अजमेर में संस्कार केन्द्र पाठशाला को चलाने का बीड़ा उठाया।

नागौर- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में माघ शुक्ला द्वितीया 17 जनवरी को आचार्य श्री हस्ती का 90वाँ दीक्षा-दिवस लगभग 500 सामायिक, 125 एकासन, 24 घंटे अखण्ड जाप, उपवास, दया एवं कई व्रत-प्रत्याख्यानों के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्रीमती एवं श्री पारसमल जी छाजेड़, श्रीमती लीला जी बैद ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम भी आयोजित हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री अजित जी भण्डारी एवं सुनील जी सुराणा ने बखूबी किया।

पीपाड़ शहर- महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में आचार्य श्री हस्ती का 90वाँ दीक्षा-दिवस साधना-आराधना के साथ मनाया गया। लगभग 100 श्रावक-श्राविकाओं ने 5-5 सामायिक का आराधन किया। उपवास, आयंबिल, पौषध-संवर की साधना के साथ भिक्षुदया का भी आयोजन हुआ।

हैदराबाद- आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. का 90वाँ दीक्षा दिवस सिकन्दराबाद स्थित पद्माराव नगर में सामायिक-दिवस के रूप में पं. रत्न श्री गौतममुनि जी 'प्रथम' के सान्निध्य में मनाया गया। मुनि श्री ने आचार्य श्री की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि आचार्य श्री हस्ती ज्ञान व क्रिया के संगम थे। वे सरल, सौम्य तथा संयम के सजग प्रहरी थे। अप्रमत्तयोगी बनकर उन्होंने सामायिक-स्वाध्याय के माध्यम से ज्ञान की ज्योति जलाई। इस अवसर पर शताब्दी वर्ष तक धोवन पानी का प्रयोग करने एवं प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करने हेतु प्रतिज्ञा दिलाई गई।

भरतपुर- यहाँ पर आचार्य श्री हस्ती का 90वाँ दीक्षा-दिवस स्वाध्याय, सामायिक एवं नवकार मंत्र के जाप के साथ महावीर भवन में अत्यन्त उल्लास के साथ मनाया गया।

सूरत में सामायिक-स्वाध्याय भवन का शिलान्यास

आचार्य हस्ती की जन्म-शताब्दी एवं अध्यात्म चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में 26 जनवरी 2010 गणतंत्र दिवस के दिन सूरत में एम.जे.पार्क, डी.आर.बी. कॉलेज के सामने, न्यू सिटी लाइट रोड पर प्लाट नं. 25 से 27 पर सामायिक-स्वाध्याय भवन का शिलान्यास एवं दानदाता सम्मान समारोह आनन्दमय क्षणों में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। प्रातः 8.30 बजे सामूहिक शान्तिजाप, 9 बजे महामंत्र नवकार जाप, 9.30 बजे मंगलाचरण, गुरु-स्तुति, संकल्प-पठन, संघ-महिमा गान एवं हीराष्टकम् का समवेत स्वर में श्रद्धासहित गान किया गया। शिलान्यास कार्यक्रम में संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत अस्वस्थ होने से नहीं पधार सके, उनके स्थान पर संघ संरक्षक श्री ताराचन्द जी सिंघवी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना-जलगांव मुख्य अतिथि के रूप में, मारवाड़ संभाग के क्षेत्रीय प्रधान श्री लाभचन्द जी गुलेच्छा-पाली विशिष्ट अतिथि के रूप में तथा श्री महावीरचन्द जी बाफना-भोपालगढ़ शिलान्यासकर्ता के रूप में पधारे। इस अवसर पर अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा एवं आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी समिति के संयोजक श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना भी उपस्थित थे। मंचासीन अतिथियों का सूरत संघ के सदस्यों ने

माल्यार्पण द्वारा स्वागत एवं शॉल ओढ़ाकर बहुमान किया। गुजरात संभाग के क्षेत्रीय प्रधान, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सूरत संघ के मंत्री श्री सुनील जी नाहर ने स्वागत वचनों में भावाभिव्यक्ति करते हुए कहा कि आज पूज्य पिता स्व. श्री सोहनलाल जी नाहर की प्रबल भावना का साकार रूप देखकर अत्यन्त हर्षानुभूति हो रही है। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती अर्चना जी चौपड़ा एवं मंत्री श्रीमती वीणा जी नाहर ने अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्ति की।

सामायिक-स्वाध्याय भवन के भावी निर्माण कार्य में अर्थ सहयोग प्रदान करने वाले दानवीर भामाशाह सुश्रावकों को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ सूरत द्वारा स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री रतनलाल जी बाफना ने पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. का गुणकीर्तन बहुत ही भावविह्वल होकर किया। उन्होंने हित-मित शब्दों में जीवन-निर्माण एवं विकासकारी सूत्र प्रदान किए। रत्नसंघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने गुरुभक्ति, संघ-सेवा, संत-सती सेवा एवं संघ-समर्पण निरन्तर बढ़ने हेतु प्रेरणा की। साथ ही उन्होंने अध्यात्म-चेतना वर्ष में व्रत-नियम ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया। आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी के संयोजक श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने पूज्य आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की संक्षिप्त झांकी प्रभावोत्पादक शब्दों में प्रस्तुत की तथा समिति द्वारा निर्धारित 100 संकल्पों में से यथाशक्ति संकल्प ग्रहण करने का आह्वान किया। लगभग 12.15 बजे सामायिक-स्वाध्याय भवन का शिलान्यास गुरुभक्त सुश्रावक श्री महावीरचन्द जी बाफना के कर-कमलों से जय-जयकार के साथ सम्पन्न हुआ।

समारोह में सूरत के श्री साधुमार्गी जैन संघ, सुधर्म स्थानकवासी जैन संघ, हुकमगच्छीय शांत-क्रांत श्रावक संघ, धानेरा स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, दरियापुरी 8 कोटी श्रावक संघ, छः कोटी श्रावक संघ, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, पालनपुरी स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, श्री जयमल जैन श्रावक संघ आदि श्रावक संघों के गणमान्य श्रावक-श्राविकाओं ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस कार्यक्रम में अहमदाबाद, जयपुर, पाली, जोधपुर, मुम्बई, नवसारी, अमलनेर, भोपालगढ़, चेन्नई, जलगाँव, सवाईमाधोपुर, मुकटी आदि अनेक स्थानों से गरिमामयी उपस्थिति रही।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सूरत के अध्यक्ष श्री लाभचन्द जी नाहर ने हार्दिक आभार व्यक्त किया। अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के परामर्शदाता

श्री कुशल जी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर के सुसंचालन में यह कार्यक्रम अपराह्न 1 बजे सम्पन्न हुआ। इस दिन गणतंत्र दिवस होने से अंत में राष्ट्रगान गाकर राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया गया। कार्यक्रम समाप्ति पर सबने स्नेहभोज का आनन्द लिया।

युवक परिषद्, चेन्नई की सक्रियता

1. युवक परिषद्, चेन्नई द्वारा 25 अक्टूबर 2009 को परीक्षा सम्बन्धी प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता आयोजित की गई। यहाँ प्रत्येक रविवार को शिविर का आयोजन होता है। शिविर में 40 धार्मिक प्रशिक्षक एवं युवक परिषद् के कार्यकर्ता अमूल्य सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। शिविर का कार्यक्रम आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र से सम्बद्ध है।
2. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के दिशा-निर्देशन में परीक्षा की पूर्व तैयारी हेतु 27 दिसम्बर 2009 को प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया।
3. छः वर्ष से अधिक आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं में धार्मिक संस्कारों में अभिवृद्धि एवं नैतिक गुणों के विकास हेतु 28-29 दिसम्बर को द्वि-दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया।
4. 25 से 29 दिसम्बर तक प्रातः 6.45 से 9.00 बजे तक एवं दोपहर 1 से 3.30 बजे तक एक शिविर आयोजित किया गया, जिसमें श्री विजयराज जी मेहता, अधिष्ठाता, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर ने अध्यापन कार्य किया।
5. 10 जनवरी 2010 को आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षाएँ सोल्लास सम्पन्न हुई।

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र का उत्सव सिंहपोल, जोधपुर में आयोजित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के तत्त्वावधान में 3 जनवरी, 2010 को सिंहपोल केन्द्र द्वारा आध्यात्मिक सांस्कृतिक उत्सव आयोजित किया गया, जिसमें जोधपुर के 17 केन्द्रों के बालक-बालिका एवं अध्यापक उपस्थित थे। सभी केन्द्रों के बालक-बालिकाओं ने संस्कार से सम्बद्ध कार्यक्रम प्रस्तुत किये। सभी केन्द्रों में से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय का चयन किया गया, जिनमें सिंहपोल केन्द्र प्रथम स्थान पर रहा। सभी अध्यापकों के लिए भाषण

प्रतियोगिता आयोजित हुई, जिसमें मुन्नालाल जी भण्डारी-प्रथम, सुश्री भाग्यवंती तातेड़-द्वितीय, श्रीमती अमृतबाई-तृतीय स्थान पर रहे। श्रीमती सुशीला जी गोलेच्छा ने मंगलाचरण किया एवं सिंहपोल केन्द्र की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। संस्कार केन्द्र के सचिव श्री सुभाष जी हुण्डीवाल एवं कोषाध्यक्ष श्री मन्नालाल जी बोथरा ने भी बच्चों को प्रेरणा की। कार्यक्रम का संचालन सिंहपोल की अध्यापिका श्रीमती सूरज जी बोहरा ने किया।

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान में प्रवेश हेतु स्वर्णिम अवसर

जयपुर- सम्पूर्ण भारत के विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिभावान छात्रों का जीवन सुसंस्कारित, सुखद, समुज्ज्वल एवं यशस्वी बनाने के लिए संस्थान विगत 36 वर्षों से कार्यरत है। इस वर्ष भी 10वीं अथवा 12वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को सत्र 2010-2011 में प्रवेश दिया जायेगा। यह संस्थान संस्कृत, प्राकृत एवं जैन धर्म-दर्शन का विशेष अध्ययन कराने के साथ विद्यालयीय, महाविद्यालयीय एवं विश्वविद्यालयीय अध्ययन में नियमित प्रवेश के साथ छात्रों के व्यावहारिक अध्ययन पर भी पूरा ध्यान देता है। यहाँ से निकले अनेक प्रतिभासम्पन्न छात्र अच्छे स्थानों एवं पदों पर कार्य कर रहे हैं। प्रवेशार्थी छात्र अपना नाम, पिता का नाम, जन्मतिथि, फोन नं., धार्मिक योग्यता एवं पूर्व के दो वर्षों की अंकतालिकाओं की प्रमाणित प्रतियाँ संलग्न कर आवेदन-पत्र प्रेषित करें। *-विजय मेहता, अधिष्ठाता, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, आचार्य हस्ती भवन, दैनिक भास्कर कार्यालय के पास, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302020, मो. 9462322197*

नागौर में संस्कार शिविर सम्पन्न

व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में 26 से 30 दिसम्बर 2009 तक संस्कार शिविर का आयोजन सामायिक-स्वाध्याय भवन में किया गया, जिसमें 125 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री प्रकाशचन्द जी पारख-धनारीकलां तथा श्रीमती सुशीला जी गोलेछा-जोधपुर ने अध्यापन कार्य किया। व्याख्यात्री महासती जी की प्रभावी प्रेरणा से यहाँ पौष शुक्ला चतुर्दशी को धार्मिक पाठशाला का शुभारम्भ हुआ।

आस्ट्रेलिया के मेलबर्न में आयोजित विश्वधर्म संसद में जैन धर्म का प्रतिनिधित्व

3 से 9 दिसम्बर, 2009 तक मेलबर्न में आयोजित पाँचवी विश्वधर्म संसद में विश्व के विभिन्न धर्मों के लगभग 6000 धर्मगुरुओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, विद्वानों, धार्मिक अनुयायियों ने लगभग 450 कार्यक्रमों के माध्यम से विश्व शांति के विभिन्न पहलुओं, धर्म एवं वैश्विक समस्याओं पर विचार चिन्तन किया। आपसी सौहार्द और सहयोग पर बल देते हुए एक विश्व परिवार के निर्माण पर अपनी मोहर लगा दी। धार्मिक विविधता के बीच किसी एक धर्म के नेता किस प्रकार अपने तथा अन्य धर्मों का संरक्षण करे इस बिन्दु पर विचार किया गया। अफ्रीका, यूरोप व मध्य एशिया में अन्तर्ध्वनि वातावरण पर तथा ईसाई एवं इस्लाम धर्मों के बीच सौहार्द पर विशेष सत्र आयोजित किए गए। मानवाधिकार, वैश्विक आचार संहिता और धार्मिक स्थलों की सुरक्षा पर भी सत्र आयोजित किए गए। जलवायु परिवर्तन पर गहन चिन्ता प्रकट की गई तथा 60 मीटर लम्बे एक रोल पर अनेक शुभचिन्तकों द्वारा अपना संदेश एवं विश्व नेताओं को अपनी चिन्ता अंकित की गई और इस रोल को कोपनहेगन में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भेजने का निर्णय लिया गया। विश्व संसद में भारतीय धर्मों की उपस्थिति तथा जैन दर्शन का प्रदर्शन भी प्रभावशाली रहा। दो सन्त, दो भट्टारक एवं छः समणियों की उपस्थिति के साथ डॉ. दीपक जैन, डॉ. नारायण लाल कच्छारा आदि ने भाग लिया। मेलबर्न के श्वेताम्बर जैन संघ ने प्रतिनिधियों ने आवास एवं भोजन की प्रशंसनीय व्यवस्था की।

अखिल भारतीय पुस्तक युगल ज्ञान प्रतियोगिता

श्रुतप्रेमी साध्वी युगलनिधि-कृपा के संयोजन में 'मृत्यु पाथेय' तथा 'धन्य आराधना' पुस्तकों पर प्रतियोगिता प्रारम्भ की गई है, जिसकी अंतिम तिथि 30 अप्रेल, 2010 है। मृत्यु पाथेय का मूल्य 100 रुपये एवं 'धन्य आराधना' का मूल्य 75 रुपये, रजिस्ट्रेशन फीस 25 रुपये तथा प्रश्न पुस्तिका मूल्य 25 रुपये एवं डाक व्यय अतिरिक्त है। बम्पर पुरस्कार एक लाख एक हजार रुपये का है तथा तीन विशेष श्रुत कीर्ति पुरस्कार के साथ प्रत्येक प्रतियोगी को प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जाएंगे। **सम्पर्क सूत्र-** रचना जैन-098110-22253, प्रदीप जैन-093120-59745, 098732-96865, मैत्री चेरिटेबल फाउण्डेशन, बी-

117, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-I, नई दिल्ली-110020

भगवान् महावीर फाउण्डेशन के पुरस्कारों की घोषणा

श्री भगवान् महावीर न्यास के प्रबन्ध न्यासी श्री एन. सुगालचन्द जी जैन ने 13वें भगवान् महावीर पारितोषिक विजेताओं की घोषणा की है। उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व प्रधान न्यायाधीश श्री वेंकट चेलेया के नेतृत्व में समिति ने पुरस्कार योग्य संस्थाओं/व्यक्तियों का निम्नानुसार चयन किया-

1. अहिंसा और शाकाहार के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए श्री महुम्मद अब्रार कुरेशी, थाने, महाराष्ट्र के निवासी।
2. शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए ट्राइबल हेल्थ इनिशियेटिव, धर्मपुरी, तमिलनाडु।
3. (1) समुदाय और समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए श्री कर्णी नगर विकास समिति, कोटा (राजस्थान)।
   (2) स्वामी विवेकानन्द ग्रामीण एकीकृत स्वास्थ्य केन्द्र, पावगढ़ (कर्नाटक)।

उपर्युक्त पारितोषिक में प्रत्येक को पाँच लाख रुपये नकद, प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न दिये जायेंगे।

दिल्ली में पाण्डुलिपि एवं पुरालिपि विज्ञान कार्यशाला आयोजित

दिल्ली- भोगीलाल लहेरचन्द भारतीय संस्कृति संस्थान एवं राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में अखिल भारतीय पाण्डुलिपि एवं पुरालिपि विज्ञान कार्यशाला 20 दिसम्बर से 10 जनवरी 2010 तक आयोजित की गई। इस कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में डॉ. जितेन्द्र बी.शाह, निदेशक-लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अहमदाबाद ने संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला तथा श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन, उपाध्यक्ष ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। समारोह की अध्यक्षता प्रो. गयाचरण त्रिपाठी, सलाहकार-इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली थे। इस अवसर पर डॉ. विजयशंकर शुक्ला (निदेशक-राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली) ने राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की

विविध गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का आयोजन व संचालन डॉ. बालाजी गणोरकर (निदेशक-बी.एल.आई.आई) ने किया।

भगवान् महावीर अवार्ड (14वें) हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

चेन्नई- भगवान् महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई द्वारा प्रतिवर्ष मानव एवं समाज सेवा में लगे व्यक्तियों के मनोबल को बढ़ाने के लिए भगवान् महावीर अवार्ड प्रदान किए जाते हैं। यह अवॉर्ड निम्नलिखित कार्य-क्षेत्रों में प्रदान किये जाते हैं- 1. अहिंसा एवं शाकाहार के उत्कृष्ट प्रचार-प्रसार हेतु, 2. शिक्षा क्षेत्र में उच्चस्तरीय योगदान प्रदान करने के लिए, 3. चिकित्सा जगत् में निःस्वार्थभाव से कार्य एवं शोध-खोज करने हेतु तथा 4. समाज एवं मानव सेवार्थ।

उपर्युक्त क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रत्येक को 10,000,00 (दस लाख) रुपये की राशि प्रदान की जाएगी। साथ ही प्रमाण-पत्र एवं स्मृति चिह्न भी प्रदान किये जायेंगे। आवेदनकर्ताओं के लिए नामांकन एवं प्रविष्टि प्रेषित करने की अन्तिम अवधि है- 28 फरवरी, 2010, **सम्पर्क सूत्र**- एन. सुगनचन्द जैन, नं. 11, पोनप्पा लेन, ट्रिप्लीकेन, चेन्नई-600005. दूरभाष: 044-24841353, 28480668, फेक्स: 044-2481354, **Email: bmfarwards@gmail.com, Website: www.bmfarwards.org**

संक्षिप्त समाचार

जोधपुर- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्यकारिणी की बैठक 21 फरवरी 2010 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर में रखी गई है। *-शशि टाटिया, महासचिव, मो. 9460482299*

जोधपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा हस्ती जन्म शताब्दी वर्ष में 20 से 26 दिसम्बर तक सप्तदिवसीय शीतकालीन शिविर का आयोजन घोड़ों के चौक स्थानक में किया गया। शिविर में 120 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर का समय मध्याह्न 12 से 3.30 बजे तक रखा गया। शिविर में शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार कक्षा 1 से 9 तक का विशेष अध्ययन कराया गया। शिविर में शिविरार्थियों को स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा विशेष रूप से की गई।

-सुनीता मेहता-अध्यक्ष

वैशाली- प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, मुजफ्फरपुर द्वारा 16 दिसम्बर, 2009 को डॉ. गुलाबचन्द चौधरी स्मारक व्याख्यानमाला का

आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. प्रमोदकुमार सिंह, पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग, बी. आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर ने की। प्रमुख वक्ता राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त विद्वान प्रो.(डॉ.) राजाराम जैन थे। जैन विद्या प्रेमी एवं समाज सेवी श्री ईशान कुमार जैन प्रमुख अतिथि थे।

-डॉ. ऋषभचन्द जैन-निदेशक

वैशाली- प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, मुजफ्फरपुर में 27 नवम्बर, 2009 को डॉ. हीरालाल जैन स्मृति व्याख्यान माला का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता विद्यावाचस्पति डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव ने की। इसमें मुख्य अतिथि पारू विधायक श्री अशोककुमार सिंह तथा मुख्यवक्ता डॉ. जयकुमार उपाध्ये, उपाचार्य, प्राकृत भाषा विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली थे। *-डॉ. ऋषभचन्द जैन-निदेशक*

जोधपुर- उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी म.सा. 'वागीश' आदि ठाणा ने जोधपुर में चातुर्मास सम्पन्न कर डावरां में कुमारी मीनू राठौड़ को भागवती दीक्षा प्रदान की। उपाध्याय कन्हैयालाल जी म.सा. की 9 वीं पुण्यतिथि पीपाड़ में मनाई गई और फाल्गुनी चौमासी साण्डेराव में होने की संभावना है। चैत्री आयम्बिल ओली के अवसर पर आबू पर पहुँचने के भाव हैं।

दिल्ली- आचार्य शिवमुनि जी म.सा. द्वारा डॉ. राजेन्द्र मुनि जी को साधना एवं सेवा क्षेत्र में किए गए कार्य व संयमी जीवन के उपलक्ष्य में 'संघरत्न' अलंकरण प्रदान किया गया। *-डी. सी. छाजेड़-महामंत्री*

जगदलपुर- कुमारी रेखा नवरतनलाल जी पारख, सौनारपाल-बस्तर, कुमारी प्रिंसी स्वरूप चन्द जी बरड़िया, धर्मबान्धा (उड़ीसा) एवं कुमारी स्वरूपी अशोक जी बुरड़ गिदम की जैन भागवती दीक्षा 27 जनवरी, 2010 को आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविन्द से सम्पन्न हुई। *-महेश नाहटा*

रामगढ़ (डूंगरपुर)- आचार्य श्री कनकनन्दी जी के सान्निध्य में 32 वां धर्म-दर्शन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर 25 दिसम्बर, 2009 से 3 जनवरी 2010 तक आयोजित हुआ, जिसमें 124 छात्र-छात्राओं एवं महिलाओं ने भाग लिया। शिविर के प्रारम्भ में आचार्य श्री द्वारा रचित 'जैन सिद्धान्त एवं विश्वशांति' ग्रन्थ का विमोचन हुआ।

अहमदनगर- सचित्र 25 बोल पुस्तक पर खुली किताब स्पर्धा का आयोजन किया गया है। इसमें प्रश्न-पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि 28 मई 2010 है। विजेता

को लार्ड महावीर अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। **सम्पर्क सूत्र**- श्री आलोक मेडिकल, जूना बाजार, अहमदनगर, (0241) 2323966, 2329066

उदयपुर- उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में भ्रूण रक्षा मंच का गठन किया गया है तथा श्री पुष्पेन्द्रमुनि जी का कथन है कि विवाह के आठवें फेरे के रूप में भ्रूण हत्या न करने का संकल्प दिलाया जाएगा।

बधाई/चुनाव

जोधपुर- समर्पित एवं कर्मठ समाज सेवी श्रावकरत्न श्री माणकचन्द संचेती को 6

जनवरी, 2010 को मुम्बई में 'मारवाड़ रत्न' से सम्मानित किया गया। प्रवासी राजस्थानियों के सम्मेलन में मारवाड़ रत्न समिति पाली-मण्डल, मुम्बई के तत्त्वावधान में आयोजित समारोह में संचेती जी को उनकी विशिष्ट मानव सेवा के लिये 31 हजार रुपये की राशि तथा चांदी की शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया। व्यवसाय से सी.ए. होते हुए भी आप विगत तीस वर्षों से शिक्षा, चिकित्सा एवं जरूरतमंद परिवारों की रोजी रोटी हेतु अभूतपूर्व ढंग से बिना प्रचार के निःस्वार्थ भाव से सेवा कर रहे हैं।

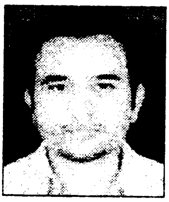

जलगाँव- श्री राहुल कुमार बाफना सुपुत्र श्री सुशील कुमार जी बाफना एवं सुपौत्र श्री रतनलाल जी कस्तुरचन्द जी बाफना ने न्यूयॉर्क में 2 वर्ष रहकर एम.बी.ए. की उपाधि प्राप्त की है। श्री बाफना धर्मनिष्ठ एवं संघनिष्ठ युवारत्न है।

जोधपुर- श्री आदित्य जी बाफना सुपुत्र श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना (संयोजक-आचार्य

श्री हस्ती जन्म-शताब्दी समिति) को नाबार्ड कंसल्टेंसी सर्विसेज प्रा. लि. के निदेशक मण्डल में सम्मिलित किया गया है। शुभम् लॉजिस्टिक्स के अधिशासी निदेशक श्री बाफना जी की यह नियुक्ति 15 जनवरी 2010 से प्रभावी हो गई है। बाफना को नाबार्ड की सहयोगी संस्था में निदेशक बनाया जाना संघ के लिए गौरवास्पद है।

डूंगरगढ़ (राज.)- प्राकृत साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए 25 दिसम्बर, 2009 को विख्यात जैन विद्यामनीषी प्रो.

दामोदरशास्त्री, जैन विश्वभारती लाडनूँ को आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार-2009 प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार में प्रो. शास्त्री को एक लाख रुपये की नकद राशि तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

अजमेर- श्री सिद्धार्थ सुपुत्र श्री महावीर जी मुणोत (रीयां वाला) द्वारा इलाहाबाद से सोफ्टवेयर इंजीनियरिंग की परीक्षा उत्तीर्ण कर सिरको सिस्टम (अमेरिका) में नियुक्ति एवं क्वालिटी अवार्ड प्राप्त किया गया है।

बैंगलोर- श्री रवि बुबकिया सुपुत्र श्री प्रकाश जी बुबकिया मूल निवासी पाली-मारवाड़ हाल मुकाम-बैंगलोर ने प्रसिद्ध कम्पनी विप्रो में बिजनस एनेलिस्ट के पद पर ज्वाइन किया है। हार्दिक बधाई।

जयपुर-सुश्री पूजा जी जैन सुपुत्री श्री घनश्यामजी-दर्शना जी जैन, मानसरोवर-जयपुर ने सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री झूमरमल जी बाघमार ने श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई के शाखा प्रमुख पद पर श्री बी.सुरेशचन्द जी चोरडिया को मनोनीत किया है। श्री चोरडिया ने शाखा कार्याध्यक्ष के पद पर श्री अशोक जी लोढ़ा एवं किशोर मण्डल प्रभारी श्री डी. राहुल जी सुराणा को मनोनीत किया है।

सूरत- श्री जैन रत्न युवक परिषद् की कार्यकारिणी में श्री शान्तिलाल- अध्यक्ष, श्री मनोज बाफना-कार्याध्यक्ष, श्री जयराज जैन-उपाध्यक्ष, श्री सुनील गाँधी एवं राजीव नाहर-परामर्शदाता, श्री रोहित बलाई-मंत्री, श्री मनोहर जैन-प्रचारमंत्री निर्वाचित हुए हैं। महिला मण्डल की कार्यकारिणी में श्रीमती अर्चना चौपड़ा-अध्यक्ष, श्रीमती लाड नाहर एवं श्रीमती सरला जी बाफना-परामर्शदाता, श्रीमती वीणा नाहर-मंत्री, श्रीमती संगीता चौपड़ा-सहमंत्री, श्रीमती शर्मिला बाफना-कोषाध्यक्ष, श्रीमती पदमा नाहर-संगठन मंत्री, श्रीमती अंजु गाँधी-शिक्षा मंत्री निर्वाचित हुईं।

- सुनील नाहर

उदयपुर- सन्मति जैन महिला मण्डल के वार्षिक चुनाव में श्रीमती माया कुम्भट सर्वसम्मति से संरक्षक निर्वाचित हुई हैं।

श्रद्धाञ्जलि

डॉ. महेन्द्र सागर प्रचण्डिया नहीं रहे

अलीगढ़ (उ.प्र.)- जैन धर्म-दर्शन एवं साहित्य के विश्रुत विद्वान् डॉ. महेन्द्र सागर

ज़ी प्रचण्डिया का 10 जनवरी, 2010 को पण्डित मरण हो गया था। उन्होंने आठ दिन पूर्व अन्न का त्याग करते हुए शनैःशनैः जल का भी त्याग कर दिया। आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच्-डी. एवं डी. लिट् उपाधि प्राप्त डॉ. प्रचण्डिया अनेक भाषाओं के जानकार थे। वार्ष्णेय कॉलेज, अलीगढ़ (उ.प्र.) में हिन्दी के प्रोफेसर रहते हुए शोध के नये आयाम स्थापित किये। आचार्य हस्ती स्मृति सम्मान से सम्मानित डॉ. प्रचण्डिया के गीत जिनवाणी पत्रिका में प्रकाशित होते रहे हैं। आप धर्मनिष्ठ, सहृदय, मृदुभाषी, हँसमुख, स्वाभिमानी एवं प्रखर व्यक्त्वि के धनी थे। आप अपने पीछे डॉ. आदित्य, डॉ. राजीव, डॉ. संजीव, डॉ. परितोष का संस्कारित एवं बुद्धिजीवी परिवार छोड़कर गए हैं।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती आनन्दकंवर जी मेहता (फूलकंवर) धर्मपत्नी स्व. श्री

अर्जुनराज जी मेहता (ए.जी. ऑफिस) का 85 वर्ष की आयु में 21 जनवरी 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं सादगीपूर्ण व्यक्तित्व की मिलनसार महिला थी। उनकी आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज एवं सन्त-सती वृन्द में अटूट श्रद्धा थी। आप रत्नवंश में दीक्षित महासती स्व. राजमती जी की सांसारिक पक्ष में ननद तथा गुरुभक्त स्व. श्री विजयमल जी कुम्भट की छोटी बहिन थी। आप अपने पीछे एक पुत्र, तीन पुत्रियों, एक पौत्र, पौत्री सहित भरा-पूरा परिवार छोड़कर गयी हैं। स्वर्गवास से पूर्व तीन दिनों तक सभी परिजनों ने उनकी आत्मा की शांति हेतु भजन, भक्तामर, मंगलपाठ श्रवण करवाया। आपको इस आयु में भी 50-60 भजन कंठस्थ थे तथा प्रतिदिन भजन गाना अतिप्रिय था, जिससे समाज की महिलाएँ काफी प्रभावित थीं।

जयपुर- श्रीमती सायरदेवी जी हीरावत धर्मपत्नी स्व. श्री मानचन्द जी हीरावत ने

82 वर्ष की आयु में दिनांक 31 जनवरी 2010 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। उन्होंने 30 जनवरी 2010 को प्रातः 11.30 बजे संथारे के प्रत्याख्यान ज्ञानगच्छाधिपति श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री चन्दना जी

म.सा. के मुखारविन्द से ग्रहण किये थे । आप प्रतिदिन सामायिक करती थी। आपने 9 के उपवास की तपस्या भी कर रखी थी। रात्रि भोजन के त्याग के साथ बाहर नहीं खाने के भी आपने प्रत्याख्यान कर रखे थे। आप पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. सहित सभी सन्त-सती मंडल के प्रति पूर्ण श्रद्धा भक्ति रखती थी और सेवा में सदैव अग्रणीय रहती थी। वस्तुत: हीरावत परिवार में स्व. श्री भंवरलाल जी, स्व. श्री हीराचन्द जी हीरावत, श्री हरिचन्द जी हीरावत, श्री कुशलचन्द जी हीरावत सहित सम्पूर्ण परिवार का संघ के प्रति समर्पण प्रशंसनीय हैं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई है।

भोपालगढ़- त्यागमूर्ति श्री सुगनचंद जी कांकरिया पुत्र श्री सिमरथमल जी

कांकरिया का स्वर्गवास 87 वर्ष की आयु में 11 जनवरी, 2010 को हो गया। आप धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्य परायण, उदारमना, सेवाभावी एवं सरल हृदय सुश्रावक थे। आप अखिल भारतीय जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, भोपालगढ़ के गत 40 वर्षों से अध्यक्ष व मंत्री पद पर रहे। गुरु हस्ती, गुरु हीरा, गुरु मान के प्रति अटूट आस्था, संघ के प्रति समर्पण और सेवा धर्म की साधना में उन्होंने जीवन पर्यन्त सजगता रखी। संघ की प्रवृत्तियों के पोषण एवं कार्यक्रमों की क्रियान्विति में उनकी भागीदारी एवं शुभ भावना रही। आप श्री जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ़ के उपाध्यक्ष एवं मंत्री पद पर भी रहे। आपने जीवन पर्यन्त मूक प्राणियों की सेवा का कार्य किया। आप जीव दया समिति भोपालगढ़ के प्रभारी रहे। वे निर्भीक एवं स्पष्ट वक्ता थे। सात्त्विक विचारों के धनी होने के साथ आडम्बर प्रदर्शन से दूर रहे। संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाएँ सक्रिय, सक्षम व स्वावलम्बी बने एतदर्थ उन्होंने उदारता पूर्वक सहयोग किया। आपने अपने जीवन को धार्मिक आचरण के साथ सामाजिक एवं परोपकारी कार्यों में भी समर्पित किया। आपने गृहस्थ जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया। सामायिक, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, पौषध-संवर तो नित्य क्रम से करते ही थे, आपके रात्रि में चौविहार के प्रत्याख्यान भी थे। आप अपने पीछे दो पुत्र हीरालाल व अशोक तथा तीन पौत्रों, दो प्रपौत्रों एवं छः पुत्रियों का भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

सवाईमाधोपुर- श्री राजमल जी जैन करेला वाले सुपुत्र स्वर्गीय श्री केशरलाल जी जैन का 76 वर्ष की उम्र में 31 दिसम्बर, 2009 को देहावसान हो गया। आपके

जीवन में सहज-सरलता व सात्त्विकता थी। आपने जीवन के अंतिम समय को सामायिक साधना में व्यतीत किया। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., वर्तमान आचार्य प्रवर, उपाध्याय प्रवर एवं संत-सतियों के प्रति आपकी सुदृढ़ आस्था थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

जयपुर- श्रीमान् त्रिलोकचन्द जी जैन सुपुत्र श्री पदमचन्द जी जैन (अग्रवाल)

सुपौत्र स्व. श्री कन्हैयालाल जी जैन का 28 दिसम्बर, 2009 को असामयिक स्वर्गवास हो गया। लोकप्रिय, समाजसेवी श्री त्रिलोकचन्द जी जैन धर्मनिष्ठ थे। आपका सम्पूर्ण परिवार पीढ़ियों से आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति अनन्य भक्ति के साथ सभी चरित्रवान सन्तों की सेवा, शुश्रूषा में सदैव आगे रहता है। स्व. श्री कन्हैयालाल जी अग्रवाल की धर्मश्रद्धा अटूट थी और वे पक्के श्रावक रत्न थे। श्रीमान् पदमचन्द जी एवं आपकी धर्मसहायिका तथा सभी पारिवारिकजन रत्नसंघ एवं लाल भवन से जुड़े हुए हैं। पौषध, उपवास, सामायिक का क्रम आपके सम्पूर्ण परिवार में है। जीवदया के कार्य में संलग्न रहने के साथ पशु चिकित्सालय के संयोजक पद को आपने सुशोभित किया है। वर्तमान में आप श्रीमान् नोरतनमल जीअग्रवाल एवं आपके सुपुत्र इस पुनीत कार्य में संलग्न हैं।

जयपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मीमकँवर जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री

मानकचन्द जी मेहता का 93 वर्ष की वय में 4 जनवरी, 2010 को स्वर्गवास हो गया। आपने पाँच वर्षीतप, अठाई, दस उपवास एवं कई प्रकार की तपस्या से जीवन को पवित्र बनाया। आपकी आचार्य हस्ती, आचार्य हीरा, उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. सहित समस्त संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध आस्था एवं भक्ति थी। आपके चार पुत्र अमेरिका में एवं एक पुत्र जयपुर में कार्यरत है तथा पुत्री रत्नसंघ से जुड़ी हुई है। आपकी प्रेरणा से आपके जेठूते श्री रिखबचन्द जी मेहता रत्नसंघ के प्रति समर्पित हैं।

मैसूर- सुश्रावक श्री शांतिलाल जी चोरडिया का 56 वर्ष की वय में 2 जनवरी, 2010 को देहावसान हो गया। आप गो-सेवा के कार्य में अग्रणी थे। आप पिछले 12 वर्ष से मैसूर पिंजरा पोल सोसायटी (गौशाला) के मंत्री पद पर कार्यरत थे। आपकी गुरु भगवन्तों के प्रति असीम श्रद्धा थी।

खरवा (अजमेर)- सेवाभावी सुश्रावक श्रीमान् सम्पतराज जी नाहर खरवा वालों

का 70 वर्ष की आयु में दिनांक 13 दिसम्बर, 2009 को आकस्मिक देहावसान हो गया। सामायिक स्वाध्याय के साथ-साथ आप सभी सम्प्रदाय के साधु-संतों की सेवा में अग्रणी रहते थे। आप समाज सेवा के कार्यों में तन-मन-धन से सहयोग करते थे।

जोधपुर- संघ-सेवी सुश्रावक श्री प्रसन्नमल जी डागा का 11 जनवरी, 2010 को

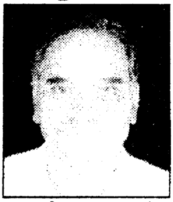

देहावसान हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ श्रावक थे। आपकी रत्नसंघ के प्रति अगाध श्रद्धा थी। आपका अधिकांश समय धर्म-साधना में व्यतीत होता था। संघ की प्रत्येक गतिविधि में डागा परिवार का सदैव तन-मन-धन से सहयोग रहता है।

अजमेर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती करुणा जी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री मानमल जी

लोढ़ा का 52 वर्ष की आयु में दिनाँक 26 दिसम्बर, 2009 को देहावसान हो गया। आपका परिवार आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत सतियों के प्रति तन-मन-धन से समर्पित हैं। दैनिक सामायिक स्वाध्याय के अतिरिक्त उपवास, तेले व अठाई भी समय-समय पर करती रहती थीं। आप सरल स्वभावी, मिलनसार एवं दृढ़धर्मी श्राविका थीं। आप अपने पीछे सुसंस्कृत परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती आनन्द कंवर जी लुणावत धर्मपत्नी स्व. श्री

सुमेरमल जी लुणावत का 96 वर्ष की आयु में 13 जनवरी, 2010 को संथारापूर्वक देहावसान हो गया। आप दैनिक सामायिक स्वाध्याय के अतिरिक्त उपवास, तेले व अठाई भी समय-समय पर करती रहती थीं। आप सरल स्वभावी, मिलनसार एवं दृढ़धर्मी श्राविका थीं। आप अपने पीछे तीन पुत्र एवं दो पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। आपका सम्पूर्ण परिवार आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सभी संत सतियों के प्रति तन-मन-धन से समर्पित है।

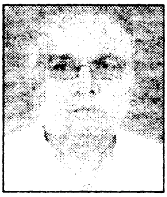

कोयम्बतूर- सुश्रावक श्री पारसमल जी सोलंकी का 11 जनवरी 2010 को संलेखना संथारापूर्वक स्वर्गगमन हो गया। उन्होंने 5 जनवरी को संथारा ग्रहण कर लिया था। वे कोयम्बतूर स्थानकवासी जैन संघ के अध्यक्ष रहे थे।

तिरूपति- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री श्रेणिकराज जी रांका का 61 वर्ष की वय में 1

दिसम्बर, 2009 हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। आप वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, तिरूपति के अध्यक्ष पद पर आसीन थे। आपका जीवन दया व सेवा भाव से ओत-प्रोत था।

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सुजानकंवर जी सिंघवी धर्मपत्नी स्व.

सुश्रावक श्री केवलराज जी सिंघवी का 98 वर्ष की वय में 13 दिसम्बर 2009 को देहावसान हो गया।आप दृढ़धर्मी, सेवाभावी और शालीनता की प्रतिमूर्ति थी। आचार्य श्री तुलसी की अनन्य उपासिका सभी संत-मुनिराजों के प्रति भक्ति-भावना रखती थी। आचार्य श्री तुलसी जी ने सूर्यनगरी में आपके मोती चौक स्थित भवन में चातुर्मास करके शहर क्षेत्र को लाभान्वित किया था। आपके सुपुत्र समाज सेवी श्री विमलराज जी सिंघवी जोधपुर की विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं में प्रतिष्ठा है।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

संशोधन

1. जिनवाणी, दिसम्बर 2009 के पृष्ठ 100-101 पर पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत अंगीकार करने वालों की सूची में श्रावकरत्न श्री सुभाषचन्द जी धोका-मैसूर का नाम जोड़कर 71 सदार आजीवन शीलव्रतियों के नाम पढ़े जाएँ। उन्होंने 50 वर्ष की उम्र में आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। यह नाम भूल से छूट गया था। पूज्य आचार्यप्रवर प्रतिवर्ष अपनी वय के वर्षों की संख्या के अनुसार आजीवन शीलव्रती बना रहे हैं। अतः विगत वर्ष में 71 शीलव्रती बने हैं।
2. जिनवाणी, जनवरी 2010 के पृष्ठ 94-95 पर भोपालगढ़ का नाम छूट गया था, अतः उसे जोड़कर पालनुर के समाचार पढ़े जाएँ। भोपालगढ़ संघ ने गुरुदेव के चरणों में भावभीनी विनति प्रस्तुत की थी।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

3000/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

699 श्री प्रकाशचन्द जी पगारिया, हिरण मगरी, सेक्टर चार, उदयपुर (राजस्थान)
700 श्री विनय जी पारख, नवी पेठ, जलगाँव (महाराष्ट्र)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12357 श्री प्रमोद जी मेहता, निर्माण नगर, गौतम मार्ग, किंग्स रोड़, जयपुर (राजस्थान)
12358 Smt. Nirmala P. Davani ji, Krishnapeth, Chennai (T.N.)
12359 श्रीमती प्रतिभा जी जैन, लिंक रोड़ आलनपुर, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
12360 श्री अशोक कुमार जी जैन (पोरवाल), समाजवाद इन्द्रा नगर, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
12362 श्री धर्मेन्द्र कुमार जी पीतलिया, कंगन सदन, कोठारी बास, रतलाम (मध्यप्रदेश)
12363 श्री महावीरकुमार जी सेहलोद,माणकचौक,हनुमानमंदिर के सामने,रतलाम (मध्यप्रदेश)
12364 श्री विजेन्द्र कुमार जी पितलिया, सेठ जी का बाजार, रतलाम (मध्यप्रदेश)
12365 श्री लखपतराज जी लुंकड, जीवन ज्योति अस्तपाल के पीछे, जोधपुर (राजस्थान)
12366 श्री कमल जी जैन, कॉमर्स कॉलेज रोड़, तलवंडी, कोटा (राजस्थान)
12367 श्री सुनील कुमार जी कटारिया, अरिहन्त कॉलोनी, पुष्कर रोड, अजमेर (राजस्थान)
12368 श्री सुनीलजी मेहता,समर्पण टॉवर,अंकुर चर्च रास्ता,नारायणपुर,अहमदाबाद (गुजरात)
12369 श्रीमती विद्या जी संचेती, क्षेत्रपाली चबूतरा, जूनी धान मंडी, जोधपुर (राजस्थान)
12370 श्री अरूण जी सुराणा, डी-217, सरस्वती नगर, जोधपुर (राजस्थान)
12371 Shri Nareshmal ji Singhvi, Lioyds Nagar, Wardha (M.H.)
12372 श्री महावीर प्रसाद जी जैन, गुरूद्वारा के पास, जोशी रोड़, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
12373 श्री मोहनलालजी जैन,दीप विहार कॉलोनी,सिरसी रोड़,पाच्यावाला,जयपुर (राजस्थान)
12374 Smt. Bharti ji Bhansali, Andheri (W) Mumbai (M.H.)
12375 Shri Mangi Lal ji Mehta, Malad (W), Mumbai (M.H.)
12376 Shri Pramod G. Shethiya ji, Dahanu, Thane (M.H.)
12377 सौ. पुष्पाबाईजी जैन, शांती क्लॉथ स्टोर्स, जमनालाल बजाज रोड़, धुलिया (महाराष्ट्र)
12378 Shri Suresh Chand ji Lodha, Cuddalore (Tamilnadu)
12379 श्री जे.के.रांका जी,न्यू कॉलोनी,पाँच बत्ती के पास, एम.आई. रोड़, जयपुर (राजस्थान)
12380 श्री मेघराज जी चण्डालिया , सदर बाजार, भादसोड़ा, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
12381 श्रीमती रतन जी डोसी, ए-4, श्रीपाल नगर, मेन मण्डिया रोड़, पाली (राजस्थान)
12382 श्री सम्पत जी धारीवाल, 5, समेगियों की पाटी, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)
12383 श्री सुरेश जी जैन, 14 बी, अरिहन्त मेन्शन, महावीर नगर, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)
12384 श्रीमती कमला जी रेड, 17, जयहिन्द पोल, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)
12385 श्री उगमराज जी गाँधी, 15, सोजतीया बास, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)

12386 श्री प्रेमराज जी गाँधी, दुर्गादास नगर, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)

12387 श्री लालचन्द जी गाँधी, 19, सोजतिया बास, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)

12388 श्रीमती ललिता जी गाँधी, फतहपुरिया की पोल, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)

12389 श्रीमती नौरतन जी पालावत, 97, नमन, शांति कुञ्ज, अलवर (राजस्थान)

12390 श्री विनोदकुमार जी जैन, श्री जैन विद्यालय के पास, अलीगढ़-रामपुरा, टोंक (राजस्थान)

12391 श्री राजेश जी जैन, बी-92, सेक्टर-55, नोयडा (उत्तरप्रदेश)

12392 Dr.Mrs.Sheela ji Sharma, Civil Lines, Jaipur (Rajasthan)

12393 Shri Rahul ji Jain, Jalna Road, AURANGABAD (M.H.)

12394 श्री अभय कुमार जी भंसाली, के-53, जंगपुरा एक्सटेंशन, नईदिल्ली

12395 श्री जगमोहनजी चतुरमूथा, ए-9, अरिहन्त भवन, साउथ एक्सटेंशन, पार्ट-II, (नई दिल्ली)

12396 श्री जम्बू कुमार जी जैन, रेशमा रेजेडेन्सी के सामने, परबत पाटीया, सूरत (गुजरात)

12397 श्री धीरज कुमार जी सिंघवी, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

12398 श्री अर्चित जी गाँधी, 11/903, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

12399 श्री पूनमचन्द जी बैद, मेड़ता वाड़ी, नागौर (राजस्थान)

12400 श्री प्रदीप जी सुराणा, गुजरातियों की पोल, नागौर (राजस्थान)

12401 श्री मनोज कुमार जी कांकरिया, शाहों की गली, गणेश चौक, नागौर (राजस्थान)

12402 श्रीमती सुशीला जी बाफणा, शास्त्रीनगर, पॉल स्कूल के सामने, जोधपुर (राजस्थान)

12403 श्री महावीरप्रसादजी जैन, ट्रॉफिक पुलिस ऑफिस के पीछे, गुलाबबाड़ी, कोटा (राजस्थान)

500/- श्री डी. बोहरा परिवार, चेन्नई के सौजन्य से

12361 Shree Praveen Kumar ji Jain, Bangalore (Karnataka)

जिनवाणी हेतु साभार

5100/- श्री सोहनलाल जी, बुधमल जी, सम्पतराज जी, राजेन्द्र कुमार जी बाघमार (कोसाणा वाले), मैसूर, आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

5100/- श्री पुखराज जी, प्रकाशचन्द जी, रमेशचन्द जी, पदमचन्द जी बाघमार आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2500/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नवसारी, आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की 100वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2101/ श्री धर्मचन्द जी, अभिजीत जी भंडारी, बीजापुर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री के धानेरा में दर्शन लाभ एवं स्वास्थ्य समाधि के साथ राजस्थान की धरा में पधारने पर आपको मंगलमय पदार्पण कल्याणकारी, परोपकारी हो इस उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री विमलचन्द जी, सुभाषचन्द जी, अशोक कुमार जी, बिपिन कुमार जी धोका, मैसूर आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री अजयकुमार जी मेहता, जोधपुर, श्रीमती मीमकंवर जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री माणकचन्द जी मेहता का 4 फरवरी, 2010 को देहावसान हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

2100/- श्री उम्मेदमल जी, श्याम जी, राजेन्द्रमल जी लुणावत, जोधपुर, पूज्य माताजी श्रीमती आनन्दकंवर धर्मपत्नी स्व. श्री सुमेरमल जी लुणावत का दिनाँक 13.01.2010 को संथारा पूर्वक देवलोकगमन होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

2100/- श्री सम्पतराज जी बाफना, जोधपुर, अपनी सुपौत्री सौ.कां. अंकिता (सुपुत्री श्री स्वरूपचन्द जी बाफना-सूरत) का शुभ विवाह चि. विनीत (सुपुत्र श्री प्रदीप जी मेहता-अहमदाबाद) के साथ दिनाँक 12.12.2009 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

2100/- श्रीमती मंजू जी कोठारी, जयपुर, स्व. श्री पदमचन्द जी कोठारी की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती लाड़देवी जी हीरावत, जयपुर, अपने सुपौत्र चि. निमिष जी सुपुत्र श्री अनिल जी, ललित जी हीरावत का शुभविवाह सौ.कां. अर्चना जी के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री कमलचन्द जी मंजू जी मूसल, जयपुर आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री कमलचन्द जी मंजू जी मूसल, जयपुर, चि. गौतम जी मूसल का शुभविवाह दिनांक 27/12/2009 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री शान्तिलाल जी, राजेन्द्र कुमार जी खाबिया, मैसूर, दीपावली के त्यौहार के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सोहनलाल जी, बुधमल जी, सम्पतराज जी, राजेन्द्र कुमार जी बाघमार (कोसाणा वाले), मैसूर, महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के दर्शनलाभ प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री उमरावमल जी, सुभाषमल जी, मनीष जी, सुमित जी लोढ़ा, अजमेर, श्रीमती करूणा जी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री मानमल जी लोढ़ा का दिनांक 27.12.2009 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती विमला जी, श्री प्रकाश जी, राजेश जी, रमेश जी, श्रेयांस जी, ऋषभ जी, वेदान्त जी लोढ़ा, जयपुर, स्व. श्री रतनचन्द जी लोढ़ा की द्वितीय पुण्य तिथि पर भेंट।

1000/- श्री कनकमल जी, दौलतमल जी चोरडिया, चेन्नई, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के माघ शुक्ला 13 दिनाँक 28.01.2010 को 64 वें दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री रंगरूपमल जी चौरड़िया, चेन्नई पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के वीधीवाडी में दर्शन लाभ प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री सूरजमल जी (रियां वाले) एवं पारिवारिक जन, अजमेर, श्री सिद्धार्थ जी सुपुत्र श्री महावीर जी मुणोत (रियां वाले) के इलाहबाद आई.आई.टी. से सोफ्टवेयर इन्जिनियरिंग पास करने के पश्चात् सिरको सिस्टम (अमेरिकन) में चयन होने एवं इस वर्ष क्वालिटी अवॉर्ड प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

750/- श्री चम्पालाल जी जैन एवं पारिवारिक जन, रानियाँ (सिरसा), श्रीमती सीतादेवी जी जैन धर्मपत्नी श्री चम्पालाल जी जैन की स्मृति में उनके स्वर्गवास की छमाही के उपलक्ष्य में भेंट।

700/- श्री प्रकाशमल जी लोढ़ा, अजमेर, श्रीमती मोहन कँवर जी लोढ़ा की श्री सम्मेदशिखर जी

की यात्रा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री धर्मचन्द जी, रमेशचन्द जी, महेन्द्र कुमार जी, अंकित कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री श्री सूरजमल जी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री ताराचन्द जी, जिनेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर पूज्य पिताश्री श्री राजमल जी जैन (करेला वाले) का स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्रीमती मीनाबेन भीमराज जी शां कावेडिया, वापी, स्व. श्री भीमराज जी शां कावेडिया की 10वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्रीमती शान्तिदेवी जी प्रकाश जी बुबकिया (कंकू चौपड़ा) पाली वाले, बेंगलोर, श्री रवि सुपुत्र श्री प्रकाश जी बुबकिया का इस माह विप्रो में बिजनिस एनेलिस्ट के पद पर नियुक्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री कनकमल जी दौलतमल जी चोरडिया, चेन्नई, उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 76 वां जन्म-दिवस माघ कृष्णा 4 दिनाँक 4.01.2010 को साधना-आराधना के साथ मनाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री जिनेश कुमार जी जैन, जयपुर, आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री आनन्दराज जी, सुनील कुमार जी पटवा, मैसूर, आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री रौनकजी सुपुत्र श्रीमती उजास जी-स्व. श्री शांतिलालजी डाकलिया, जोधपुर, अपनी दादीसा स्व. श्रीमती सिरेकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री मांगीलाल जी डाकलिया (डांगियावास वाले) के 11.01.2010 को स्वर्गवास होने पर उनकी स्मृति में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल हेतु साभार

1500/- श्री प्रकाशचन्द जी पगारिया (जिला कलेक्टर), उदयपुर, सप्रेम भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल के साहित्य प्रकाशन हेतु साभार

21000/- श्री विमलचन्द जी, रिखबचन्द जी, सुभाषचन्द जी, अशोक कुमार जी, श्रेणिक कुमार जी, विपिन कुमार जी धोका, मैसूर, मंडल से पुनः मुद्रित पुस्तक पर्युषण सन्देश के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ को प्राप्त साभार

500/- श्री कनकमल जी दौलतमल जी चोरडिया, चेन्नई, नूतन वर्ष 2010 में पाली में उपाध्यायप्रवर प. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावन दर्शन के उपलक्ष्य में।

500/- श्री कनकमल जी दौलतमल जी चोरडिया, चेन्नई, नूतन वर्ष 2010 में साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के दर्शन-वन्दन के उपलक्ष्य में भेंट।

स्वाध्याय संघ बजरिया शाखा को प्राप्त साभार

500/- श्री धर्मचन्द जी, रमेशचन्द जी, महेन्द्रकुमार जी, अंकित कुमार जी करेला वाले, सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताजी श्री सूरजमल जी जैन, सवाईमाधोपुर की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री ताराचन्द जी, जिनेन्द्र कुमार जी जैन, करेला वाले, सवाईमाधापुर, पूज्य पिताजी श्री

राजमल जी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

48,000/- श्री मोहनलाल जी बोहरा, सुमंगली ज्वेलर्स, तिरूवनमलै, चेन्नई (तमि.), परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100 वें जन्मदिवस पर भेंट।

12,000/- श्रीमती कमलादेवी जी, तपस्वीलाल जी बाघमार एवं परिवार, जबलपुर (मध्यप्रदेश), परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100 वें जन्मदिवस पर भेंट।

12,000/- श्रीमती शकुनदेवी जी मदनलाल जी बाघमार एवं परविार, जबलपुर (मध्यप्रदेश), परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100 वें जन्मदिवस पर भेंट।

12,000/- श्री चन्द्र राज जी मेहता, लोअर परेल, मुम्बई (महा.), परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100 वें जन्मदिवस पर भेंट।

12,000/- श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन, मानसरोवर, जयपुर (राज.), परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100 वें जन्मदिवस पर भेंट।

12,000/- श्री सुरेन्द्र जी अमरचन्द जी सदावत मेहता, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर (राज.) की तरफ से भेंट।

12,000/- श्री ज्ञानेश कुमार जी रणजीत सिंह जी मुणोत, नवसारी (महा.), स्व. श्री अंकित मुणोत की स्मृति में भेंट।

12,000/- श्री राजीव जी पल्लीवाल, गंगापुर सिटी (राज.), अपने पिताजी स्व. श्री हरीशचन्द जी पल्लीवाल की स्मृति में भेंट।

12,000/- श्री जबरचन्द जी कटारिया, गुलेजगढ़, जिला-बीजापुर (कर्नाटक), परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के 100 वें जन्मदिवस पर एवं स्व. श्रीमती शांती बाई जी कटारिया की स्मृति में भेंट।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***श्री अशोक जी कवाड़,*** 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

फाल्गुन कृष्णा 14	शुक्रवार	12.02.2010	चतुर्दशी
फाल्गुन कृष्णा 30	शनिवार	13.02.2010	पक्खी
फाल्गुन शुक्ला 8	सोमवार	22.02.2010	अष्टमी
फाल्गुन शुक्ला 14	शनिवार	27.02.2010	चतुर्दशी
फाल्गुन शुक्ला 15	रविवार	28.02.2010	पक्खी, फाल्गुनी चौमासी
चैत्र कृष्णा 8	सोवार	08.03.2010	अष्टमी, आदिनाथ जन्मकल्याणक एवं आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 72 वां जन्म-दिवस

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अनूठा दान छात्रवृत्ति का
जीवन बनता एक विद्यार्थी का

Surana TMT - A perfect vaccination for your constuctions.

• Excellent Bond Strength • Greater resistance to Corrosion • Superior Weldability • Excellent Ductility and High Bendability • Uniform properties throughout length • Enhanced Resistance to Fire • Ability to withstand Earthquakes • Bigger savings in steel consumption (almost 18%) • Available in Fe 415/500/550/600 grades with IS 1786 standard

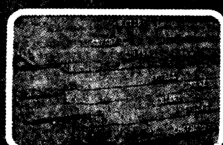

For marketing enquiries, contact : 91-44-2855 0715 / 2855 0736

Corporate Head Office :
29, Whites Road, Second Floor, Royapettah, Chennai - 600 014.
Phone : 91-44-2852 5127 (3 Lines) / 2852 5596 Fax : 91-44-2852 0713
E-mail : steelmktg@surana.org.in
Website : www.surana.org.in

Surana TMT - *Lifeline of every Construction...*

IS:1786

SURANA™ TMT RE-BARS
yes, the best

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

N0. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

Prithvi Exchange®

Authorized Dealer II

BEST RATES IN INDIA

WESTERN UNION MONEY TRANSFER

* Send Money abroad
* Drafts/Swift/TT...

- We buy and sell Foreign Currencies, Travellers Cheques and Prepaid Foreign Currency Cards at attractive prices.
- We do Fund Transfer abroad - T.T.Swift etc.
- We issue Foreign Currency drafts.
- We deal in more than hundred currencies.
- Free Door Step Service.
- Western Union Money Transfers.
- Travel Insurance.

Chennai :	Bangalore :	Hyderabad :	Goa :
(044) - 4343 4242	(080) - 22103267	(040) - 2341 4333	(0832) - 2231 190
2855 3185	22103714	2341 4777	2425 212

For online rates 24x7 - www.prithvifx.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 2 ★ मूल्य : 10 रु.
10 फरवरी, 2010 ★ फाल्गुन, 2066

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

Other Projects:
• Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
• Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple, Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**
H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।